नव संवत्सर २०८२ की
हार्दिक शुभकामनाएँ

॥ जय गुरु ॥
॥ जय गुरुदेव ॥

संस्थापक/अध्यक्ष
वैदिक लाइफ न्यास ट्रस्ट (रजि.)
पंजीकरण संख्या: 318

श्री गणेश

तिथि स्मरण पत्रिका (पंचाङ्ग)

संपादक
पं. श्यामेश मिश्र (आचार्य)
मो..+91 9935383670

॥ जय गुरुदेव ॥

गुरु पूजन

नारायणं पद्मभवं वशिष्ठं शक्तिं च तत्पुत्र-पराशरं च।
व्यासं शुकं गौड़पदं महान्तं गोविन्दयोगीन्द्रमथास्य शिष्यम्।।
श्री शंकराचार्यमथास्य पद्म-पादंच्च हस्तामलंक च शिष्यम्।
तं त्रोटकं वार्तिककारमन्यान् अस्मद् गुरूनसन्ततमानतोऽस्मि।।
श्रुति-स्मृति-पुराणानामालयं करुणालयम्। नमामि भगवत्पादं शंकरं लोकशंकरम्।।
शंकरम् शंकराचार्य केशवं बादराणम्। सूत्रभाष्यकृतौ वन्दे भगवन्तौ पुनः पुनः।।
यद् द्वारे निखिला निलिम्पपरिषद् सिद्धिं विधत्तेऽनियशम्।।
श्री मच्छीलसितं जगद्गुरूपदम नत्वात्मतृत्तिगडताः।।
लोकाज्ञानपयोदपाटनधुरम् श्रीशंकरं शर्मदम्,
ब्रह्मानन्दसरस्वती गुरुवरं ध्यायामि ज्योतिर्मयम्।।
आवाहनं समर्पयामि श्री गुरु चरण कमलेभ्यो नमः।
आसनं समर्पयामि श्री गुरु चरण कमलेभ्यो नमः।
स्नानं समर्पयामि श्री गुरु चरण कमलेभ्यो नमः।
वस्त्रं समर्पयामि श्री गुरु चरण कमलेभ्यो नमः।
चन्दनं समर्पयामि श्री गुरु चरण कमलेभ्यो नमः।
अक्षतं समर्पयामि श्री गुरु चरण कमलेभ्यो नमः।
पुष्पं समर्पयामि श्री गुरु चरण कमलेभ्यो नमः।
धूपं समर्पयामि श्री गुरु चरण कमलेभ्यो नमः।
दीपं समर्पयामि श्री गुरु चरण कमलेभ्यो नमः।
आचमनीयं समर्पयामि श्री गुरु चरण कमलेभ्यो नमः।
नैवेद्यं समर्पयामि श्री गुरु चरण कमलेभ्यो नमः।
आचमनीयं समर्पयामि श्री गुरु चरण कमलेभ्यो नमः।
ताम्बूलं समर्पयामि श्री गुरु चरण कमलेभ्यो नमः।
श्रीफलं समर्पयामि श्री गुरु चरण कमलेभ्यो नमः।

आरार्तिक्यम्

कर्पूरगौरं करूणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारं,
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि।
आरार्तिक्यं समर्पयामि श्री गुरु चरणं कमलेभ्यो नमः।
आचमनीयं समर्पयामि श्री गुरु चरण कमलेभ्यो नमः।

पुष्पांजलि :

गुर्रु ब्रह्म गुरुविष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।
अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्, तत् पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः।
श्री ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिम्, द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्वमस्यादिलक्ष्यम्।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वदा साक्षि भूतम्, भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि।
आज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानांजनशलाकया। चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः।
पुष्पांजलि समर्पयामि श्री गुरु चरण कमलेभ्यो नमः।

॥ जय गुरु ॥

श्री गुरु स्तोत्रम्

संसारवृक्षमारूढ़ाः पतन्ति नरकार्णवे ।
येनोद्धृतंमिदं विश्वं तस्मै श्री गुरवे नमः।।१।।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुरेव जगत्सर्वं तस्मै श्री गुरवे नमः।।२।।

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानात्र्जन शलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितम् येन तस्मै श्री गुरवे नमः ।।३।।

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ।। ४।।

स्थावरं जंगमं व्याप्तं यत्किंचित् सचराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ।।५।।

चिन्मयं व्यापितं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ।।६।।

सर्वश्रुतिः शिरोरत्नं विराजितं पदाम्बुजं ।
वेदान्ताम्बुजसूर्योयस्तस्मै श्री गुरवे नमः ।।७।।

चैतन्यं शाश्वतं शान्तं व्योमातीतं निरंजनं ।
विन्दुनाद–कलातीतं तस्मै श्री गुरवे नमः ।।८।।

ज्ञानशक्तिः समारूढस्तत्वमाला विभूषितः ।
भुक्ति–मुक्तिः प्रदासा च तस्मै श्री गुरवे नमः ।।६।।

॥ जय गुरु ॥

अनेकजन्मसम्प्राप्तकर्मबन्धविदाहिने।
आत्माज्ञानपरानेन तस्मै श्री गुरवे नमः ।।१०।।

शोषणं भवसिन्धोश्च ज्ञापनं सार-सम्पदाम् ।
गुरोः पादाधरम नास्ति सम्यक् तरमै श्री गुरवे नम

न गुरूरधिकं तत्वं न गुरूरधिकं तपः ।
तत्वज्ञानात् परंनास्ति तस्मै श्री गुरवे नमः ।।१२।।

मन्नाथः श्री जगन्नाथः मद्‌गुरुः श्री जगदगुरुः।
मदात्मासर्वभूतात्मा तस्मै श्री गुरवे नमः ।।१३।।

गुरुरादिरनादिश्च गुरुः परम दैवतम् ।
गुरू पादाधरम नास्ति तस्मै श्री गुरवे नमः ।।१४।।

ध्यानमूलं गुरोर्मूर्तिः पूजा मूलं गुरोः पदम् ।
मन्त्रमूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरू कृपा ।।१५।।

ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञान-मूर्तिम् ।
द्वन्द्वातीतं गगन-सदृशं तत्वमस्यादिलक्ष्यम् ।।१६।।

एकं नित्यं विमलमचलं सर्वदा साक्षि भूतम् ।
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्‌गुरुं तं नमामि ।।१७।।

ॐ सहस्त्रारे कर्णिकारे रक्तपदमे स्थितं गुरुम् ।
द्विनेत्रं द्विभुजं ध्येयं श्वेतसूर्य-समप्रमम् ।
ऊँकार हुँकार वक्त्रे अकारहकाराद्वयम् ।
चार्तुब्रम्हे भवेत् सृष्टिः तस्मै श्री गुरवे नमः ।।१८।।

श्री पूर्णानन्द अजपा योग संस्थान

नारामऊ चुंगी, जी.टी. रोड
कानपुर (उत्तर प्रदेश) 208016

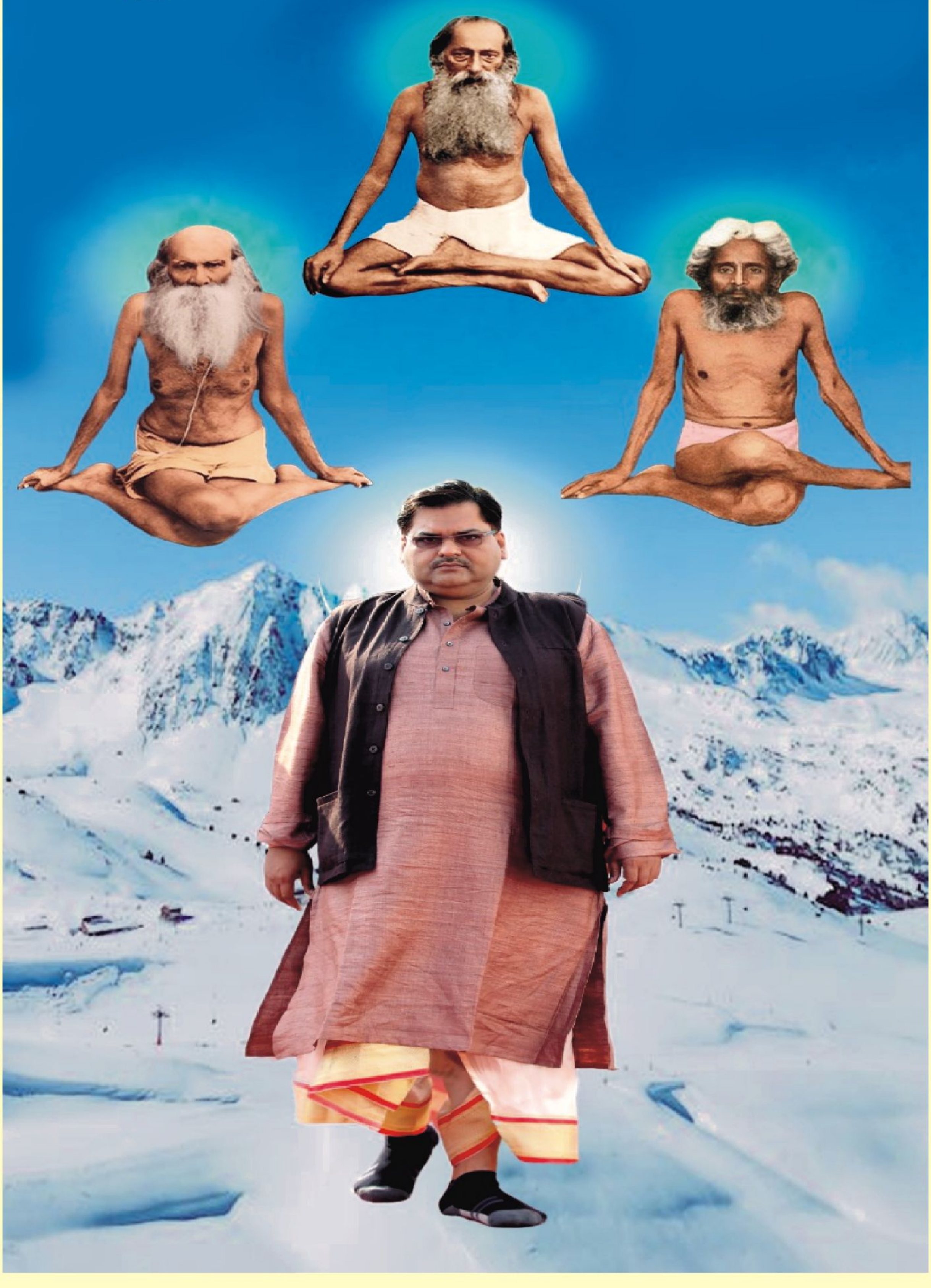

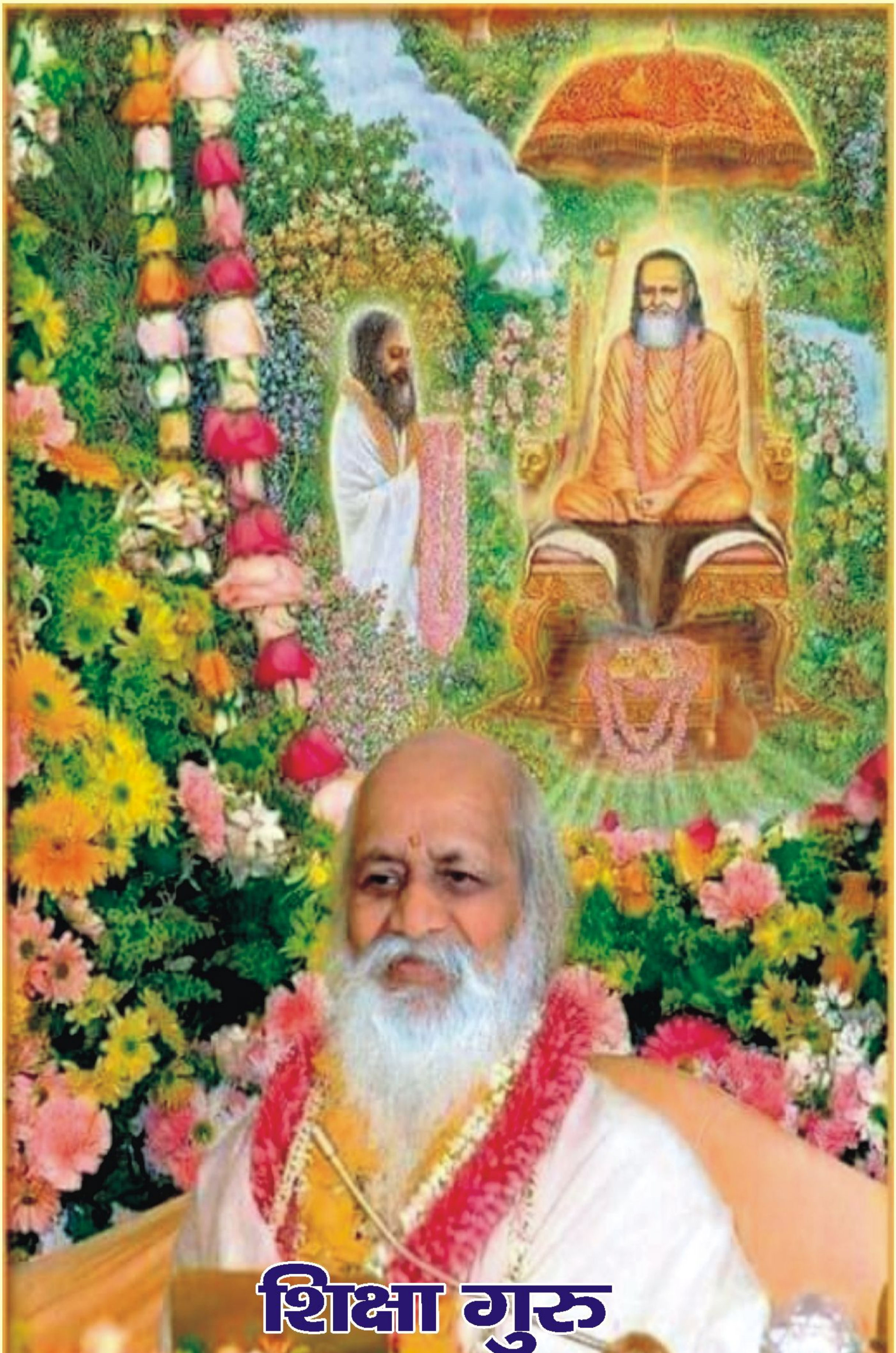
शिक्षा गुरु

॥ नव संवत्सर की हार्दिक शुभकामनाएँ ॥

LOOKING FOR
Bridal & Non Bridal Makeup!

Get special look on your special day with us.

Our services

- Slider makeup
- Baby shower
- Engagement
- Pre wedding
- Bridal makeup
- Event makeup

Book Your Appointments At

+919935038181 @dewora360

॥ नव संवत्सर की हार्दिक शुभकामनाएँ ॥

KISHAN TENT HOUSE

All type of Event & Party

Note:-

All Type Tent, Samiyana, Crockry & Decorators

Mob.: 9956388438 (Kishan)
7054187694 (Sonu)

115/156, MASWANPUR, KANPUR
(NEAR BRAHMDEV CHAURAHA)

॥ नव संवत्सर की हार्दिक शुभकामनाएँ ॥

A TRUST OF BRAND

DIVY RATNA JEWELLERS

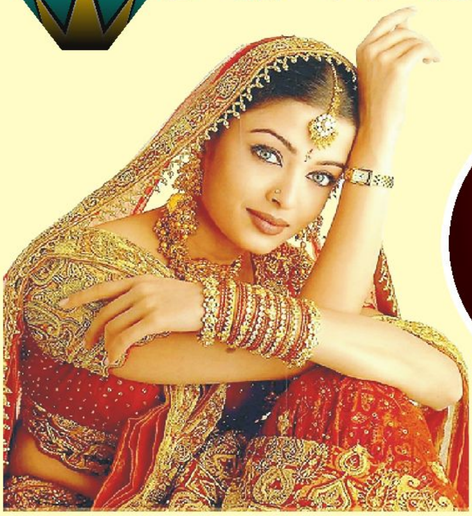

9235092098

सोने के सभी आभूषणों की खरीद पर

मात्र 10% मेकिंग चार्ज

रेट में 100% पारदर्शिता

100% HALLMARK / HUID

न्यू शिवली रोड, निकट महिला होटल तिराहा, कल्यानपुर, कानपुर

॥ नव संवत्सर की हार्दिक शुभकामनाएँ ॥

Mob.: +91 9555595044 GSTIN : 07AFKPTO536R1ZQ

As ISO 9001:2015 Certified Company

KSJ

ADHESIVE & COATING

K. SHYAMJI ENTERPRISES

U-111, First Floor, Vikas Surya, Janak Plaza
C-6B, Market, Janak Puri, New Delhi-58

॥ जय गुरुदेव ॥

॥ श्री गणेशाय नमः॥

॥ श्री सरस्वत्यै नमः॥

नव संवत्सर की हार्दिक शुभकामनाएँ

श्री कालयुक्त नाम संवत्सर

आगामी सिद्धार्थ संवत् नाम

विक्रम संवत् २०८२

महार्षि ज्ञानयुगीय संवत् ४८

वैदिक लाइफ न्यास यज्ञानुष्ठान संवत् १८

राजा	:	सूर्य
मंत्री	:	सूर्य
ई. सन्	:	२०२५-२६
बंगला सन्	:	१४३१-१४३२
शाके	:	१६४७
हिजरी सन्	:	१४४६-१४४७
सस्येश	:	बुध
दुर्गेश	:	सूर्य
धनेश	:	बुध
रसेश	:	शुक्र
नीरेश	:	बुध
फलेश	:	शनि
मेघेष	:	सूर्य
धान्येश	:	मंगल
सम्बतसर वास	:	माली के घर में
रोहिणी वास	:	समुद्र

॥ जय गुरुदेव ॥

विषय सूची

विषय	पृष्ठ
श्री परिधावी नाम संवत्सर	१
विषय सूची	२
भारतीय पर्व	३,४,५
संवत्सर एवं राजा मंत्री फल	६
ग्रहण विवरण सं. २०८२	७-८
संवत् २०८२ समय शुद्धि	८
अग्निवास सारणी	९
राहु काल देखने का समय	१०
संदिग्ध व्रतोवास पर्व निर्णय	१०-११
जाति भेद से परे समग्र सनातनियों की उपस्थिति का आयोजन महाकुंभ	१२
गणेश चतुर्थी व्रत	१३
एकादशी व्रत	१४
प्रदोष व्रत	१५
बालक जन्म पाया, कोई घर से चला गया	१६
मांगलिक दोष परिहार, अंगो पर छिपकली	१७
स्वप्न फल	१८
भद्रा वास-शुभ अशुभ	१९
दिन की चौधडिया	२०
मूल नक्षत्र २०२५-२६	२१
मूल नक्षत्र २०२५-२६	२२
मूल एवं पंचक २०२५-२६	२३
सूर्य ग्रह राशि परिवर्तन २०२५-२६	२४
मंगल ग्रह राशि परिवर्तन २०२५-२६	२४
बुध ग्रह राशि परिवर्तन २०२५-२६	२५
गुरु राशि परिवर्तन २०२५-२६	२६
शुक्र राशि परिवर्तन २०२५-२६	२६
शनि राहु केतु राशि परिवर्तन २०२५-२६	२७
शुभ विवाह मुर्हूत एवं समस्त शुभ मुर्हूत	२७-३०
साढ़े तीन स्वयं सिद्ध मुहूर्त	३०
पंचांग संवत २०८२ प्रारम्भ	३१-५४
गणेश अर्थवर्शीष	५५
गणेश अर्थ हिन्दी अनुवाद	५६
आनन्देश्वर बाबा	५७
लिगाष्टकं स्त्रोत्र	५८
शिव ताण्डव	५९-६०
कनकधारा स्तोत्र	६१-६२
काल सर्प योग	६३, ६४
१२ राशि फल	६५-७०
पंचक क्या है	७०
पंचक के प्रकार	७१
वास्तु के अनुभूत	७२
शनि की ढैया फल	७३
सूर्य नव ग्रह शान्ती	७४
चन्द्र नव ग्रह शान्ती	७४
मंगल नव ग्रह शान्ती	७५
बुध नव ग्रह शान्ती	७६
गुरु नव ग्रह शान्ती	७७
शुक्र नव ग्रह शान्ती	७८
शनि नव ग्रह शान्ती	७८
राहु नव ग्रह शान्ती	७९
केतु नव ग्रह शान्ती	८०
गणेश जी की आरती	८१
लक्ष्मी जी की आरती	८१
शंकर जी की आरती	८२
जगदीश जी की आरती	८३
जग जननी जी की आरती	८४

पुस्तक प्राप्ति के लिए

१) जनता बुक स्टाल, मूलगंज, कानपुर
२) गायत्री मन्दिर पनकी रोड, कल्याणपुर

भारतीय पर्व एवं व्रतोपवास संवत् २०८२

विक्रम नवसंवत् बसन्त नवरात्रारम्भ,	३० मार्च	रवि.
झूलेलाल जयन्ती	३० मार्च	रवि.
मुस्लिम पर्व ईद	३१ मार्च	सोम.
चैती छठ	३ अप्रैल	गुरु.
श्रीरामनवमी	६ अप्रैल	रवि.
महावीर जयन्ती (जैन)	१० अप्रैल	गुरु.
चैत्री पूर्णिमा, श्री हनुमद् जयन्ती	१२ अप्रैल	शनि.
मेष संक्रान्ति (सत्तु संक्रान्ति)	१३ अप्रैल	रवि.
अम्बेडकर जयन्ती, मेष संक्रान्ति का पुण्यकाल	१४ अप्रैल	सोम.
बाबू कुँवर सिंह जयन्ती	२३ अप्रैल	बुध.
परशुराम जयन्ती	२९ अप्रैल	मंगल.
अक्षय तृतीया	३० अप्रैल	बुध.
आद्यजगत गुरु शंकराचार्य जयन्ती	२ मई	शुक्र.
श्री रामानुजाचार्य जयन्ती	३ मई	शनि.
गंगा सप्तमी	४ मई	रवि.
श्री नृसिंह जयन्ती	११ मई	रवि.
वैशाख पूर्णिमा, बुद्ध जयन्ती	१२ मई	सोम.
वट सावित्री व्रत (वरगदाई)	२६ मई	सोम.
भोमवती अमावस्या	२७ मई	मंगल.
श्रीगंगा दशहरा, गायत्री जयन्ती	५ जून	गुरु.
निर्जला एकादशी (भोमसेनी)	६ जून	शुक्र.
सन्त कबीर जयन्तीण ज्येष्ठ पूर्णिमा	११ जून	बुध.
रथ यात्रा	२७ जून	शुक्र.
हरिशयनी एकादशी	६ जुलाई	रवि.
गुरु पूर्णिमा	१० जुलाई	गुरु.
धर्मसम्राट स्वामी करपात्री जयन्ती	२६ जुलाई	शनि.
हरियाली तीज (कजरी तीज)	२७ जुलाई	रवि.
नाग पंचमी	२९ जुलाई	मंगल.
रक्षाबन्धन	९ अगस्त	शनि.
कज्जली (रतजग्गा)	११ अगस्त	सोम.
कज्जली तीज, संकष्ठी बहुला गणेश चतुर्थी	१२ अगस्त	मंगल.
हलषष्ठी, ललही छठ	१४ अगस्त	गुरु.

भारतीय स्वतन्त्रता दिवस	१५ अगस्त	शुक्र.
श्रीकृष्ण जन्मष्टमी सबकी	१६ अगस्त	शनि.
कुशोत्पाटिनी अमावस्या	२३ अगस्त	शनि.
हरितालिका तीज	२६ अगस्त	मंगल.
वैनायकीवरद श्रीगणेश चतुर्थी, गणेशोत्सव	२७ अगस्त	बुध.
ऋषि पंचमी	२८ अगस्त	गुरु.
लोलार्क षष्ठी	२९ अगस्त	शुक्र.
महारविवार व्रत	३१ अगस्त	रवि.
मु.पर्व बारवफात	५ सितम्बर	शुक्र.
अनन्त चतुर्दशी	६ सितम्बर	शनि.
खग्रास चन्द्रग्रहण	७ सितम्बर	रवि.
पितृपक्ष श्राद्ध तर्पणारम्भ	८ सितम्बर	सोम.
महालक्ष्मी पूजन समापन	१४ सितम्बर	रवि.
जीवित्पुत्रिका व्रत, सोरहिया मेला समाप्त	१४ सितम्बर	रवि.
मातृनवमी	१५ सितम्बर	सोम.
विश्वकर्मा पूजा	१७ सितम्बर	बुध.
सर्वपैतृ अमावस्या, पितृ-विसर्जन	२१ सितम्बर	रवि.
शारदीय नवरात्रारम्भ	२२ सितम्बर	सोम.
महाअष्टमी	३० सितम्बर	मंगल
महानवमी	१ अक्टूबर	बुध.
गाँधी व शास्त्री जयन्ती, विजयादशमी	२ अक्टूबर	गुरु.
पापांकुशा एकादशी, भरत मिलाप (काशी)	३ अक्टूबर	शुक्र.
कोजागरी शरद पूर्णिमा	६ अक्टूबर	सोम.
पूर्णिमा, वाल्मीकि जयन्ती	७ अक्टूबर	मंगल.
करक चतुर्थी, करव चौथ	१० अक्टूबर	शुक्र.
अहोई अष्टमी	१३ अक्टूबर	सोम.
राधाष्टमी, राधा जयन्ती	१४ अक्टूबर	मंगल.
धनतेरस, धन्वन्तरी जयन्ती	१८ अक्टूबर	शनि.
नरक चतुर्दशी, हनुमत जयन्ती	१९ अक्टूबर	रवि.
दीपावली	२० अक्टूबर	सोम.
अन्नकूट, काशी से जन्यत्र गोवर्धन पूजा	२२ अक्टूबर	बुध.
काशी गोवर्धनपूजा, भईयादूज, चित्रगुप्त पूजा	२३ अक्टूबर	गुरु.
सूर्यषष्ठी व्रतारम्भ, नागनथैय्या (काशी)	२५ अक्टूबर	शनि.

सूर्यषष्ठी (डाला छठ)	२७ अक्टूबर	सोम.
गोपाष्टमी	२९ अक्टूबर	बुध.
अक्षय नवमी	३० अक्टूबर	गुरु.
हरिप्रबोधिनी एकादशी, तुलसी विवाहोत्सव	१ नवम्बर	शनि.
बैकुण्ठ चतुर्दशी	४ नवम्बर	मंगल.
कार्तिक पूर्णिमा, गुरुनानक जयन्ती, देवदीपावाली	५ नवम्बर	बुध.
श्रीकालाष्टमी, कालभैरवाष्टमी जयन्ती	१२ नवम्बर	बुध.
रुद्रव्रत (पीड़िया)	२१ नवम्बर	शुक्र.
विवाह पंचमी	२५ नवम्बर	मंगल.
मोक्षदा एकादशी, गीता जयन्ती	१ दिसम्बर	सोम.
श्रीदत्तात्रेय जयन्ती	४ दिसम्बर	गुरु.
क्रिसमस डे, बड़ा दिन, मालवीय-अटल जयन्ती	२५ दिसम्बर	गुरु.
गुरुगोविन्द सिंह जयन्ती (प्राचीन मत)	२७ दिसम्बर	शनि.
गुरुगोविन्द सिंह जयन्ती (नवीन मत)	५ जनवरी २६	सोम.
गणेश चौथ	६ जनवरी	मंगल.
स्वामी विवेकानन्द जयन्ती (तिथि मत)	१० जनवरी	शनि.
स्वामी विवेकानन्द जयन्ती (अंग्रेजी दिनांक)	१२ जनवरी	सोम.
महर्षि महेश योगी जयन्ती	१२ जनवरी	सोम.
मकर संक्रान्ति का पुण्यकाल (खिचडी पर्व)	१५ जनवरी	गुरु.
मौनी अमावस्या	१८ जनवरी	रवि.
बसन्त पंचमी, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जयन्ती	२३ जनवरी	शुक्र.
भारतीय गणतन्त्र दिवस	२६ जनवरी	सोम.
हरसूब्रह्मदेव जयन्ती, महानन्दा नवमी	२७ जनवरी	मंगल.
माघी पूर्णिमा, रविदास जयन्ती	१ फरवरी	रवि.
जानकी जयन्ती	९ फरवरी	सोम.
महाशिवरात्रि	१५ फरवरी	रवि.
आमलकी रगंभरी एकादशी	२७ फरवरी	शुक्र.
होलिकादहन	२ मार्च	सोम.
खण्डग्रास चन्द्रग्रहण	३ मार्च	मंगल.
होली, धुरेड्डी रंगोत्सव सर्वत्र	४ मार्च	बुध.
वारुणी पर्व योग	१७ मार्च	मंगल.
संवत्सर २०८२ समाप्त एवं नव संवत २०८३ प्रारम्भ	१९ मार्च	गुरु.

॥ जय गुरुदेव ॥

संवत्सर एवं राजा मंत्री फल

स्नेही पाठक वृन्द,

हमारी भारतीय संस्कृति महान है, दिव्य है। इसके मूल में ऋषियों-परम संतों का तप, त्याग संयम पर दुःख का तरना निहित है। आज परम आवश्यक है कि हमारे व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक राष्ट्रीय जीवन में सनातन, वैदिक, वैज्ञानिक भारतीय परम्पराओं का समावेश हो। अपनी ऋषि प्रणीत दिव्य परम्पराओं के प्रति हम पूर्ण आस्था निष्ठा रखें, उन्हें ही जीवन का आधार बनायें। प्रयास ही नहीं दृढ़ निश्चय करें भोगवादी एवं मात्र भौतिकवादी पाश्चात्य संस्कृति के दुष्प्रभाव एवं दुष्चक्र से बचने का।

हमारा भारतीय नववर्ष कालयुक्त संवत्सर २०८२ प्रारम्भ हो चुका है। यह वर्ष हमारे लिए नवीन प्रेरणाओं का वर्ष हो। हमारी मानसिकता स्वस्थ बने। हमारा विवेक सदैव जागरूक रहे। आहार शुद्ध रहे विचार मांगलिक रहे, व्यवहार सहज-सरल हो, स्वभाव शीतल, कर्तव्य के प्रति ईमानदारी। सतत् श्री कृष्ण कृपा का स्मरण ...... नव वर्ष की मंगलिता स्वतः आपका वरण करने को उत्सुक होगी।

५२ वाँ कालयुक्त संवत्सर फल :

प्रजानां जायते रोगः कालयुक्ते विशेषतः।
राजयुद्धं भवेद घोरं प्रजानाशो वरानने।।

शिवजी पार्वती संवाद मे शिवजी पार्वती से कहते है कि हे पार्वती कालयुक्त संवत्सर मे जनता को रोग, राजाओ मे भयंकर युद्ध तथा प्रजा का नाश होगा।

भारतीय काल गणना के अनुसार कलियुग के आरम्भ से ५१२७ वर्ष व्यतीत हो चुके है। विक्रमीय संवत्सर २०८२ अग्रेजी दिनाकं ३० मार्च २०२५ ई० दिन रविवार से प्रारम्भ होगा। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रविवार होने से संवत्सर के राजा का पद सूर्य ग्रह को प्राप्त हो रहा है। सूर्य के साल के राजा होने से एवं मेष संक्रान्ति भी रविवार को है राजा और मंत्री दोनों महत्वपूर्ण पदो पर महातेजस्वी सूर्य ग्रह ही विद्यमान है। कुल १० विभागो मे से ६ विभाग पाप ग्रहो के अधीन है तथा ४ विभाग ही शुभ ग्रहो के पास है। इस प्रकार आकाशीय मंत्रि परिपद मे पाप ग्रहो का ही बहुमत है, सूर्य के राजा होने के फल स्वरूप पृथ्वी पर सर्वत्र फसलो का उत्पादन कम होगा। मनुष्यों एवं पशुओ तथा जंगली जानवरो को भी भोजन जुटाने के लिए कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। नदियाँ-सरोवर, झील-तलाब सभी सूखने के कगार पर पहुच जायेगे। देश की प्रमुख नदिया भी पानी के अभाव मे क्षीण दिखायी देगी। देश को इस वर्ष एक साथ आन्तरिक एवं बाहरी दोनो प्रकार के शत्रुओ, रोग तस्करी, अग्निकाण्ड, विस्फोट जैसी हिसक घटनाओ से जूझना पडेगा। विस्फोट एवं अग्निकाण्ड की कई घटनाऐ घटेगी। राजा सूर्य और मंत्री सूर्य है। अतः सृष्टि के शासन संचालन मे कोई विरोधाभास नही रहेगा। सिंह लग्न मे इस संवत्सर का प्रवेश हो रहा है जिसका फल प्रायः शुभफलकारक ही है। प्रायः आकाश मे बादल दिखाई देते रहेगे धातुओ जैसे सोना-चादी-ताँबा-पीतल-लोहा का भाव तेज रहेगा। उत्तर भारत मे अच्छी जल वृष्टि होने का फल प्राप्त हो रहा है। रूद्र या मल नामक प्राचीन ग्रन्थ मे शिव-पार्वती संवाद के अनुसार संवत्सर को कालयुक्त नाम से जाना जायेगा। जो संकल्पादि मे वर्ष भर प्रयोग किया जायेगा। अगले संवत्सर चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से सिदार्थ नामक संवत्सर का प्रयोग प्रारम्भ होगा।

राजा सूर्य फलमः-

सूर्य नृपे स्वल्पजलाश्च मेघा स्वल्पं धान्यमल्प फलाश्चवृक्षाः।
स्वल्प पयो गोषु जनेषु पीडा चौराग्नि बाधा निधनं नृपाणाम्।।

अर्थः- इस संक्सर मे राजा का पद सूर्य देव को मिला है जिसके फल मे अल्प वर्षा होगी, अन्न तथा फल का उत्पादन कम गाये अल्प दूध देने वाली, जनता को पीडा, चोर तथा अग्नि का भय तथा राजाओ (शाकस वर्ग) का मरण होगा।

मंत्री सूर्य फलमः-

नृपभयं गदतोऽपि हि तस्करात्प्रचुर धान्य धनानिम ही तले।
रसचयं हि समर्घतमं तदा रविरमात्यपादं हि समागतः।।

मंत्री भी सूर्य देव ही है जिसके फल मे जनता को राजा, रोग तथा चोरो से भय, पृथ्वी पर प्रचुर अन्न का उत्पादन तथा रसपदार्थ सस्ते होगे।

॥ जय गुरुदेव ॥

।। ग्रहण विवरण संवत् २०८२ ।।

इस संवत्सर २०८२ मे कुल चार ग्रहण पूरे विश्व मे लगेगे। दो सूर्य ग्रहण होगे किन्तु दोनो ही सूर्य ग्रहण भारत भूमि मे नही दिखाई देगे। दो चन्द्र ग्रहण लगेगे एवं दोना ही चन्द्र ग्रहण भारत मे दिखाई देगे। सभी ग्रहणो के बारे मे अपेक्षित जानकारी क्रमशः नीचे दी जा रही है।

१ः चन्द्र ग्रहण :- भाद्र पद शुक्ल पूर्णिमा रविवार तदनुसार ७ सितम्बर २०२५ को चन्द्र ग्रहण लगेगा। जिसे भारत भूमि से देखा जा सकेगा। भारत भूमि के अतिरिक्त इस ग्रहण को अंटार्कटिका पश्चिमी प्रशान्त महासागर, आस्ट्रेलिया, एशिया हिन्द महासागर, यूरोप, पूर्वी अटलांटिक महासागर मे दिखाई देगा। यह खग्रास चन्द्र ग्रहण सम्पूर्ण भारत वर्ष मे दिखाई देगा और यह स्पर्श से लेकर मोक्ष तक देखा जा सकेगा। भारतीय मानक समय के अनुसार ग्रहण का प्रारम्भ रात्रि १० बजकर १२ मिनट पर होगा ग्रहण का मध्य समय रात्रि ११ बजकर ५३ मिनट पर मोक्ष अथवा ग्रहण की समाप्ति रात्रि १ बजकर ३६ मिनट पर हो जायेगी। काशी सहित सम्पूर्ण भारत मे ग्रहण का समय उपरोक्त होगा।

श्री शुभ संवत् २०८२ भाद्र पद शुक्ल पूर्णिमा रविवार ७ सितम्बर २०२५ खग्रास चन्द्र ग्रहण।

ग्रहण प्रारम्भ	रात्रि	१०:१२ बजे
ग्रहण मध्य	रात्रि	११:५३ बजे
ग्रहण मोक्ष	रात्रि	१:३६ बजे

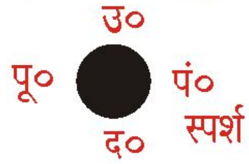

नोटः- यह ग्रहण शतभिषा नक्षत्र तथा कुम्भ राशि मे लगेगा। अतः उपरोक्त राशि नक्षत्र के लोग ग्रहण को न देखे यह चन्द्र ग्रहण का गोचर फल इस प्रकार होगा।

।। राशियो पर ग्रहण फल ।।

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	घात	हानि	लाभ	सुख	मान हानि	मृत्यु तुल्य कष्ट	स्त्री पीडा	सौख्य	चिन्ता	व्यथा	श्री	क्षति

२ः सूर्य ग्रहण :- आश्नि कृष्ण अमावस्या रविवार २१ सितम्बर २०२५ को लगने वाला खण्ड सूर्य ग्रहण भारत मे दिखाई ही नही देगा। भारतीय मानक समय के अनुसार ग्रहण का प्रारम्भ रात्रि ११ बजे तथा मोक्ष रात्रि ३ बजकर २४ मिनट पर होगा। इस ग्रहण का कोई प्रभाव भारत मे नही होगा। अतः संचार माध्यमो के भ्रम जाल मे न पडे।

३ः सूर्य ग्रहण :- फाल्गुन कृष्ण अमावस्या मंगलवार १७ फरवरी २०२६ को कंकणाकृति सूर्य ग्रहण भारत भूमि मे नही लगेगा अर्थात नही दिखाई देगा। अतः इसका समय देन मात्र भ्रम पालने का कारण बनेगा श्रद्धालु पाठको से अनुरोध है कि किसी भ्रम जाल मे न फँसे।

४ः चन्द्र ग्रहण :- फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा ३ मार्च २०२६ को खग्रास चन्द्र ग्रहण लगेगा। जो भारत मे ग्रस्तोदित खण्ड ग्रास चन्द्रग्रहण के रूप मे दिखाई देगा अर्थात जिस समय भारत के विभिन्न स्थानो पर चन्द्रोदय होगा उस समय ग्रहण लगा हुआ रहेगा एवं मोक्ष होते समय ही यह ग्रहण भारत मे देखा जा सकेगा। ग्रहण का स्पर्श अथवा प्रारम्भ भारत के किसी भी स्थान मे दिखाई नही देगा। ग्रहण की खग्रास स्थिति की समाप्ति सुदूर पूर्वी भारत के कुछ स्थानो से दिखाई देगी तथा देश के बाकी सभी स्थानों मे खण्ड चन्द्र ग्रहण का मोक्ष ही दिखाई देगा।

॥ जय गुरुदेव ॥

श्री शुभ संवतम २०८२ फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा मंगलवार

३ मार्च२०२६ काश्यां ग्रस्तोदित खण्ड ग्रास चन्द्रग्रहण

दृश्य	समय ६:१२ सायं
मोक्ष	समय ६:५८ सायं

नोटः– यह ग्रहण पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र तथा सिंह राशि मे लगेगा। अतः उपरोत्त राशि–नक्षत्र वाले लोग ग्रहण को न देखे।

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	चिन्ता	व्यथा	श्री	क्षति	घात	हानि	लाभ	सुख	मान हानि	मृत्यु तुल्य कष्ट	पीडा	सौख्य

सूतक :– सूर्य ग्रहण का सूतक स्पर्श समय से १२ घंटे पूर्व प्रारम्भ हो जाता है एवं चन्द्र ग्रहण का ६ घंटे पूर्व। स्पर्श के समय स्नान पुनः मोक्ष के समय स्नान करना चाहिए सूतक लग जाने पर मंदिर में प्रवेश करना मूर्ति को स्पर्श करना, भोजन करना, मैथुन क्रिया, यात्रा इत्यादि वर्जित है। बालक, बृद्ध, रोगी अत्यावश्यक में पत्याहार ले सकते है। भोजन सामग्री जैसे– दूध, दही, घी इत्यादि में कुश रख देना चाहिए। ग्रहण मोक्ष के बाद पीने का पानी ताजा लेना चाहिए। ग्रहण अवधि में श्राद्ध–दान–जाप–मंत्र सिद्धि इत्यादि का शास्त्रोक्त विधान है। ग्रहण जहाँ से दिखाई देता है सूतक भी वही लगता है एवं धर्मशास्त्रीय मान्यताएं भी वही लागू होती है तथा उसका फला फल भी वही लागू होगा।

।। संवत् २०८२ समय शुद्धि ।।

खरमासः– मीन–धनु राशि में सूर्य के आने पर खरमास होता है।

गुरुः– वर्ष आरम्भ मे बृष राशि, ज्येष्ठ कृष्ण ३ गुरु (१५.५.२०२५) मिथुन राशि, ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा बुध (११.६.२०२५) पश्चिम में अस्त। आषढ शुक्ल द्वादशी सोमवार (७.७.२०२५) पूर्वोदय। मार्ग शीर्ष कृष्ण सत्तमी मंगलवार (११.११.२०२५) बक्री चैत्र कृष्ण सत्तमी मंगलवार (७.३.२०२६) मार्गी।

शुक्रः– पौष कृष्ण सत्तमी (११.१२.२०२५) पूर्व मे अस्त, माघ शुक्ल पूर्णिमा रविवार (१.२.२०२६) पश्चिम मे उदय।

शनिः– वर्ष पर्यन्त मीन राशि मे। श्रावण कृष्ण द्वितीया शनिवार (१२.७.२०२५) वक्री, मार्ग शीर्ष शुक्ल सत्तमी गुरुवार (२७.११.२०२५) मार्गी।

राहुः– वर्ष आरम्भ मीन राशि मे। ज्येष्ठ कृष्ण तृतीया गुरुवार (१५.५.२०२५) कुम्भ राशि मे वर्ष पर्यन्त।

केतुः– वर्ष आरम्भ कन्या राशि मे। ज्येष्ठ कृष्ण तृतीया गुरुवार (१५.५.२०२५) सिंह राशि मे वर्ष पर्यन्त।

विवाहः– वैशाख–ज्येष्ठ–मार्ग शीर्ष शुक्ल पक्ष–पौष कृष्ण पक्ष–फाल्गुन, चैत्र कृष्ण पक्ष।

।। अग्निवास कहाँ शुभ होता है ।।

जिस दिन हवन करना हो उस दिन की तिथि संख्या में वार संख्या जोड़कर १ और जोड़ दे जो आये उसमें चार का भाग दें शेष ० या ३ बचे तो अग्नि का वास पृथ्वी पर है शुभ जाने १ शेष बचे तो अग्निवास आकाश मे प्राण नाशक होता है २ शेष मे पाताल मे अग्नि धन ऐश्वर्य की हानि करती है। नीचे दी गई सारणी से आसानी से अग्निवास जाना जा सकता है। जैसे हमें शुक्ल पक्ष की ५ तिथि शुक्रवार को अग्निवास ज्ञात करना है। तो शुक्ल पक्ष ५ तिथि के सामने शुक्रवार के खाने में पृथ्वी लिखा-मिला, अतः शुभ है। इसी प्रकार कृष्ण पक्ष की १२ तिथि के सामने शुक्रवार के खाने में पाताल लिखा मिला अशुभ है।

।। हवनादि कार्यो में अग्निवास ज्ञान हेतु सारणी ।।

शुक्लपक्ष की तिथि	कृष्णपक्ष की तिथि	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
१	-	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
२	-	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
३	-	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
४	१	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
५	२	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
६	३	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
७	४	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
८	५	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
९	६	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
१०	७	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
११	८	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
१२	९	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
१३	१०	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
१४	११	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
१५	१२	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
-	१३	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
-	१४	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
-	१५	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल

नोट :- भगवती दुर्गा जी के अनुष्ठान में अग्निवास की आवश्यकता नहीं होती है।

॥ जय गुरुदेव ॥

राहुकाल विचार

रविवार सायं ४:३० से ६:०० बजे तक

सोमवार प्रातः ७:३० से ९:०० तक

मंगलवार दोपहर ३:०० से ४:३० बजे तक

बुधवार दोपहर १२:०० से १:३० बजे तक

गुरूवार दोपहर १:३० से ३:०० बजे तक।

शुक्रवार प्रातः १०:३० से १२:०० तक

शनिवार प्रातः ९:०० से १०:३० बजे तक

शिववास तिथियाँ

शुक्ल पक्ष	२, ५, ६, ९, १२, १३
कृष्ण पक्ष	१, ४, ५, ८, ११, १२, १३

यात्राप्रकरण दिशाशूलज्ञानार्थ चक्रम्

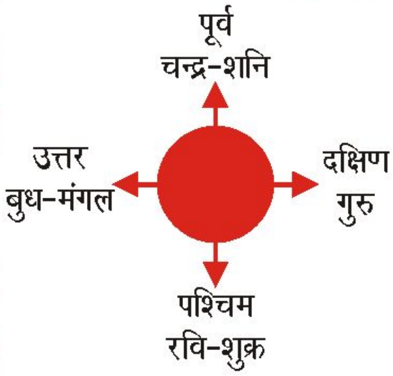

सूर्य शुके पश्चिमायां,
बुधे भौमे तथात्तरे।
शनि चन्द्र त्यजेत पूर्वा,
दक्षिणायां च दिशम् गुरौ।

नोटः-दिशा शूल में यदि यात्रा करना आवश्यक ही हो तो निम्नांकित वस्तु खाने से यात्रा शुभ होगी।

रवि का पान सोम को दर्पण, मंगल को गुड़ करिए अर्पण।
बुध को धनिया, बीफे जीरा, शुक्र कहे मोहि दहि के पीरा।
शनि कहे मैं अदरक खाऊँ, सुख सम्पति निश्चय घर जाऊँ।

नोटः- दिशा शूल मे यदि यात्रा करना आवश्यक ही हो तो निम्नाकित वस्तु खाने से यात्रा शुभ होगी।

वार	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
वस्तु	पान	दर्पण	गुड़	धनिया	जीरा	दही	अदरक

चन्द्रवास विचार

पूर्व दिशा - मेष, सिंह, धनु

पश्चिम दिशा - मिथुन, तुला, कुम्भ

उत्तर दिशा - कर्क, वृश्चिक, मीन

दक्षिण दिशा - वृष, कन्या, मकर

सम्मुख चन्द्रवास होने से अर्थ लाभ, दाहिने होने से सुख-सम्पदा, पीछे होने से कष्टकारी एवं बाएं होने से धन हानि होती है।

!! संवत २०८२ संदिग्ध व्रत-पर्व निर्णय !!

१. नवसंवत्सरारम्भः- 'प्रभवादि' कुल साठ संवत्सरो की श्रृंखला मे (५२ वाँ) 'कालयुक्त' नामक संवत्सर चैत्र शुक्ल प्रतिपदा रविवार ३० मार्च सन २०२५ से प्रारम्भ होगा चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रविवार होने से सूर्य इस संवत्सर के राजा हुऐ चूकि मेष संक्रान्ति के दिन भी रविवार पड रहा है अतः मंत्री का पद भी सूर्य को प्राप्त हुआ है। वासन्तिक (चैत्र) नवरात्र का कलश स्थापन प्रतिपदा तिथि पर्यन्त दिन मे होगा।

२. रक्षाबन्धनः- रक्षाबन्धन का श्रावणी मे इस वर्ष भद्रा आदि किसी प्रकार का दोष अथवा संदिग्ध स्थिति नही है अतः ९ अगस्त शनिवार को रक्षाबन्धन का पवित्र पर्व दिन भर मनाया जायेगा।

३. श्रीकृष्णजन्माष्टीः- इस वर्ष भाद्रपद कृष्ण अष्टमी अर्धरात्रि मे तथा रोहिणी नक्षत्र का संयोग एक साथ एक ही दिन नहीं बन पा रहा है, ऐसी परिस्थिति मे उदय कालिक अष्टमी तिथि की प्रधानता को शास्त्र वचनो के आधार पर १६ अगस्त शनिवार को श्री कृष्ण जन्माष्टमी का व्रत पर्व सबके लिए होगा "दिवा वा यदि वा रात्रौनास्तिचे द्रोहणी कला रात्रि युक्तां प्रकुर्वीत विशेषेणन्दु संयुताम।"

४. शारदीय नवरात्रः- शाददीय नवरात्र मे व्रत के लिए अष्टमी अर्थात महाष्टमी ३० सितम्बर मंगलवार को होगी तथा महानवमी १ अक्टूबर बुधवार को होगी।

५. विजयादशमीः- उदयकालिक दशमी तिथि अपरान्ह दिन २:५६ बजे तक है एवं प्रातः ६:२८ बजे के बाद श्रवण नक्षत्र दोनो का अत्यन्त शुभफलदायी योग २ अक्टूबर गुरुवार को ही निर्विवाद मनाया जायेगा। इसमे किसी प्रकार के किसी सन्देह का स्थान ही नही है। "उदये दशमी किश्चित" सम्पूर्णै कादशी यदि। श्रवणर्क्ष यदा कालेसा तिथि विजययामिधा।"

६. धनतेरसः- प्रदोष काल मे त्रयोदशी मिलने के कारण धन त्रयोदशी धनतेरस एवं धन्वन्तरि जयन्ती १८ अक्टूबर शनिवार को होगी।

७. दीपावलीः- २० अक्टूबर सोमवार को दिन मे २ बजकर ४२ मिनट तक चतुर्दशी तिथि है उसके बाद अमावस्या तिथि प्रारम्भ हो जायेगी दीपावली के लिए प्रदोषकाल मे अमावस्या रहनी चाहिए जो निशीथ काल अर्धरात्रि मे भी व्याप्त हो अतः दीपावली का सुप्रसिद्ध पर्व २० अक्टूबर सोमवार को पूरे देश मे मनाया जायेगा। दीपावली मे लक्ष्मी पूजन के लिए तीन मुहूर्त निर्धरित किये जा रहे है। १) व्यावसायिक प्रतिष्ठान जहाँ दिन मे ही लक्ष्मी पूजनकरने की अनिवार्यता हो वहाँ स्थिर कुम्भ लग्न दिन २:२६ बजे से ३:५५ बजे तक। २) सर्वोत्तम प्रदोष काल का स्थिर बृष लग्न ७:१० से ८:५८ बजे तक तथा ३) महानिशा मे काली पूजा एवं तंत्र सिद्धि के लिए स्थिर सिंह लग्न रात्रि १:२६ से ३:४५ बजे तक। स्थानीय समय के अनुसार स्थान विशेष का समय निर्धारित किया जायेगा।कृपया लग्न परिवर्तन तालिका से काशी के उपरोक्त समय मे स्थानीय समय के अनुसार धन ऋण कर कानपुर उ०प्र० का समय निर्धरित कर लिया है।

८. होलिकादहनः- होलिका दहन तीन नियमों का पालन करते हुए किया जाता हैं। १. फाल्गुन शुक्ल पुर्णिमा तिथि हो। २. रात का समय हो एवं ३. भद्रा बीत चुकी हो। इस वर्ष २ मार्च सोमवार सायं ५:२८ बजे से फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा प्रारम्भ हो रही है तथा इसी के साथ भद्रा भी शुरू हो रही है जो रात शेष (भोर मे) ५:१० बजे तक है अतः भद्रा मुख को छोडकर भद्रा पुच्छ में रात्रि १२:१० बजे से लेकर रात्रि १२:५६ बजे के मध्य होलिका दहन का मुर्हूत बन रहा है। "प्रदोष व्यापिनी ग्राह्मा पौर्णिमा फाल्गुनी सदा। तस्यां भद्रा मुखं व्यक्त्वा पूज्या होलानिशा मुखे।"

९. होली रंगोत्सव धुरेड्डी सर्वत्रः- इस वर्ष ३ मार्च मंगलवार को पूर्णिमा तिथि दिन (सायं) ४:४४ बजे तक है तथा ग्रस्तोदित खण्ड ग्रास चन्द्रग्रहण भी लग रहा है। ऐसी परिस्थिति मे चैत्र कृष्ण प्रतिपदा ४ मार्च बुधवार को पूरे देश मे एक साथ रंग की होली धुरेड्डी मनाई जायेगी। काशी मे काशी की परम्परा के अनुसार ३ मार्च मंगलवार को ग्रहण मोक्ष के उपरान्त चतुर्षष्टी (चौसट्टी) देवी का दर्शन पूजन कर अबीर-गुलाल चढाया जायेगा।

जाति भेद से परे समग्र सनातनियों की उपस्थिति का आयोजन महाकुंभ

जैसे भौतिक सुखों में परिवार को सुखी देखना हमारे सुख में निरन्तर वृद्धि करता है वैसे ही धार्मिक सुखों में कुंभः हमारे मन को शुद्ध करता है। विक्रमी संवत् २०६५ में तीर्थराज प्रयाग की पावन भूमि पर महाकुंभ की विशेष स्थिति बनी है। पौराणिक मान्यताओं और किंवदंतियों के अनुसार यह महाकुंभ १४४ वर्ष के पश्चात घटित हुआ है और अब यह पवित्र घटना विक्रमी संवत् २०८२ में घटेगी। श्रीमद्भागवत महापुराण, विष्णुपुराण और अन्य पुराणों के आधार पर जब समुद्र मंथन के दौरान, देवताओं और असुरों के मध्य अमृत को लेकर संघर्ष हुआ तब उस पात्र से चार बूँदें गिरी थी। जिस स्थान पर कुम्भ का आयोजन हुआ। उन स्थानों के नाम हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक हैं। इन सभी स्थानों पर प्रत्येक बारह वर्ष में पूर्ण कुम्भ मेले का आयोजन होता है। कुंभ के इन पैतालीस दिनों में सम्पूर्ण विश्व सनातन धर्म के विभिन्न आयामों का विशेष रूप से दर्शन करता है। धर्म के इस त्यौहार में चारों पीठों के शंकराचार्य और सभी अखाड़ों के महामंडलेश्वर अपने वैभव का प्रदर्शन करते हुए, सनातन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता प्रदर्शित करते हैं। इस वैश्विक आयोजन के दौरान नागा साधु अपनी उपस्थिति से सभी को गौरवान्वित करते हुए, कठिन तपस्या का अनुभव कराते हैं। एक अनुमान के अनुसार, प्रत्येक कुंभ आयोजन में, लगभग तीन से चार करोड़ श्रद्धालु शामिल होते हैं। ये महापर्व जीव के प्रति प्रेम का गीत है। जीव की उन्नति के लिए कुंभ का दर्शन कीजिए, मुक्ति का आन्नद लीजिए।

प्रस्तुति

सुधित मिश्र "राघव"

सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार

मो.: 8400860960

श्री गणेश चतुर्थी व्रत विवरण संवत् २०८२ सन् २०२५-२६

दिनांक	दिन	माह	पक्ष	गणेश चतुर्थी व्रत एवं चन्द्रोदय
१.४.२५	मंगलवार	चैत्र	शुक्ल	वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी व्रत (अंगार की)
१६.४.२५	बुधवार	वैशाख	कृष्ण	संकष्टी श्री गणेश चतुर्थी व्रत- चन्द्रोदय रात्रि ६:३८
१.५.२५	गुरुवार	वैशाख	शुक्ल	वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी व्रत।
१६.५.२५	शुक्रवार	ज्येष्ठ	कृष्ण	संकष्टी श्री गणेश चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय रात्रि १०:१८
३०.५.२५	शुक्रवार	ज्येष्ठ	शुक्ल	वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी व्रत
१४.६.२५	शनिवार	आषाढ	कृष्ण	संकष्टी चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय रात्रि ६:४८
२८.६.२५	शनिवार	आषाढ	शुक्ल	वैनायकी चतुर्थी व्रत
१४.७.२५	सोमवार	श्रावण	कृष्ण	संकष्टी चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय रात्रि ६:४०
२८.७.२५	सोमवार	श्रावण	शुक्ल	वैनायकी चतुर्थी व्रत
१२.८.२५	मंगलवार	भाद्रपद	कृष्ण	संकष्टी, अंगार की (बहुला) चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय रात्रि ८:४८
२७.८.२५	बुधवार	भाद्रपद	शुक्ल	वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी व्रत (महोत्सव प्रारम्भ)
१०.६.२५	बुधवार	अश्विन	कृष्ण	संकष्टी चतुर्थी श्री गणेश चन्द्रोदय व्रत रात्रि ७:४७ बजे
२५.६.२५	गुरुवार	अश्विन	शुक्ल	वैनायकी चतुर्थी व्रत।
१०.१०.२५	शुक्रवार	कार्तिक	कृष्ण	संकष्टी करक चतुर्थी (करवाचौथ व्रत) चन्द्रोदय रात्रि ८:१०
२५.१०.२५	शनिवार	कार्तिक	शुक्ल	वैनायकी चतुर्थी व्रत
८.११.२५	शनिवार	मार्गशीर्ष	कृष्ण	संकष्टी चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय रात्रि ७:५५
२४.११.२५	सोमवार	मार्गशीर्ष	शुक्ल	वैनायकी चतुर्थी व्रत
८.१२.२५	सोमवार	पौष	कृष्ण	संकष्टी चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय रात्रि ८:५८
२३.१२.२५	मंगलवार	पौष	शुक्ल	अंगारकी वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी व्रत।
६.१.२६	मंगलवार	माघ	कृष्ण	अंगार की वैनायकी श्री गणेश व्रत चन्द्रोदय रात्रि ८:४५
२२.१.२६	गुरुवार	माघ	शुक्ल	वैनायकी चतुर्थी व्रत।
५.२.२६	गुरुवार	फाल्गुन	कृष्ण	संकष्टी चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय रात्रि ६:२० बजे
२१.२.२६	शनिवार	फाल्गुन	शुक्ल	वैनायकी चतुर्थी व्रत
६.३.२६	शुक्रवार	चैत्र	कृष्ण	संकष्टी श्री गणेश चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय रात्रि ८:५७

॥ जय गुरुदेव ॥

एकादशी व्रत विवरण संवत २०८२ सन् २०२५-२६

दिनांक	दिन	माह	पक्ष	एकादशी व्रत विवरण
८.४.२५	मंगलवार	चैत्र	शुक्ल	कामदा एकादशी व्रत (सबका)
२४.४.२५	गुरुवार	वैशाख	कृष्ण	वरुथिनी एकादशी व्रत (सबका)
८.५.२५	गुरुवार	वैशाख	शुक्ल	मोहिनी एकादशी व्रत (सबका)
२३.५.२५	शुक्रवार	ज्येष्ठ	कृष्ण	अचला (अपरा) एकादशी व्रत (सबका)
६.६.२४	शुक्रवार	ज्येष्ठ	शुक्ल	निर्जला एकादशी व्रत (स्मार्त)
२१.६.२५	शनिवार	आषाढ	कृष्ण	योगिनी एकादशी व्रत (स्मार्त)
६.७.२५	रविवार	आषाढ	शुक्ल	श्री हरिशयनी एकादशी व्रत (सबका)
२१.७.२५	सोमवार	श्रावण	कृष्ण	कामदा एकादशी व्रत (सबका)
५.८.२५	मंगलवार	श्रावण	शुक्ल	पुत्रदा एकादशी व्रत (सबका)
१९.८.२५	मंगलवार	भाद्र पद	कृष्ण	जया एकादशी व्रत (सबका)
३.९.२५	बुधवार	भाद्र पद	शुक्ल	पदमा एकादशी व्रत (सबका)
१७.९.२५	बुधवार	आश्विन	कृष्ण	इन्दिरा एकादशी व्रत (सबका)
३.१०.२५	शुक्रवार	आश्विन	शुक्ल	पापाकुंश एकादशी व्रत (सबका)
१७.१०.२५	शुक्रवार	कार्तिक	कृष्ण	रम्भा एकादशी व्रत (सबका)
१.११.२५	शनिवार	कार्तिक	शुक्ल	श्री हरिप्रबोधिनी-देवोत्यापनम् एकादशी व्रत (सबका)
१५.११.२५	शनिवार	मार्गशीर्ष	कृष्ण	उत्पन्ना एकादशी व्रत (सबका)
१.१२.२५	सोमवार	मार्गशीर्ष	शुक्ल	मोक्षदा एकादशी व्रत (सबका)
१५.१२.२५	सोमवार	पौष	कृष्ण	सफला एकादशी व्रत (सबका)
३०.१२.२५	मंगलवार	पौष	शुक्ल	पुत्रदा एकादशी व्रत (सबका)
१४.१.२६	बुधवार	माघ	कृष्ण	षट्तिला एकादशी व्रत (सबका)
२९.१.२६	गुरुवार	माघ	शुक्ल	जया एकादशी व्रत (सबका)
१३.२.२६	शुक्रवार	फाल्गुन	कृष्ण	विजया एकादशी व्रत (सबका)
२७.२.२६	शुक्रवार	फाल्गुन	शुक्ल	आमल की एकादशी व्रत (सबका)
१५.३.२६	रविवार	चैत्र	कृष्ण	पाप मोचनी एकादशी व्रत (सबका)

नोटः-स्मार्त-सद्ग्रहस्थियो के लिए है, जिससे अग्रिमदिन चक्रांकित महाभागवत वैष्णवजन, साधु- सन्यासी, योगी, जती, विधवा स्त्रियाँ व्रत करती है। जिस एकादशी व्रत के सामने सबका लिखा है वह सबके लिए रहेगी।

प्रदोष व्रत विवरण संवत् २०८२ सन् २०२५-२६

दिनांक	दिन	माह	पक्ष	प्रदोष व्रत विवरण
१०.४.२५	गुरुवार	चैत्र	शुक्ल	श्री प्रदोष व्रत
२५.४.२५	शुक्रवार	वैशाख	कृष्ण	श्री प्रदोष व्रत
९.५.२५	शुक्रवार	वैशाख	शुक्ल	श्री प्रदोष व्रत
२४.५.२५	शनिवार	ज्येष्ठ	कृष्ण	शनि प्रदोष (संतान प्रप्ति हेतु)
८.६.२५	रविवार	ज्येष्ठ	शुक्ल	श्री प्रदोष व्रत (विशेष)
२३.६.२५	सोमवार	आषाढ	कृष्ण	सोम प्रदोष व्रत (आरोग्य प्राप्ति हेतु)
८.७.२५	मंगलवार	आषाढ	शुक्ल	भौम प्रदोष व्रत (ऋण मुक्ति हेतु)
२२.७.२५	मंगलवार	श्रावण	कृष्ण	भौम प्रदोष व्रत (ऋण मुक्ति हेतु)
६.८.२५	बुधवार	श्रावण	शुक्ल	श्री प्रदोष व्रत
२०.८.२५	बुधवार	भाद्रपद	कृष्ण	श्री प्रदोष व्रत
५.९.२५	शुक्रवार	भाद्रपद	शुक्ल	श्री प्रदोष व्रत
१९.९.२५	शुक्रवार	आश्विन	कृष्ण	श्री प्रदोष व्रत
४.१०.२५	शनिवार	आश्विन	शुक्ल	शनि प्रदोष व्रत (संतान प्राप्ति हेतु)
१८.१०.२५	शनिवार	कार्तिक	कृष्ण	शनि प्रदोष व्रत (संतान प्राप्ति हेतु)
३.११.२५	सोमवार	कार्तिक	शुक्ल	सोम प्रदोष व्रत (आरोग्य प्राप्ति हेतु)
१७.११.२५	सोमवार	मार्गशीष	कृष्ण	सोम प्रदोष व्रत (आरोग्य प्राप्ति हेतु)
२.१२.२५	मंगलवार	मार्गशीष	शुक्ल	भौम प्रदोष व्रत (ऋण मुक्ति हेतु)
१७.१२.२५	बुधवार	पौष	कृष्ण	श्री प्रदोष व्रत
१.१.२६	गुरुवार	पौष	शुक्ल	श्री प्रदोष व्रत
१६.१.२६	शुक्रवार	माघ	कृष्ण	श्री प्रदोष व्रत
३०.१.२६	शुक्रवार	माघ	शुक्ल	श्री प्रदोष व्रत
१४.२.२६	शनिवार	फाल्गुन	कृष्ण	शनि प्रदोष व्रत (संतान प्राप्ति हेतु)
१.३.२६	रविवार	फाल्गुन	शुक्ल	श्री प्रदोष व्रत (विशेष)
१६.३.२६	सोमवार	चैत्र	कृष्ण	सोम प्रदोष व्रत (आरोग्य प्राप्ति हेतु)

।। बालक जन्म पाया विचार ।।

जन्म कुण्डली के १.६.११ वें स्थान में चन्द्रमा हो तो स्वर्ण पाया। २.५.९ में चाँदी पाया। ३.७.१० में तांबा पाया और ४.८.१२ भाव में हो तो लोहे के पाया में जन्म हुआ है। ऐसा जाने यह मत सर्वमान्य है।

।। नाम करण संस्कार ।।

जन्म से १०.११.१२ दिन अथवा परिस्थिति वसात् १५-१६-२१-२७ एवं ३७ वे दिन शुभवार हो, १-४-६-९-१४ तिथि रहित शुभ नक्षत्र - अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा उत्तरा षाढा, श्रवण धनिष्ठा, शतभिषा उत्तराभाद्रपद और रेवती तथा शुभ लग्न में वर्ण व्यवस्थानुसार विद्वानों को नाम करण संस्कार करने की अनुमति देनी चाहिए।

।। वारों की मान्य दिशाएँ ।।

रविवार पूर्व, चन्द्र की वायव्य मंगल की दक्षिण, बुध की उत्तर, गुरु की ईशान शुक्र की आग्नेय शनि की पश्चिम होती है। किस नक्षत्र का किस वार से सम्बन्ध कैसा बना है सो विचार कर उत्तर देना चाहिए।

।। खोई हुई वस्तु मिलेगी की नहीं ।।

नक्षत्र संज्ञा	नक्षत्र	मिलेगी या नहीं	दिशा
अन्धाक्ष	रोहिणी, पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, विशाखा धनिष्ठा-रेवती, पूर्वाषाढा	शीघ्र मिलेगी	पूर्व में
शुलोचन	कृतिका-पुनर्वसु-पूर्वाफाल्गुनी-स्वाती-मूल-श्रवण उत्तराभाद्रपद	नही मिलेगी	उत्तर में
मध्याक्ष	भरणी-आर्द्रा-मघा चित्रा, ज्येष्ठा अभिजित, पूर्वाभाद्रपद	पता लगने पर भी नही मिलेगी	पश्चिम में
मंदाक्ष	अश्विनी-मृगशिरा अश्लेषा-हस्त अनुराधा उत्तरा षाढा शतभिषा	बहुत प्रयत्न करने पर मिलेगी।	दक्षिण में

।। कोई घर से चला गया हो ।।

इस प्रश्नोत्तर के समय नक्षत्र, वार, चौघड़िया और तत्कालिन लग्न संशोधन से जाना जा सकता है, कि वह कहाँ किस परिस्थिति में है। मिलेगा या नही, नही का उत्तर विवेकपूर्ण ढंग से दे, जिससे पूछने वाले को बुरा भी न लगे और बात भी पूरी हो।

।। गर्भ सम्बन्धी प्रश्न ।।

कुण्डली के तृतीय, सत्तम, नवम, पंचम स्थान में रवि भौम या गुरु पुरूष ग्रह स्थिति हो तो पुत्र और यदि उक्त स्थानों में अन्य ग्रह पडे हो तो कन्या जन्म कहना चाहिए। प्रश्न कुण्डली के अनुसार देखे।

।। नष्टवस्तु प्रश्न ।।

प्रश्नकालीन तिथि, वार, नक्षत्र और लग्नांक मे तीन मिलाकर ५ का भाग दे शेष १ बचे तो पृथ्वी में, २ बचे तो जल में परन्तु मिले नहीं। ३ शेष में ऊँची जगह पर ४ शेष में वस्तु को राज्य खजाने में जाने और ० शेष में गई हुई वस्तु हवा में नष्ट प्रायः जाने फल शोक सन्ताप कहे।

।। ग्रह उच्च नीच देखना ।।

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
उच्च	१	२	१०	६	४	१२	७	२.३	८.६
नीच	७	८	४	१२	१०	६	१	८.६	२.३

।। मांगलिक दोष परिहार ।।

गुरु केन्द्रे त्रिकोणेवा लाभ भावे दिवा करो।
शत्रु स्थाने गते राहौ न दोषो मंगलीम्दवः।।

१. वर-वधू की कुण्डली में गुरु यदि केन्द्र या त्रिकोण में हो और लाभ स्थान में सूर्य हो और छठे राहु हो तो मंगल का दोष नहीं होता है।
२. मंगली कारक ग्रह पर गुरु की पूर्ण दृष्टि हो तो मंगली दोष निरस्त हो जाता है।
३. वर कन्या दोनो की कुण्डली में (लग्न कुण्डली और चन्द्र कुण्डली दोनों से देखने पर) पूर्वोक्त मंगली दोषोत्पादक पांचो स्थानों में कहीं भी पाप ग्रह समान संख्या में बैठे हो तो मांगलिक दोष का दुष्प्रभाव नहीं होता है।
४. वर-कन्या दोनों के राशियों में मित्रता हो या दोनों का एक ही गण हो अथवा दोनों के कूटों का गुण मिलान करने पर गुणों की अधिकता हो तो इन स्थितियों में मंगली दोष निष्प्रभावी हो जाता है।

(मंगली)

लगने व्यये च पताले-जामित्रे कुज चाण्टमें कन्या भातु र्विनाश मतृी कन्या विनाश कृत।।
लग्न से १-४ ७-८-१२ भाव में मंगल हो तो लड़का या लड़की मंगली होता है।

।। अंगो पर छिपकली गिरने का फल ।।

अगर आप के किसी अंग पर छिपकली गिरती है, तो उस वक्त आप धारण किये हुये उस वस्त्र सहित स्नान करे और उस वस्त्र को त्याग दे। तत्पश्चात् तिल, उड़द, घृत में छाया पात्र का दान एवं यथाशक्ति धन का दान करके मृत्युंजय स्त्रोत का पाठ एवं जप शिव पूजन से विशेष लाभ मिलता है।

अंग		फल	अंग		फल
मस्तक (शिर)	-	राज्य लाभ	बायें हाथ	-	धनहानि
कपाल	-	ऐश्वर्य प्राप्ति	नाभि	-	पुत्र प्राप्त
नाक	-	सौभाग्य वृद्धि	हृदय	-	शुभ-यश प्राप्ति
दाहिना कान	-	आयु वृद्धि	गुदा	-	रोग भय
बांया कान	-	भूषण लाभ	गुप्तांग	-	मित्र से भेट
दाई भुजा	-	मान सम्मान	दाये पाव	-	यात्रा
बाई भुजा	-	धन हानि राज्यभय	बाये पाव	-	रोग-क्लेश
कण्ठ	-	शत्रुनाश	पांवो की अंगुलियाँ	-	लम्बी यात्रा
पीठ के मध्य	-	कलह	गर्दन	-	यश लाभ
बाई पीठ	-	रोग भय	कमर	-	रोग भय
दायी पीठ	-	शुभ-लाभ	दाये कंधे	-	सफलता विजय
बाई जाँघ	-	पुत्र से लाभ			

स्वप्न-फल

स्वप्न		फल	स्वप्न		फल	स्वप्न		फल
अग्नि	-	उन्नति	जलकलश	-	पुत्र	बारात	-	कष्ट
अर्थी	-	रोग मुक्त	जुआ	-	लाभ	बिच्छू	-	विजय
अन्न	-	परिवार वृद्धि	ज्योतिषी	-	विपत्ति	बन्दर	-	लाभ
अंगूठी	-	मिलन	जहाज	-	यात्रा	बाल	-	हानि
अंडा	-	धन-लाभ	जूता	-	भोजन	वैद्य-डाक्टर	-	रोग
आम	-	लाभ	झगड़ा	-	विजय	ब्राह्मण	-	कल्याण
आंधी	-	यात्रा कष्ट	तेल	-	रोग	बाल कटाना	-	ऋणमुक्ति
ओलावृष्टि	-	दु:ख	तैरना	-	लाभ	बाघ	-	विजय
उड़ना	-	यात्रा	तलवार	-	विजय	वृक्ष	-	वृद्धि
ऊपर चढ़ना	-	धन प्राप्ति	तीर्थ	-	विजय	बिल्ली	-	कष्ट
काली वस्तु	-	दु:ख	तोता	-	पीड़ा	भालू	-	व्याधि
कौवा	-	व्याधि	तेलस्नान	-	अशुभ	भैंस	-	विपत्ति
कुत्ता	-	मित्र की प्राप्ति	दाँत	-	भय-हानि	भैंस की सवारी	-	अशुभ
कीचड़ से धसना	-	अशुभ	देवी-देवता	-	लाभ	मन्दिर	-	लाभ
खाना बनाना	-	बीमारी	दही-भात	-	धन-यश	मांस भक्षण	-	कार्य सिध्दि
खून	-	विपत्ती	दीपक	-	वंशवृद्धि	मस्तक पर पक्षी	-	रोग
खीर	-	लाभ	दूध	-	उन्नति	मकान बनाना	-	श्रेष्ठ दिन
खाना	-	लाभ	दर्पण	-	लाभ	मोटर	-	आरोग्य
गाय	-	स्थान लाभ	नाच	-	हानि	मरन देखना	-	आयुवृद्धि
गधा	-	कष्ट	नमक	-	विपत्ति	रेलगाडी	-	यात्रा
गंगा	-	कल्याण	नंगा	-	अशुभ	रोटी	-	भाग्योदय
गिरना	-	कष्ट	नीचे उतरना	-	धनहानि	रुई	-	पीड़ा
गधे की सवारी	-	अशुभ	नौका	-	यश	शस्त्रघात	-	लाभ
गेहूँ	-	लाभ	पानी	-	लाभ	सवारी में चलना	-	लाभ
गाना	-	विपत्ति	पुलिस	-	विपत्ति	साधु	-	आरोग्य
घोड़ा	-	उन्नति	पिंजड़ा	-	जेल	सर्प काटना	-	धनप्राप्ति

स्वप्न		फल	स्वप्न		फल	स्वप्न		फल
घृत	-	लाभ	पान	-	लाभ	सफेद वस्त्र	-	लाभ
चन्द्रमा	-	आरोग्यता	प्रेत	-	कष्ट	शराब	-	लाभ
चावल	-	लाभ	फल खाना	-	पुत्रप्राप्ति	सूखा	-	परेशानी
चांदी	-	लाभ	विवाह	-	दुःख	सोना	-	कष्ट
चीटी	-	विपत्ति	विधवा	-	शोक	हाथी	-	लाभ
चोट	-	शोक	बमन	-	निरोग	हंसना	-	विपत्ति
जवाहरात	-	आशापूर्ण	बादल	-	लाभ	हथकड़ी बन्धना	-	लाभ

भद्रावास निर्णय

भद्रावास के संबंध में भी कई पाठकों के प्रश्न आते हैं। अतः यहाँ उसका पूरा विवरण दिया जा रहा है। भद्रा एक करण की संज्ञा है इसे सामान्यतः सभी शुभ कार्यों में वर्जित किया जाता है। भद्रा का वास विभिन्न राशियों में विभिन्न स्थानों से होता है। संग्रह ग्रंथों इसके बारे में भ्रामक जानकारी होने से इसका निराकरण यहाँ कियाजा रहा है।

मुहूर्त चिन्तामणि जो सर्वमान्य प्रमाणित ग्रन्थ है उसके अनुसार

कुम्भकर्कद्वये मर्त्येस्वर्गेऽजात् त्रयेऽलिगे।
स्त्रीधनर्जूक नक्रेऽधो भद्रा तत्रैव तत्फलम्॥

१. अर्थात् भद्रा का वास पृथ्वी पर तब होता है जब चन्द्रमा कुम्भ, मीन, कर्क, सिंह राशि में रहता है। यहाँ भद्रा अशुभ फलकारी होती है।
२. चन्द्रमा की राशि यदि मेष, वृष, मिथुन, वृश्चिक हो तो भद्रा स्वर्गलोक में रहती है। स्वर्ग की भद्रा का फल पृथ्वी पर अनिष्टकारी नहीं होता है।
३. चन्द्रमा यदि कन्या, तुला, धनु, मकर राशियों का हो तो भद्रा पाताल में होती है। पाताल की भद्रा पृथ्वी पर हानिकारक नहीं होती है।

नोटः- यह भी ध्यान देने योग्य है कि वैधृत, व्यतीपात, भद्रा, भौमवार व दूषित तारा मध्याह्न के बाद शुभ होती है।

भद्रावास चक्रम

लोक	स्वर्ग	पाताल	भूमि
	मेष	कन्या	कुम्भ
चन्द्र राशि	वृष	तुला	मीन
	मिथुन	धनु	कर्क
	वृश्चिक	मकर	सिंह

दिन की चौघड़िया

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	समय
उद्धेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	६:०० से ७:३०
चर	काल	उद्धेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	७:३० से ९:००
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्धेग	अमृत	रोग	९:०० से १०:३०
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्धेग	१०:३० से १२:००
काल	उद्धेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	१२:०० से १:३०
शुभ	चर	काल	उद्धेग	अमृत	रोग	लाभ	१:३० से ३:००
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्धेग	अमृत	३:०० से ४:३०
उद्धेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	४:३० से ६:००

रात की चौघड़िया

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	समय
शुभ	चर	काल	उद्धेग	अमृत	रोग	लाभ	६:०० से ७:३०
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्धेग	अमृत	७:३० से ९:००
उद्धेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	९:०० से १०:३०
चर	काल	उद्धेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	१०:३० से १२:००
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्धेग	अमृत	रोग	१२:०० से १:३०
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्धेग	१:३० से ३:००
काल	उद्धेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	३:०० से ४:३०
शुभ	चर	काल	उद्धेग	अमृत	रोग	लाभ	४:३० से ६:००

शुभ कार्य और यात्रा करने के लिए यदि मुहूर्त न मिल रहा हो और कोई कार्य करना बहुत आवश्यक हो तो प्रभु को स्मरण कर अच्छी चौघड़िया देखकर कार्य करना चाहिए, एक चौघड़िया डेढ़ घण्टे की होती है और दिन या रात जिस चौघड़िया से प्रारम्भ होती है, उसी चौघड़िया से समाप्त होती है। चौघड़ियाँ से प्रारम्भ होती है, उसी चौघड़िया से समाप्त होती है। चौघड़ियाँ सात होती हैं। उद्धेग, काल और रोग खराब तथा चर, लाभ, अमृत और शुभ अच्छी चौघड़ियाँ होती है। कोई भी कार्य अच्छी चौघड़िया में प्रारम्भ करना चाहिए।

स्नान, संन्ध्या, दान, देव पूजन तथा किसी भी सत्कर्म के प्रारम्भ मे संकल्प करना आवश्यक है। अन्यथा सभी कर्म विफल हो जाते है।

॥ जय गुरुदेव ॥

।। मूल नक्षत्र २०२५-२६ ।।

मूल नक्षत्र :- अश्विन, रेवती, ज्येष्ठा, मूल, अश्लेषा मघा ६ नक्षत्रों की मूल संज्ञा होती है।

।। मूल नक्षत्र मार्च २०२५ ।।

रेवती-अश्विनी	२६ मार्च रात्रि ८:१० से ३१ मार्च को सायं ४:४४ तक।

।। मूल नक्षत्र अप्रैल २०२५ ।।

अश्लेषा-माघ	७ अप्रैल को दिन ६:५५ से ६ अप्रैल को दिन ११:३२ तक।
ज्येष्ठा-मूल	१६ अप्रैल को रात्रि ३:२४ से १६ अप्रैल को प्रातः ६:४४ तक।
रेवती-अश्विनी	२५ अप्रैल को रात्रि ४:१० से २७ अप्रैल को रात्रि १२:५६ तक।

।। मूल नक्षत्र मई २०२५ ।।

अश्लेषा-माघ	४ मई को सायं ५:४४ से ६ मई को सायं ७:१० तक।
ज्येष्ठा-मूल	१४ मई को दिन १०:४५ से १६ मई को दिन २:१८ तक।
रेवती-अश्विनी	२३ मई को दिन १२:२२ से २५ मई को दिन ६:१२ तक।
अश्लेषा-माघ	३१ मई को रात्रि १:३४ से २ जून को रात्रि २:४६ तक।

।। मूल नक्षत्र जून २०२५ ।।

अश्लेषा-माघ	३१ मई को रात्रि १:३४ से २ जून को रात्रि २:४६ तक।
ज्येष्ठा-मूल	१० जून को सायं ६:१२ से १२ जून को रात्रि ६:५३ तक।
रेवती-अश्विनी	१६ जून को रात्रि ८:३५ से २१ जून को सायं ५:२५ तक।
अश्लेषा-माघ	२८ जून को दिन ६:२७ से ३० जून को दिन १०:२४ तक।

।। मूल नक्षत्र जुलाई २०२५ ।।

ज्येष्ठा-मूल	७ जुलाई को रात्रि १:३२ से १० जुलाई को प्रातः ५:२६ तक।
रेवती-अश्विनी	१६ जुलाई को प्रातः ४:५० से १८ जुलाई को रात्रि १:४५ तक।
अश्लेषा-माघ	२५ जुलाई को सायं ५:२४ से २७ जुलाई को सायं ६:१० तक।

।। मूल नक्षत्र अगस्त २०२५ ।।

ज्येष्ठा-मूल	४ अगस्त को दिन ८:५५ से ६ अगस्त को दिन १२:५६ तक।
रेवती-अश्विनी	१३ अगस्त को दिन १२:५६ से १५ अगस्त को दिन ६:५८ तक।
अश्लेषा-माघ	२१ अगस्त को रात्रि १:१६ से २३ अगस्त को रात्रि १:४५ तक।
ज्येष्ठा-मूल	३१ अगस्त को दिन ४:१० से २ सितम्बर को रात्रि ८:२५ तक।

।। मूल नक्षत्र सितम्बर २०२५ ।।

ज्येष्ठा-मूल	३१ अगस्त को दिन ४:१० से २ सितम्बर को रात्रि ८:२५ तक।
रेवती-अशिवनी	६ सितम्बर को रात्रि ६:१० से ११ सितम्बर को सायं ६:१० तक।
अश्लेषा-माघ	१८ सितम्बर को दिन ६:१० से २० सितम्बर को दिन ६:२१ तक।
ज्येष्ठा-मूल	२७ सितम्बर को रात्रि ११:१८ से २६ सितम्बर को रात्रि ३:४४ तक।

।। मूल नक्षत्र अक्टूबर २०२५ ।।

रेवती-अश्विनी	६ अक्टूबर को रात्रि ५:१० से ८ अक्टूबर को रात्रि २:२० तक।
अश्लेषा-मघा	१५ अक्टूबर को सायं ५:०२ से १७ अक्टूबर को सायं ५:०३ तक।
ज्येष्ठा-मूल	२४ अक्टूबर को रा०शे० ६:२८ से २७ अक्टूबर को दिन ११:१० तक।

।। मूल नक्षत्र नवम्बर २०२५ ।।

रेवती-अश्विनी	३ नवम्बर को दिन १:१५ से ५ नवम्बर को दिन १०:३१ तक।
अश्लेषा-मघा	११ नवम्बर को रात्रि १२:५२ से १३ नवम्बर को रात्रि १२:४० तक।
ज्येष्ठा-मूल	२१ नवम्बर को दिन १:३२ से २३ नवम्बर को सायं ६:१५ तक।
रेवती-अशिवनी	३० नवम्बर को रात्रि ६:१२ से २ दिसम्बर को सायं ६:३२ तक।

।। मूल नक्षत्र दिसम्बर २०२५ ।।

रेवती-अश्विनी	३० नवम्बर को रात्रि ६:१२ से २ दिसम्बर को सायं ६:३२ तक।
अश्लेषा-माघ	६ दिसम्बर को दिन ८:४२ से ११ दिसम्बर को दिन ८:१४ तक।
ज्येष्ठा-मूल	१८ दिसम्बर को रात्रि ८:३२ से २० दिसम्बर को रात्रि १:२५ तक।
रेवती-अश्विनी	२७ दिसम्बर को रात्रि ५:१० से २६ दिसम्बर को रात्रि २:३५ तक।

।। मूल नक्षत्र जनवरी २०२६ ।।

अश्लेषा-माघ	५ जनवरी को सायं ४:३२ से ७ जनवरी को दिन ३:५४ तक।
ज्येष्ठा-मूल	१४ जनवरी को रात्रि ३:४२ से १७ जनवरी को दिन ८:३८ तक।
रेवती-अश्विनी	२४ जनवरी को दिन १:०३ से २६ जनवरी को दिन १०:३६ तक।

।। मूल नक्षत्र फरवरी २०२६ ।।

अश्लेषा-माघ	१ फरवरी को रात्रि १२:२४ से ३ फरवरी को रात्रि ११:३२ तक।
ज्येष्ठा-मूल	११ फरवरी को दिन १०:४६ से १३ फरवरी को दिन ३:४७ तक।
रेवती-अश्विनी	२० फरवरी को रात्रि ८:५३ से २२ फरवरी को सायं ६:३७ तक।

।। मूल नक्षत्र मार्च २०२६ ।।

अश्लेषा-माघ	१ मार्च को दिन ८:१८ से ३ मार्च को दिन ७.१८ तक।
ज्येष्ठा-मूल	१० मार्च को सायं ५:५६ से १२ मार्च को रात्रि ११:०५ तक।
रेवती-अश्विनी	१६ मार्च को रात्रि ८:५० से ....

।। पंचक संवत् २०८२ ।। सन् २०२५-२६

धनिष्ठा का उत्तराई, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपदा, उत्तरा भाद्रपदा और रेवती इन पाँच नक्षत्रों की पंचक संज्ञा है। इनमें दक्षिण दिशा की यात्रा, घर का छाना, प्रेतदाह, तृण व काष्ठ का संग्रह तथा चारपाई बुनना वर्जित है। इसमें उक्त क्रियाओं के करने पर पंचगुणित अशुभ फल की प्राप्ति होती है।

पंचक मार्च २०२५	३० मार्च को सायं ६:२४ तक।
पंचक अप्रैल २०२५	२२ अप्रैल को रात्रि ७:५० से २६ अप्रैल को रात्रि २:३४ तक।
पंचक मई २०२५	१९ मई को रात्रि ३:४७ से २४ मई को दिन १०:५० तक।
पंचक जून २०२५	१६ जून को दिन ११:४६ से २० जून को सायं ७:१० तक।
पंचक जुलाई २०२५	१३ जुलाई को रात्रि ७:४२ से १७ जुलाई को रात्रि ३:१८ तक।
पंचक अगस्त २०२५	९ अगस्त की रात्रि ३:३६ से १४ अगस्त को दिन ११:३४ तक।
पंचक सितम्बर २०२५	६ सितम्बर को दिन ११:२६ से १० सितम्बर को रात्रि ७:४२ तक।
पंचक अक्टूबर २०२५	३ अक्टूबर से रात्रि ७:११ से ७ अक्टूबर को रात्रि ३:५० तक।
पंचक अक्टूबर + नबम्बर २०२५	३० अक्टूबर को रात्रि २:५६ से ४ नवम्बर को दिन ११:५९ तक।
पंचक नबम्बर + दिसम्बर २०२५	२७ नवम्बर को दिन १०:३२ से १ दिसम्बर को रात्रि ७:५९ तक।
पंचक दिसम्बर २०२५	२४ दिसम्बर से सायं ६:०८ से २८ दिसम्बर को रात्रि ३:५९ तक।
पंचक जनवरी २०२६	२० जनवरी को रात्रि १:४२ से २५ जनवरी को दिन ११:५७ तक।
पंचक फरवरी २०२६	१७ फरवरी को दिन ९:१४ से २१ फरवरी को रात्रि ७:५५ तक।
पंचक मार्च २०२६	१६ मार्च को सायं ४:४८ से १९ मार्च का समस्त।

नोटः- रक्षाबन्धन, भईयादूज, लक्ष्मीपूजन, नवरात्रि, जप, व्रतानुष्ठान, भूमिपूजन, मकान, वाहन, विवाह, मुण्डन, ग्रहप्रवेश, उपनयन, व्यापार, वधू प्रवेश आदि कार्य पंचक नक्षत्र में शुभ माना जाता है।

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।
नहि सुत्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः।।

अर्थः- सिर्फ इच्छा करने से उसके काम पूरे नही होते, बल्कि व्यक्ति के मेहनत करने से ही उसके काम पूरे होते है।

॥ जय गुरुदेव ॥

।। संवत् २०८२ सूर्य ग्रह राशि परिवर्तन ।।

संवत्सर प्रारम्भ सूर्य मीन राशि गतिचार

दिनांक	राशि	घंटा - मिनट
१३ अप्रैल २०२५	मेष	रात्रि ३ : ३२
१४ मई २०२५	वृष	रात्रि १२ : २४
१५ जून २०२५	मिथुन	दिन ६ : ५५
१६ जुलाई २०२५	कर्क	सायं ५ : ४२
१६ अगस्त २०२५	सिंह	रात्रि १ : ५९
१६ सितम्बर २०२५	कन्या	रात्रि १ : ५७
१७ अक्टूबर २०२५	तुला	दिन १ : ५६
१६ नबम्बर २०२५	वृश्चिक	दिन ७ : ४८
१५ दिसम्बर २०२५	धनु	रात्रि ४ : २६
१४ जनवरी २०२६	मकर	दिन ३ : १८
१२ फरवरी २०२६	कुम्भ	रात्रि ४ : २१
१४ मार्च २०२६	मीन	रात्रि १ : १५

।। संवत् २०८२ मंगल राशि परिवर्तन ।।

संवत्सर आरम्भ मे मिथुना राशि मे

दिनांक	राशि	घंटा - मिनट
२ अप्रैल २०२५	कर्क	रात्रि १:४०
६ जून २०२५	सिंह	रात्रि २:१८
२८ जुलाई २०२५	कन्या	रात्रि ८:१०
१३ सितम्बर २०२५	तुला	रात्रि ६:३२
२७ अक्टूबर २०२५	वृश्चिक	दिन ३:५१
७ दिसम्बर २०२५	धनु	रात्रि ८:२८
१५ जनवरी २०२६	मकर	रात्रि ४:४०
२३ फरवरी २०२६	कुम्भ	दिन १२:०५

॥ जय गुरुदेव ॥

।। संवत् २०८२ बुध राशि प्रवेश ।।

संवत्सर आरम्भ मे मीन राशि मे

दिनांक	राशि	घंटा - मिनट	अदय-अस्त/मार्गी बक्री
६ अप्रैल २०२५	----	प्रातः ६:४०	उदय
७ अप्रैल २०२५	मीन	दिन ४:५०	उदय-मार्गी
६ मई २०२५	मेष	रात्रि ४:१८	उदय-मार्गी
१५ मई २०२५	मेष	रात्रि ५:१५	अस्त-मार्गी
२३ मई २०२५	बृष	दिन १:१०	अस्त-मार्गी
६ जून २०२५	मिथुन	दिन ६:४०	अस्त-मार्गी
८ जून २०२५	मिथुन	रात्रि ८:३२	उदय-मार्गी
२२ जून २०२५	कर्क	रात्रि ६:४१	उदय-मार्गी
१८ जुलाई २०२५	कर्क	दिन १०:२८	उदय-बक्री
१८ जुलाई २०२५	कर्क	रात्रि ८:४०	अस्त-बक्री
१० अगस्त २०२५	कर्क	रात्रि ५:१८	उदय-बक्री
११ अगस्त २०२५	कर्क	दिन १:१०	उदय-मार्गी
३० अगस्त २०२५	सिंह	दिन ४:५१	उदय-मार्गी
२ सितम्बर २०२५	सिंह	रात्रि ५:४०	अस्त-मार्गी
१५ सितम्बर २०२५	कन्या	दिन ११:१८	अस्त-मार्गी
२ अक्टूबर २०२५	तुला	रात्रि ५:४०	अस्त-मार्गी
६ अक्टूबर २०२५	तुला	सायं ७:१५	उदय-मार्गी
२४ अक्टूबर २०२५	वृश्चिक	दिन १२:५०	उदय-मार्गी
९ नवम्बर २०२५	वृश्चिक	रात्रि १२:४०	उदय-बर्की
१२ नबम्बर २०२५	वृश्चिक	सायं ६:५१	अस्त-बर्की
२३ नबम्बर २०२५	तुला	रात्रि ८:१८	अस्त-बर्की
२६ नबम्बर २०२५	तुला	प्रातः ७:१०	उदय-बर्की
२९ नबम्बर २०२५	तुला	रात्रि ११:१८	उदय-मार्गी
६ दिसम्बर २०२५	वृश्चिक	रात्रि ८:५५	उदय-मार्गी
२८ दिसम्बर २०२५	धनु	प्रातः ७:४०	उदय-मार्गी
२९ दिसम्बर २०२५	धनु	रात्रि १:४०	अस्त-मार्गी
१७ जनवरी २०२६	मकर	दिन १०:३२	अस्त-मार्गी
३ फरवरी २०२६	कुम्भ	रात्रि ६:५९	अस्त-मार्गी

दिनांक	राशि	घंटा - मिनट	अदय-अस्त/मार्गी बक्री
८ फरवरी २०२६	कुम्भ	सायं ६:२७	उदय-मार्गी
२६ फरवरी २०२६	कुम्भ	दिन १२:२८	उदय-बक्री
२७ फरवरी २०२६	कुम्भ	रात्रि ४:५६	अस्त-बक्री
१४ मार्च २०२६	कुम्भ	दिन १२:५०	उदय-बक्री

।।संवत् २०८२ गुरु राशि प्रवेश।।

संवत्सर आरम्भ मे बृष राशि में गतिचार

दिनांक	राशि	घंटा - मिनट	अदय-अस्त/मार्गी बक्री
१४ मई २०२५	मिथुन	रात्रि १०:४५	उदय-मार्गी
१२ जून २०२५	मिथुन	रात्रि ११:५०	अस्त-मार्गी
५ जुलाई २०२५	मिथुन	प्रातः ६:४०	उदय-मार्गी
१८ अक्टूबर २०२५	कर्क	सायं ६:५५	उदय-मार्गी
११ नबम्बर २०२५	कर्क	रात्रि ६:५६	उदय-बक्री
५ दिसम्बर २०२५	मिथुन	दिन ५:३४	उदय-बक्री
११ मार्च २०२६	मिथुन	दिन ६:१२	उदय-मार्गी

।।संवत् २०८२ शुक्र राशि प्रवेश

संवत्सर आरम्भ मे कुम्भ राशि में गतिचार

दिनांक	राशि	घंटा - मिनट	अदय-अस्त/मार्गी बक्री
१३ अप्रैल २०२५	मीन	दिन ६:४२	उदय-मार्गी
३१ मई २०२५	मेष	दिन ११:४२	उदय-मार्गी
२९ जून २०२५	बृष	दिन २:२०	उदय-मार्गी
२६ जुलाई २०२५	मिथुन	दिन ६:१०	उदय-मार्गी
२० अगस्त २०२५	कर्क	रात्रि १:३०	उदय-मार्गी
१४ सितम्बर २०२५	सिंह	रात्रि १२:२६	उदय-मार्गी
६ अक्टूबर २०२५	कन्या	दिन १०:५७	उदय-मार्गी
२ नबम्बर २०२५	तुला	दिन १:२४	उदय-मार्गी
२६ नबम्बर २०२५	वृश्चिक	दिन ११:३२	उदय-मार्गी
१५ दिसम्बर २०२५	वृश्चिक	दिन ३:१०	अस्त-मार्गी
२० दिसम्बर २०२५	धनु	दिन ७:५५	अस्त-मार्गी

दिनांक	राशि	घंटा - मिनट	अदय-अस्त/मार्गी बक्री
१२ जनवरी २०२६	मकर	रात्रि ५:१०	अस्त-मार्गी
२ फरवरी २०२६	मकर	प्रातः ७:२०	उदय-मार्गी
५ फरवरी २०२६	कुम्भ	रात्रि २:२१	उदय-मार्गी
१ मार्च २०२६	मीन	रात्रि १:१०	उदय-मार्गी

।। संवत् २०८२ शनि राशि प्रवेश ।।

संवत्सर आरम्भ मे शनि मीन राशि गतिचार

दिनांक	राशि	घंटा - मिनट	वक्री / मार्गी
१३ जुलाई २०२५	मीन	दिन ६:४८	बक्री
२८ नबम्बर २०२५	मीन	दिन ६:५५	मार्गी
८ मार्च २०२६	मीन	दिन ६:४४	मार्गी-अस्त

नोटः- यह विक्रम वर्ष शनि मीन राशि गतिचार में प्रभावशाली रहेगा नक्षत्र चार नियामक अनुसार पूर्वाभाद्रपद और उत्तराभादपद नक्षत्र के मध्य गतिचार चरितार्थ रहेगा।

।। संवत् २०८२ राहु केतु राशि परिवर्तन ।।

नव संवतसर आरम्भ से राहु मीन एवं केतु कन्या राशि मे रहेगा। विषयक मान्य रहेगा।

दिनांक	राशि	घंटा - मिनट	
१८ मई २०२५	कुम्भ	सायं ५:२४	राहु
१८ मई २०२५	सिंह	सायं ५:२४	केतु

।। शुभ विवाह मुहूर्त संवत् २०८२ ।।

नोट :- विस्तार से आर्चाय (पंडित जी) के सर्म्पक से निर्णय ले।

अप्रैल २०२५	१४, १५, १६, १७, १८, १९, २०, २१, २५, २६, २९, ३०
मई २०२५	१, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५, १६, १७ १८, २२, २३, २४, २८
जून २०२५	१, २, ३, ४, ५, ७, ८
नबम्बर २०२५	१८, १९, २१, २२, २३, २४, २५, २९, ३०
दिसम्बर २०२५	१, ४, ५, ६
फरवरी २०२६	४, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १४, १५, १९, २०, २१, २४, २५, २६
मार्च २०२६	२, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १४

।। वर-वरण कन्या वरणं मुहूर्त संवत् २०८२ ।।

(वरिक्षा-तिलक एवं गोद भराई मुहूर्त)

नोट :- विवाह के सभी मुहूर्त वर-वरण कन्या वरण के लिए मान्य है इसके अतिरिक्त भी कुछ मुहूर्त दिये जा रहे है।

अप्रैल २०२५	१४, १८, २०, २४, २५, ३०
मई २०२५	१, ७, ८, ६, १४, १८, १६, २२, २३, २८
जून २०२५	२, ५, ६, ८
नबम्बर २०२५	२१, २३, २४, २६, ३०
दिसम्बर २०२५	१, ४, ५
फरवरी २०२६	६, ८, ११, १२, १३, १५, १६, २०, २६
मार्च २०२६	४, ५, ८, ६, १३

।। शुद्ध चूडा करण (मुण्डन मुहूर्त संवत् २०८२) ।।

अप्रैल २०२५	१४, १७, २३, २४
मई २०२५	१, ६, १५, १६, २३, २८
जून २०२५	५, ६
फरवरी २०२६	६, ११, १२, १८, २६, २७

।। शुद्ध कर्णवेध (कंछेदन (नासिका छेदम) मुहूर्त संवत् २०८२) ।।

अप्रैल २०२५	१४
मई २०२५	१, २, ६, १४, १६, २३, २८, २६
जून २०२५	५
नबम्बर २०२५	२१, २६, २७
दिसम्बर २०२५	१
फरवरी २०२६	६, ११, २६, २७

।। शुद्ध उपनयन (जनेऊ) मुहूर्त संवत् २०८२ ।।

मार्च २०२५	३१
अप्रैल २०२५	२, ७, ६, १४, १८, २३, २४, ३०
मई २०२५	७, ८, ६, १४, २२, २३, २८, २६
जून २०२५	५, ६, ८
फरवरी २०२६	६, ११, १८, १६, २०, २२, २६, २७

नोटः- आवश्यकतानुसार तीर्थ स्थान में किसी यज्ञ पर्व विशेष के अवसर पर चन्द्र बल देखकर बिना उपनयन मुहूर्त के भी यज्ञोपवीत संस्कार किया जा सकता है। वंश परम्परा (कुलाचार) वेद शाखानुसार उपाकर्म के दिन श्रावणी पूर्णिमादि मे भी लग्न शुद्धि देखकर यज्ञोपवीत संस्कार कर सकते है।

नोटः- पुराने मकान को तोडकर बने नये घर तथा फ्लैट इत्यादि मे प्रवेश के लिए नूतन ग्रह प्रवेश के लिए नूतन ग्रह प्रवेश के मुर्हूत तो शुभ है ही साथ मे श्रावण, कार्तिक, मार्गशीर्ष मे जीर्णादि ग्रह प्रवेश के मुर्हूत मे प्रवेश किया जा सकता है।

।। जीर्णादि ग्रह प्रवेश मुहूर्त संवत् २०८२ ।।

जुलाई २०२५	२१, ३०, ३१,
अगस्त २०२५	१
अक्टूबर २०२५	१५, १८, ३१
नवम्बर २०२५	३, १५, १७, २६, २७, २९
दिसम्बर २०२५	१

।। शुद्ध ग्रह आरम्भ मुहूर्त संवत् २०८२ ।।

अप्रैल २०२५	१४, २४
मई २०२५	७, ८, ९, १०, १४
जून २०२५	६, ७
अगस्त २०२५	१, ९, ११
नबम्बर २०२५	२७, २९
दिसम्बर २०२५	१, ४
फरवरी २०२६	२६, २८

।। शुद्ध नूतन ग्रह प्रवेश मुहूर्त संवत् २०८२ ।।

अप्रैल २०२५	२५
मई २०२५	७, ८, ९, १०, २२, २३
जून २०२५	६, ७
फरवरी २०२६	११, १४, २६, २८

।। नूतन उद्योग, वाहन, क्रय (नया काम) मुहूर्त संवत् २०८२ ।।

(षोडष संस्कारो को छोड़कर नूतन उद्योग-व्यापार वाहन क्रय इत्यादि के लिऐ)

मार्च २०२५	३०
अप्रैल २०२५	६, ७, १६, २१, ३०
मई २०२५	४, १४, २३
जून २०२५	२०
जुलाई २०२५	२१, २४
अगस्त २०२५	१८, २१
सितम्बर २०२५	१५, १८
अक्टूबर २०२५	२
नबम्बर २०२५	१६
दिसम्बर २०२५	१४, १७
जनवरी २०२६	४, १४, १६
फरवरी २०२६	१, ११
मार्च २०२६	१

नोटः- कार-बस-ट्रक, मोटर साइकिल, वायुयान आदि वाहन लेने पर अपने देव स्थान मे या शक्ति स्थान में दर्शनार्थ अवश्य जाना चाहिए। कुल गुरु आचार्य से पूजा करते समय सिन्दूर से स्वस्तिक चिन्ह शुभ लाभ एवं मारुति यंत्र बनवाकर रखने वालो को वाहन से उत्पन्न लाभ होता है।

।। साढ़े तीन स्वयं सिद्ध मुहूर्त ।।

चैत्र शुक्ल पक्ष (प्रतिपदा) वैशाख शुक्ल पक्ष (अक्षय तृतीय)
अश्विन शुक्ल पक्ष (विजय दशमी) 'दशहरा' कार्तिक शुक्ल पक्ष (प्रतिपदा) 'दीपावली'

।। प्रदोष बेला चार स्वयं सिद्ध मुहूर्त ।।

इनमें किसी भी कार्य को करने के लिए पंचांग शुद्धि देखने को आवश्यकता नहीं है। इनमें से तीन मुहूर्त पूर्ण बली तथा चौथा अर्धबली होने से इन्हें साढ़े तीन स्वयं सिद्ध मुहूर्त कहते हैं।

।। लोक प्रसिद्ध मुहूर्त ।।

आषाढ़ शुक्ल पक्ष नवमी, कर्तिक शुक्ल पक्ष एकादशी, माघ शुक्ल पक्ष बसन्त पंचमी फाल्गुन शुक्ल पक्ष द्वितीया (फुलरिया) ये मुहूर्त लोक व्यवहार में सिद्ध माने जाते हैं।

नोट- कार्तिक शुक्ल पक्ष प्रतिपदा को उत्तर वासी मान्यता नहीं है। ये प्रत्येक क्रम में बड़ी श्रद्धा के साथ अपनाये जाते हैं। इन्हें अनपूछा मुहूर्त कहते हैं।

३० मार्च २०२५ से १२ अप्रैल २०२५ तक " चैत्र शुक्ल पक्ष " श्री सूर्योत्तरायण-वसन्त ऋतुः

दिनांक वार	तिथि समय समाप्ति काल में	नक्षत्र समय समाप्ति काल में	चन्द्रमा समय समाप्ति काल में	विवरण
३०.३.२५ रविवार	प्रतिपदा दिन २:२५	रेवती सायं ६:२५	मीन सायं ६:२५	बसन्त नवरात्र प्रारम्भ-कलश स्थापन ध्वजा रोपण, नव संवतसर २०८२ कालयुक्त नाम संकल्प आदि में प्रारम्भ शैलपुत्री दर्शन। पंचक समाप्ति सायं ६:२५।
३१.३.२५ सोमवार	द्वितीया दिन ११:५६	अश्विनी सायं ४:४५	मेष	ब्रह्मचारिणी देवी दर्शन, मत्स्यावतार (अपराह्न)।
१.४.२५ मंगलवार	तृतीया दिन ८:३६	भरणी दिन ३:०८	मेष रात्रि ८:४२	चन्द्रा घण्टा देवी दर्शन – वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत भद्रा। रात्रि ८:२८ से। सौभाग्य सुन्दरी व्रत। सर्वार्थ सिद्धि योग दिन ३:१० से।
२.४.२५ बुधवार	चतुर्थी/पंचमी प्रातः ७:१८ ५:०८	कृतिका दिन १:३५	वृष	कुष्माण्डा-स्कन्द माता दर्शन। भद्रा दिन ७:१६ तक। स्वार्थ सिद्धि योग समस्त श्रीराम राज्य महोत्सव।
३.४.२५ गुरुवार	षष्ठी रात्रि ३:१०	रोहिणी दिन १२:१०	वृष रात्रि ११:३६	कात्यायनी देवी दर्शन। श्री सूर्य षष्ठी व्रत बिहार।
४.४.२५ शुक्रवार	सप्तमी रात्रि १:३२	मृगशिरा दिन ११:०५	मिथुन	भद्र काली देवी दर्शन। भद्रा रात्रि १:३२ से। अन्नपूर्ण परिक्रमा रात्रि १:३२ से। ओली प्रारम्भ (जैन)
५.४.२५ शनिवार	अष्टमी रात्रि १२:१६	आर्द्रा दिन १०:१८	मिथुन रात्रि ३:५६	महाअष्टमी व्रत। महानिशा पूजा। भद्रा दिन १२:५२ तक। श्री अन्नपूर्णा परिक्रमा रात्रि १२:१५ तक।
६.४.२५ रविवार	नवमी रात्रि ११:२८	पुनर्वसु दिन ८:५२	कर्क	श्री राम नवमी व्रत (सबका) कर्क लग्न मे श्रीराम जन्म महोत्सव। सर्वार्थ सिद्धि योग दिन ८:५२ से।
७.४.२५ सोमवार	दशमी रात्रि ११:८	पुष्य दिन ८:५५	कर्क	नवरात्र व्रत पारणा। सर्वार्थ सिद्धि योग दिन ८:५५ तक।
८.४.२५ मंगलवार	एकादशी रात्रि ११:१८	अश्लेषा दिन १०:२६	कर्क दिन १०:२८	कामदा एकादशी व्रत सबका। भद्रा दिन ११:१० से रात्रि ११:१४ तक। सर्वार्थ सिद्धि योग दिन १०:२८ तक।
९.४.२५ बुधवार	द्वादशी रात्रि ११:५८	मघा दिन ११:३३	सिंह	मदन द्वादशी व्रत।
१०.४.२५ गुरुवार	त्रयोदशी रात्रि १:०८	पूर्वा फाल्गुनी दिन १:०८	सिंह रात्रि ७:३५	प्रदोष व्रत। श्री महावीर जयंती (जैन)
११.४.२५ शुक्रवार	चतुर्दशी रात्रि २:४५	उत्तरा फाल्गुनी दिन ३:०८	कन्या	भद्रा रात्रि २:४५ से।
१२.४.२५ शनिवार	पूर्णिमा रात्रि ४:३८	हस्त सायं ५:२८	कन्या	भद्रा दिन ३:४० तक। स्नान-दान व्रत की पूर्णिमा। श्री हनुमज्जयन्ती स्नान-दान-यम नियम का आरम्भ।

॥ जय गुरुदेव ॥

१३ अप्रैल २०२५ से २७ अप्रैल २०२५ तक " **वैशाख कृष्ण पक्ष** " श्री सूर्योत्तरायण-वसन्त ऋतुः

दिनांक वार	तिथि समय समाप्ति काल में	नक्षत्र समय समाप्ति काल में	चन्द्रमा समय समाप्ति काल में	विवरण
१३.४.२५ रविवार	प्रतिपदा समस्त	चित्रा रात्रि ७:५८	कन्या प्रातः ६:४०	फसली वैशाख मासारम्भ। प्रतिदिन पीपल वृक्ष में जल दान। मेष राशि का सूर्य। खरमास समाप्ति। संक्रान्ति का पुष्य काल दूसरे दिन।
१४.४.२५ सोमवार	प्रतिपदा प्रातः ६:४२	स्वाती रात्रि १०:३५	तुला	मेष संक्रान्ति का पुष्य काल। डा० भीमराव अम्बेडकर जयन्ती।
१५.४.२५ मंगलवार	द्वितीया दिन ८:४५	विशाखा रात्रि १:१०	तुला सायं ६:२६	भद्रा रात्रि ६:३७ से। मृत्युबाण प्रारम्भ प्रातः ६:१२ से।
१६.४.२५ बुधवार	तृतीया दिन १०:३८	अनुराधा रात्रि ३:२५	वृश्चिक	भद्रादिन १०:३७ तक। संकष्टी श्री गणेश चतुर्थी व्रत। चन्द्रोदय रात्रि ६:३८। सर्वार्थ तथा अमृत सिद्धि योग रात्रि ३:२४ तक। मृत्युवाण समाप्त।
१७.४.२५ गुरुवार	चतुर्थी दिन १२:१२	ज्येष्ठ रात्रि ५:१८	वृश्चिक रात्रि ५:१५	रिक्तातिथि।
१८.४.२५ शुक्रवार	पंचमी दिन १:२२	मूल समस्त	धनु	शुक्र पंचमी व्रत।
१९.४.२५ शनिवार	षष्ठी दिन २:१०	मूल प्रातः ६:४४	धनु	भद्रा दिन २:०५ से रात्रि २:१० तक।
२०.४.२५ राविवार	सप्तमी दिन २:११	पूर्वाषाढा दिन ७:४२	धनु दिन १:४६	गुरु अर्जुन-देवजयन्ती। भानु सत्तमी सर्वार्थ सिद्धि योग।
२१.४.२५ सोमवार	अष्टमी दिन १:५२	उत्तराषाढा दिन ८:१०	मकर	श्री शीतला अष्टमी व्रत। आज वासी भोजन करना चाहिए।
२२.४.२५ मंगलवार	नवमी दिन १२:५६	श्रवण दिन ८:०८	मकर रात्रि ७:५०	पंचक प्रारम्भ रात्रि ७:५०। भद्रा रात्रि १२:२२ से।
२३.४.२५ बुधवार	दशमी दिन ११:४३	धनिष्ठा दिन ७:३५	कुम्भ	भद्रा दिन ११:४२ तक। बाबू कुँवर सिंह जयन्ती (बिहार)
२४.४.२५ गुरुवार	एकादशी दिन १०:०८	शतभिषा/पूर्वा भाद्रपद प्रातः ६:४५ ५:३६	कुम्भ रात्रि ११:५३	वरुथिनी एकादसी व्रत (सबका) श्री बल्लभाचार्य जयन्ती।
२५.४.२५ शुक्रवार	द्वादशी दिन ८:१०	उत्तरा भाद्रपद रात्रि ४:१२	मीन	प्रदोष व्रत। सर्वार्थ तथा अमृत सिद्धि योग रात्रि ४:१० से।
२६.४.२५ शनिवार	त्रयोदशी/चतुर्दशी प्रातः ५:५८ ३:३४	रेवती रात्रि २:३५	मीन रात्रि २:३४	भद्रा प्रातः ५:५५ से सायं ४:४५ तक। मास-शिव रात्रि व्रत। पंचक समाप्ति रात्रि २:३५।
२७.४.२५ रविवार	अमावस्या रात्रि १:१०	अश्वनी रात्रि १२:५८	मेष	स्नान दान श्राद्ध की अमावस्या सर्वार्थ सिद्धि योग रात्रि १२:५६ तक।

॥ जय गुरुदेव ॥

२८ अप्रैल २०२५ से १२ मई २०२५ तक

श्री सूर्योत्तरायण-वसन्त ऋतुः

" वैशाख शुक्ल पक्ष "

दिनांक वार	तिथि समय समाप्ति काल में	नक्षत्र समय समाप्ति काल में	चन्द्रमा समय समाप्ति काल में	विवरण
२८.४.२५ सोमवार	प्रतिपदा रात्रि १०:४२	भरणी रात्रि ११:१८	मेष रात्रि ४:५२	देव दामोदर तिथि (असम)।
२९.४.२५ मंगलवार	द्वितीय रात्रि ८:२०	कृतिका रात्रि ९:४२	वृष	श्री परशुराम जयन्ती (प्रदोष मे) सर्वार्थ सिद्धि योग रात्रि ९:४२ तक।
३०.४.२५ बुधवार	तृतीय सायं ६:१०	रोहिणी रात्रि ८:१८	वृष	अक्षय तृतीया व्रत। समुद्र स्नान एवं दान श्री बदरी केदार यात्रा। सवार्थ सिद्धि योग समस्त। भद्रा रात्रि ५:१० से।
१.५.२५ गुरुवार	चतुर्थी दिन ४:१०	मृगशिरा सायं ७:०६	वृष दिन ७:४२	वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत। भद्रा दिन ४:१० तक।
२.५.२५ शुक्रवार	पंचमी दिन २:२६	आर्द्रा सायं ६:१८	मिथुन	आद्य जगद गुरु शंकराचार्य जयन्ती। सर्वार्थ सिद्धि योग सायं ६:१८ से।
३.५.२५ शनिवार	षष्ठी दिन १:१४	पुनर्वसु सायं ५:४७	मिथुन दिन ११:५३	श्री रामानुजाचार्य जयन्ती। श्री गंगा सत्तमी (मध्यान्ह व्यापिनी)
४.५.२५ रविवार	सप्तमी दिन १२:२२	पुष्य सायं ५:४५	कर्क	भानु सत्तमी। भद्रा दिन १२:२० से रात्रि १२:१० तक। सर्वार्थ सिद्धि योग सायं ५:४४ तक।
५.५.२५ सोमवार	अष्टमी दिन ११:५८	अश्लेषा सायं ४:११	कर्क सायं ६:१०	रवियोग सायं ६:१० से।
६.५.२५ मंगलवार	नवमी दिन १२:०६	मघा सायं ७:०६	सिंह	श्री सीता नवमी। जानकी जन्मोत्सव।
७.५.२५ बुधवार	दशमी दिन १०:३८	पूर्वाफाल्गुनी रात्रि ८:३३	सिंह रात्रि ३:०५	गुरु रविन्द्रनाथ टैगोर जयन्ती। भद्रा रात्रि ९:२० से।
८.५.२५ गुरुवार	एकादशी दिन १:५४	उत्तराफाल्गुनी रात्रि १०:२८	कन्या	श्री मोहिनी एकादशी व्रत सबका। भद्रा दिन १:४५ तक।
९.५.२५ शुक्रवार	द्वादशी दिन ३:२८	हस्त रात्रि १२:४२	कन्या	प्रदोष व्रत। परशुराम द्वादशी।
१०.५.२५ शनिवार	त्रयोदशी सायं ५:१८	चित्रा रात्रि ३:१५	कन्या दिन १:५८	सर्वार्थ सिद्धि योग रात्रि ३:१५ से।
११.५.२५ रविवार	चतुर्दशी रात्रि ७:२४	स्वाती समस्त	तुला	श्री नृसिंह चतुर्दशी व्रत। नृसिंह अवतार भद्रा रात्रि ७:२२ से।
१२.५.२५ सोमवार	पूर्णिमा रात्रि ९:२५	स्वाती प्रातः ५:५२	तुला रात्रि १:४६	स्नान-दान व्रत की पूर्णिमा। बुद्ध पूर्णिमा। कूर्म जयन्ती। भद्रा दिन ८:२४ तक।

॥ जय गुरुदेव ॥

१३ मई २०२५ से २७ मई २०२५ तक

" ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष "

श्री सूर्योत्तरायण- वसन्त ऋतुः

दिनांक वार	तिथि समय समाप्ति काल में	नक्षत्र समय समाप्ति काल में	चन्द्रमा समय समाप्ति काल में	विवरण
१३.५.२५ मंगलवार	प्रतिपदा रात्रि ११:१५	विशाखा दिन ८:२५	वृश्चिक	आटा से ब्रह्म की मूर्ती बनाकर पूजन करने से विशेष लाभ प्राप्त होता है। माँ आनन्दमयी जयन्ती। बडका मंगल।
१४.५.२५ बुधवार	द्वितीया रात्रि १२:४८	अनुराधा दिन १०:४६	वृश्चिक	नारद जयन्ती। बृष राशि का सूर्य रात्रि ४:१० गोदावरी स्नान-ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ। सर्वार्थ तथा अमृत सिद्धि योग दिन १०:४५ तक।
१५.५.२५ गुरुवार	तृतीया रात्रि १:५५	ज्येष्ठा दिन १२:४४	वृश्चिक दिन १२:४४	भद्रा दिन १:२२ से रात्रि १:५५ तक।
१६.५.२५ शुक्रवार	चतुर्थी रात्रि २:३८	मूल दिन २:१८	धनु	संकष्टी श्री गणेश चतुर्थी व्रत। चन्द्रोदय रात्रि १०:१६।
१७.५.२५ शनिवार	पंचमी रात्रि २:३५	पूर्वाषाढ़ा दिन ३:२२	धनु रात्रि ६:३१	यायी जय योग दिन ३:११ से रात्रि २:४४ तक।
१८.५.२५ रविवार	षष्ठी रात्रि २:२५	उत्तराषाढा दिन ३:५५	मकर	सर्वार्थ सिद्धि योग दिन ३:५५ तक। भद्रा रात्रि २:२४ से।
१९.५.२५ सोमवार	सप्तमी रात्रि १:३३	श्रवण दिन ३:५८	मकर रात्रि ३:४७	भद्रा दिन १:५५ तक। पंचक प्रारम्भ रात्रि ३:४७। सर्वार्थ सिद्धि योग दिन ३:५८ तक।
२०.५.२५ मंगलवार	अष्टमी रात्रि १२:१३	धनिष्ठा दिन ३:३६	कुम्भ	श्री शीतला अष्टमी व्रत। आज वासी भोजन खाना चाहिए। बडका मंगल
२१.५.२५ बुधवार	नवमी रात्रि १०:३५	शतभिषा दिन २:५२	कुम्भ	बुध नवमी व्रत।
२२.५.२५ गुरुवार	दशमी सायं ८:३४	पूर्वाभाद्रपद दिन १:४५	कुम्भ दिन ७:५६	भद्रा दिन ६:३४ से रात्रि ८:३५ तक।
२३.५.२५ शुक्रवार	एकादशी सायं ६:२२	उत्तराभाद्रपद दिन १२:२४	मीन	अचला दकादशी व्रत सबका। सर्वार्थ तथा अमृत सिद्धि योग दिन १२:११ से।
२४.५.२५ शनिवार	द्वादशी दिन ३:५६	रेवती दिन १०:४८	मीन दिन १०:४८	शनि प्रदोष व्रत। वट सावित्र व्रतारम्भ (तीन दिनो तक) पंचक समाप्ति दिन १०:४८।
२५.५.२५ रविवार	त्रयोदशी दिन १:३२	अश्विनी दिन ६:१२	मेष	वट सावित्री व्रत द्वितीय दिनम। मासशिव रात्रि व्रत। भद्रा दिन १:३२ से रात्रि १२:१८ तक सर्वार्थ सिद्धि योग दिन ६:१२ तक।
२६.५.२५ सोमवार	चतुर्दशी दिन १०:५६	भरणी दिन७:३१	मेष दिन १:०८	श्राद्ध की अमावस्या। वट सावित्री व्रत (बरगदाई) स्त्रियो के लिए आवश्यक
२७.५.२५ मंगलवार	अमावस्या दिन ८:४२	कृतिका/रोहिणी प्रातः ५:५५ ४:२८	वृष	स्नान-दान की अमावस्या। आज गंगा स्नान करने से करोडो सूर्य ग्रहण के समान फल मिलता है। बडका मंगल

" ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष "

दिनांक वार	तिथि समय समाप्ति काल में	नक्षत्र समय समाप्ति काल में	चन्द्रमा समय समाप्ति काल में	विवरण
२८.५.२५ बुधवार	प्रतिपदा/द्वितीया प्रातः ६:२७ ४:३०	मृगशिरा रात्रि ३:१४	वृष दिन ३:५०	दशाश्वमेध स्नान प्रारम्भ। १० दिनो तक। गंगा स्त्रोत का नित्य पाठ। करवीर व्रत। सर्वार्थ सिद्धि योग रात्रि ३:१२ तक।
२९.५.२५ गुरुवार	तृतीया रात्रि २:४४	आर्द्रा रात्रि २:२०	मिथुन	महाराणा प्रताप जयन्ती (राजस्थान) रम्भा व्रत। सर्वार्थ सिद्धि योग रात्रि २:२० से।
३०.५.२५ शुक्रवार	चतुर्थी रात्रि १:२६	पुनर्वसु रात्रि १:४४	मिथुन रात्रि ७:५४	वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत। भद्रा दिन २:१० से रात्रि १:२५ तक। गुरु अर्जुन देव शहीद दिवस। सर्वार्थ सिद्धि योग रात्रि १:४४ तक।
३१.५.२५ शनिवार	पंचमी रात्रि १२:३१	पुष्य रात्रि १:३५	कर्क	रवियोग रात्रि १:३४ से।
१.६.२५ रविवार	षष्टी रात्रि १२:०५	अश्लेषा रात्रि १:५५	कर्क रात्रि १:५४	स्कन्द षष्ठी व्रत।
२.६.२५ सोमवार	सप्तमी रात्रि १२:१२	मघा रात्रि २:४६	सिंह	भद्रा रात्रि १२:११ से।
३.६.२५ मंगलवार	अष्टमी रात्रि १२:४७	पूर्वा फाल्गुनी रात्रि ४:१०	सिंह	भद्रा दिन १२:३१ तक। शुक्ला देवी का पूजन। बडका मंगल
४.६.२५ बुधवार	नवमी रात्रि १:५२	उत्तरा फाल्गुनी समस्त	सिंह दिन १०:३४	नवमी मे उपवास पूर्वक शुक्ला देवी का पूजन।
५.६.२५ गुरुवार	दशमी रात्रि ३:२६	उत्तरा फाल्गुनी प्रातः ५:५५	कन्या	श्री गंगा दशहरा (गंगा अवतरण) रामेश्वर प्रतिष्ठा दिन गंगा स्त्रोत पाठ
६.६.२५ शुक्रवार	एकादशी रात्रि ५:१४	हस्त दिन ८:१०	कन्या रात्रि ६:२४	निर्जला एकादशी व्रत। स्मर्तो का। जल कुम्भ दान। भद्रा दिन ४:१८ से रात्रि शे० ५:१२ तक।
७.६.२५ शनिवार	द्वादशी समस्त	चित्रा दिन १०:३५	तुला	वैष्णवो का एकादशी व्रत। कूर्म जयन्ती सर्वार्थ सिद्धि योग दिन १०:३५ से।
८.६.२५ रविवार	द्वादशी प्रातः ७:१२	स्वाती दिन १:१२	तुला	प्रदोष व्रत। गुरु वार्द्धक्य आरम्भ सायं ७:१०।
९.६.२५ सोमवार	त्रयोदशी दिन ९:१५	विशाखा दिन ३:४८	तुला दिन ९:१०	सर्वार्थ सिद्धि योग दिन ३:४८ से।
१०.६.२५ मंगलवार	चतुर्दशी दिन ११:०८	अनुराधा सायं ६:१२	वृश्चिक	व्रत की पूर्णिमा। भद्रा दिन १०:५९ से रात्रि ११:५२ तक। (बडका मंगल)
११.६.२५ बुधवार	पूर्णिमा दिन १२:४०	ज्येष्ठा रात्रि ८:१८	वृश्चिक रात्रि ८:१६	स्नान-दान की पूर्णिमा। संत कबीर जयन्ती। गुरु का अस्त पश्चिम मे सायं ७:१०।

नोटः- दिनाकं ११ जून पूर्णिमा बुधवार - गुरु पश्चिम दिशा में अस्त।

॥ जय गुरुदेव ॥

१२ जून २०२५ से २५ जून २०२५ तक

श्री सूर्योत्तरायण- ग्रीष्म ऋतुः

" आषाढ कृष्ण पक्ष "

दिनांक वार	तिथि समय समाप्ति काल में	नक्षत्र समय समाप्ति काल में	चन्द्रमा समय समाप्ति काल में	विवरण
१२.६.२५ गुरुवार	प्रतिपदा दिन १:४५	मूल रात्रि ६:५४	धनु	गुरु हर गोविन्द सिंह जयंती।
१३.६.२५ शुक्रवार	द्वितीया दिन २:२७	पूर्वाषाढा रात्रि ११:०५	धनु रा०शे० ५:१४	भद्रा रात्रि २:३२ से।
१४.६.२५ शनिवार	तृतीया दिन २:३६	उत्तरा षाढा रात्रि ११:४५	मकर	संकष्टी श्री गणेश चतुर्थी व्रत। चन्द्रोदय रात्रि ७:४८। भद्रा दिन २:३६ तक। सर्वार्थ सिद्धि योग दिन २:१० से।
१५.६.२५ रविवार	चतुर्थी दिन २:१४	श्रवण रात्रि ११:५५	मकर	मिथुन राशि का सूर्य दिन १:५०। संक्रान्ति पुष्य काल घंटे ६:२४ मिनट बाद-गौदान मंदाकिनी स्नान।
१६.६.२५ सोमवार	पंचमी दिन १:२८	धनिष्ठा रात्रि ११:३८	मकर दिन ११:४६	पंचक प्रारम्भ दिन ११:४६।
१७.६.२५ मंगलवार	षष्ठी दिन १२:१०	शतभिषा रात्रि १०:५५	कुम्भ	भद्रा दिन १२:१० से रात्रि ११:१८ तक।
१८.६.२५ बुधवार	सप्तमी दिन १०:३४	पूर्वाभाद्रपद रात्रि ६:५३	कुम्भ दिन ४:१०	कालाष्टमी (सायं काल मे)
१९.६.२५ गुरुवार	अष्टमी दिन ८:२६	उत्तरा भाद्रपद रात्रि ८:३५	मीन	श्री शीतला अष्टमी व्रत। आज वासी भोजन करना चाहिए। सर्वार्थ सिद्धि योग रात्रि ८:३५ से।
२०.६.२५ शुक्रवार	नवमी/दशमी प्रातः ६:१५ ३:५२	रेवती सायं ७:१०	मीन सायं ७:०८	पंचक समाप्ति सायं ७:१०। भद्रा सायं ५:०८ से रात्रि ३:५२ तक। सर्वार्थ सिद्धि योग समस्त। अमृत सिद्धि योग सायं ६:१० तक।
२१.६.२५ शनिवार	एकादशी रात्रि १:२८	अश्विनी सायं ५:२८	मेष	योगिनी एकादशी व्रत स्मार्तोका। श्री देवराहा बाबा पुष्य तिथि।
२२.६.२५ रविवार	द्वादशी रात्रि १०:५६	भरणी दिन ३:४५	मेष रात्रि ६:२१	वैष्णवों का एकादशी व्रत।
२३.६.२५ सोमवार	त्रयोदशी रात्रि ८:३१	कृतिका दिन २:१०	वृष	सोम प्रदोष व्रत। मास शिवरात्रि व्रत। भद्रा रात्रि ८:३१ से। सर्वार्थ सिद्धि योग दिन २:१० से।
२४.६.२५ मंगलवार	चतुर्दशी सायं ६:१८	रोहिणी दिन १२:३८	वृष रात्रि ११:५६	भद्रा दिन ७:२५ तक।
२५.६.२५ बुधवार	अमावस्या दिन ४:१८	मृगशिरा दिन ११:२३	मिथुन	स्नान-दान श्राद्ध की अमावस्या। सर्वार्थ सिद्धि योग दिन ११:२१ तक।

नोट - इस पक्ष मे गुरु का अस्त है।

॥ जय गुरुदेव ॥

२६ जून २०२५ से १० जुलाई २०२५ तक

श्री सूर्योत्तरायण- ग्रीष्म ऋतुः

" आषाढ शुक्ल पक्ष "

दिनांक वार	तिथि समय समाप्ति काल में	नक्षत्र समय समाप्ति काल में	चन्द्रमा समय समाप्ति काल में	विवरण
२६.६.२५ गुरुवार	प्रतिपदा दिन २:३२	आर्द्रा दिन १०:२४	मिथुन रात्रि ३:५१	गुप्त नवरात्र प्रारम्भ। मनोरथ द्वितीया। सर्वार्थ सिद्धि योग दिन १०:२१ से।
२७.६.२५ शुक्रवार	द्वितीया दिन १:१२	पुनर्वसु दिन ६:४२	कर्क	रथयात्रा। श्री राम (बलराम) रथोत्सव जगनाथ पुरी में विशेष। सर्वार्थ सिद्धि योग दिन ६:४१ तक।
२८.६.२५ शनिवार	तृतीया दिन १२:१३	पुष्य दिन ६:२८	कर्क	वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी व्रत। भद्रा रात्रि ११:५८ से
२९.६.२५ रविवार	चतुर्थी दिन ११:४५	अश्लेषा दिन ६.४२	कर्क दिन ६:४१	भद्रा दिन ११:४४ तक।
३०.६.२५ सोमवार	पंचमी दिन ११:४८	मघा दिन १०:२६	सिंह	श्री स्कन्दषष्ठी व्रत। (पूर्व विद्धा)
१.७.२५ मंगलवार	षष्टी दिन १२:२४	पूर्वाफाल्गुनी दिन ११:४०	सिंह सायं ६:०८	कुमार षष्ठी। कर्न्दबषण्ठी
२.७.२५ बुधवार	सप्तमी दिन १:२५	उत्तराफाल्गुनी दिन १:२२	कन्या	विवस्वत सूर्य पूजा। सर्वार्थ सिद्धि योग दिन १:२० से। भद्रा दिन १:२४ से रात्रि २:१० तक।
३.७.२५ गुरुवार	अष्टमी दिन २:५२	हस्त दिन ३:३०	कन्या रात्रि ४:४१	परशुरामाष्टमी (उडीसा)
४.७.२५ शुक्रवार	नवमी सायं ४:३६	चित्रा सायं ५:५४	तुला	रवि योग समस्त
५.७.२५ शनिवार	दशमी सायं ६:३८	स्वाती रात्रि ८:२८	तुला	सोपदा। वेदारम्भ वर्जिता गिरिजा पूजा। सर्वार्थ सिद्धि योग रात्रि ८:२८ तक।
६.७.२५ रविवार	एकादशी रात्रि ८:४०	विशाखा रात्रि ११:०८	तुला दिन ४:२६	श्री विष्णुशयनी एकादशी व्रत सबका भद्रा प्रातः ७:४० से रात्रि ८:४० तक।
७.७.२५ सोमवार	द्वादशी रात्रि १०:३२	अनुराधा रात्रि १:३१	वृश्चिक	चातुर्मास्य व्रतारम्भ। शाक का त्याग श्री वामन पूजा। गुरु का उदय पूर्व मे दिन ३:१४। सर्वार्थ सिद्धि योग रात्रि १:३१ तक।
८.७.२५ मंगलवार	त्रयोदशी रात्रि १२:०५	ज्येष्ठा रात्रि ३:४२	वृश्चिक रात्रि ३:४२	भौम प्रदोष व्रत।
९.७.२५ बुधवार	चतुर्दशी रात्रि १:१५	मूल समस्त	धनु	चौमसी चौदस (जैन) भद्रा रात्रि १:१५ से।
१०.७.२५ गुरुवार	पूर्णिमा रात्रि २:१०	मूल प्रातः ५:२८	धनु	स्नान-दान व्रत की (गुरु पूर्णिमा) विशेष आषढी पूर्णिमा।

नोटः- ७ जुलाई सोमवार को गुरु का उदय पूर्व मे।

॥ जय गुरुदेव ॥

११ जुलाई २०२५ से २४ जुलाई २०२५ तक

श्री सूर्योत्तरायण-ग्रीष्म ऋतु

" श्रावण कृष्ण पक्ष "

दिनांक वार	तिथि समय समाप्ति काल में	नक्षत्र समय समाप्ति काल में	चन्द्रमा समय समाप्ति काल में	विवरण
११.७.२५ शुक्रवार	प्रतिपदा रात्रि २:१२	पूर्वाषाढा प्रातः ६:४४	धनु दिन १२:५६	श्रावण मासारम्भ। रूद्राभिषेक करने से विशेष फल प्राप्ति। मैथिल-नववर्षारम्भ।
१२.७.२५ शनिवार	द्वितीया रात्रि १:५२	उत्तराषाढा दिन ७:३२	मकर	अशून्यशयम व्रत। श्री लक्ष्मी सहित विष्णु पूजन पलंग पर (विशेष) सर्वार्थ सिद्धि योग दिन ७:३१ से।
१३.७.२५ रविवार	तृतीया रात्रि १२:५९	श्रवण दिन ७:४८	मकर रात्रि ७:४२	पंचक प्रारम्भ रात्रि ७:४२। भद्रा दिन १:२५ से रात्रि १२:५९ तक।
१४.७.२५ सोमवार	चतुर्थी रात्रि ११:४५	धनिष्ठा दिन ७:३८	कुम्भ	संकष्टी श्री गणेश चतुर्थी व्रत। चन्द्रोदय रात्रि ९:४० प्रथम श्रावण सोमवार व्रत (विशेष)
१५.७.२५ मंगलवार	पंचमी रात्रि १०:१०	शतभिषा प्रातः ६:५९	कुम्भ रात्रि १२:१६	मंगला गौरी व्रत। हनुमत दर्शन
१६.७.२५ बुधवार	षष्ठी रात्रि ८:१२	पू.भाद्रपद/उ.भाद्रपद प्रातः ६:१० ४:४८	मीन	कर्क राशि का सूर्य रा०शे० ५:१०। घंटे ६:२४ मिनट बाद पुष्य काल (संक्रान्ति) मंदाकिनी स्नान। दक्षिणायन प्रारम्भ। वर्षा ऋतु प्रारम्भ भद्रा रात्रि ८:१० से।
१७.७.२५ गुरुवार	सप्तमी सायं ५:५८	रेवती रात्रि ३:२०	मीन रात्रि ३:१८	कालाष्टमी व्रत। मनसा पूजा प्रारम्भ। पंचक समाप्ति रात्रि ३:१८। भद्रा प्रातः ६:५९ तक। सर्वार्थ सिद्धि योग समस्त।
१८.७.२५ शुक्रवार	अष्टमी दिन ३:३८	अश्विनी रात्रि १:४३	मेष	मन्वादि। सर्वार्थ सिद्धि योग रात्रि १:४२ तक।
१९.७.२५ शनिवार	नवमी दिन १:१०	भरणी रात्रि १२.०३	मेष	भद्रा रात्रि ११:५३ से।
२०.७.२५ रविवार	दशमी दिन १०:४२	कृतिका रात्रि १०:२८	मेष प्रातः ५:३७	भद्रा दिन १०:४० तक। पुष्य नक्षत्र का सूर्य सायं ५:२६।
२१.७.२५ सोमवार	एकादशी दिन ८:१४	रोहिणी रात्रि ८:५२	वृष	कामदा एकादशी व्रत सबका। द्वितीय श्रावण सोमवार व्रत। सर्वार्थ सिद्धि योग समस्त। अमृत सिद्धि योग रात्रि ८:५१ से।
२२.७.२५ मंगलवार	द्वादशी/त्रयोदशी प्रातः ६:१० ३:५५	मृगशिरा रात्रि ७:३२	वृष दिन ८:१२	मंगला गौरी व्रत। हनुमान दर्शन। भौम प्रदोषव्रत। भद्रा रात्रि ३:५५ से।
२३.७.२५ बुधवार	चतुर्दशी रात्रि २:१४	आर्द्रा सायं ६:२८	मिथुन	मास शिवरात्रि व्रत। भद्रा दिन ३:१० तक।
२४.७.२५ गुरुवार	अमावस्या रात्रि १२:४८	पुनर्वसु सायं ५:४२	मिथुन दिन ११:५३	स्नान-दान श्राद्ध की अमावस्या। सर्वार्थ सिद्धि योग समस्त। अमृत सिद्धि योग सायं ५:४२ से।

२५ जुलाई २०२५ से ९ अगस्त २०२५ तक — श्री सूर्योदक्षिणायन- वर्षा ऋतुः

" श्रावण शुक्ल पक्ष "

दिनांक वार	तिथि समय समाप्ति काल में	नक्षत्र समय समाप्ति काल में	चन्द्रमा समय समाप्ति काल में	विवरण
२५.७.२५ शुक्रवार	प्रतिपदा रात्रि ११:४८	पुष्य सायं ५:२४	कर्क	श्री विष्णु शिवात्मक अभिषेक प्रराम्भ।
२६.७.२५ शनिवार	द्वितीया रात्रि ११:२०	अश्लेषा सायं ५:२८	कर्क सायं ५:२८	धर्म सम्राट स्वामी करपात्रि जयन्ती (विशेष)।
२७.७.२५ रविवार	तृतीया रात्रि ११:२०	मघा सायं ६:१०	सिंह	स्वर्ण गौरी व्रत। ठकुशईन जयन्ती।
२८.७.२५ सोमवार	चतुर्थी रात्रि ११:५४	पूर्वाफाल्गुनी रात्रि ७:१३	सिंह रात्रि १:३६	वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी व्रत। तृतीय सोमवार व्रत। भद्रा दिन ११:३६ से रात्रि ११:४४ तक।
२९.७.२५ मंगलवार	पंचमी रात्रि १२:५५	उत्तराफाल्गुनी रात्रि ८:४८	कन्या	श्री नाग पंचमी। तक्षक पूजा। मंगला गौरी व्रत हनुमान दर्शन। कुण्डली मे कालसर्प दोष पूजा निवारण दिवस (विशेष)
३०.७.२५ बुधवार	षष्टी रात्रि २:२०	हस्त रात्रि १०:५२	कन्या	कल्कि अवतार। सर्वार्थ सिद्धि योग रात्रि १०:५० तक।
३१.७.२५ गुरुवार	सप्तमी रात्रि ४:०८	चित्रा रात्रि १:१४	कन्या दिन १२:०८	श्री गोस्वामी तुलसी दास जयन्ती। भद्रा रात्रि ४:१० से।
१.८.२५ शुक्रवार	अष्टमी समस्त	स्वाती रात्रि ३:४८	तुला	भद्रा सायं ५:१० तक। लोकमान्यतिलक स्मृति दिवस।
२.८.२५ शनिवार	अष्टमी प्रातः ६:१०	विशाखा समस्त	तुला रात्रि ११:४५	रवि योग समस्त।
३.८.२५ रविवार	नवमी दिन ८:१०	विशाखा प्रातः ६:२८	वृश्चिक	कौमारी व्रत।
४.८.२५ सोमवार	दशमी दिन १०:०५	अनुराधा दिन १:५५	वृश्चिक	चतुर्थ सोमवार व्रत। भद्रा रात्रि १०:५१ से। झूलन यात्रा प्रारम्भ।
५.८.२५ मंगलवार	एकादशी दिन ११:४०	ज्येष्ठा दिन ११:१०	वृश्चिक दिन ११:१०	पुत्रदा एकादशी व्रत सबका। मंगला गौरी व्रत हनुमान दर्शन। भद्रा दिन ११:४० तक।
६.८.२५ बुधवार	द्वादशी दिन १२:५२	मूल दिन १:१०	धनु	प्रदोष व्रत। दामोदर द्वादशी।
७.८.२५ गुरुवार	त्रयोदशी दिन १:३८	पूर्वाषाढा दिन २:२५	धनु रात्रि ८:३७	शिव पवित्रा रोपण।
८.८.२५ शुक्रवार	चतुर्दशी दिन १:५२	उत्तराषाढा दिन ३:१८	मकर	व्रत की पूर्णिमा। भद्रा दिन १:५२ से रात्रि १:४२ तक। सर्वार्थ सिद्धि योग दिन ३:१७ से।
९.८.२५ शनिवार	पूर्णिमा दिन १:३४	श्रवण दिन ३:४२	मकर रात्रि ३:३७	स्नान-दान की पूर्णिमा। संस्कृत दिवस। रक्षाबन्धन (राखी) श्रावणी उपाकर्म पंचक प्रारम्भ रात्रि ३:३७ से। झूलन यात्रा समाप्त

॥ जय गुरुदेव ॥

१० अगस्त २०२५ से २३ अगस्त २०२५ तक

श्री सूर्योदक्षिणायन- वर्षा ऋतुः

" भाद्रपद कृष्ण पक्ष "

दिनांक वार	तिथि समय समाप्ति काल में	नक्षत्र समय समाप्ति काल में	चन्द्रमा समय समाप्ति काल में	विवरण
१०.८.२५ रविवार	प्रतिपदा दिन १२:४८	धनिष्ठा दिन ३:३४	कुम्भ	अशून्यशयन व्रत। भाद्र पद मास मे चातुर्मास्य व्रती को दही नही खाना चाहिए।
११.८.२५ सोमवार	द्वितीया दिन ११:३६	शतभिषा दिन ३:०५	कुम्भ	विन्ध्याचली तथा भीमयण्डी देवी जयन्ती भद्रा रात्रि १०:४८ से।
१२.८.२५ मंगलवार	तृतीया दिन १०:०३	पूर्वाभाद्रपद दिन २:१२	कुम्भ दिन ८:२५	भद्रा दिन १०:०० तक। संकष्टी अंगारकी(बहुला) श्री गणेश चतुर्थी व्रत। चन्दोदय रात्रि ८:४७। गो पूजा। सर्वार्थ सिद्धि योग दिन २:१२ से।
१३.८.२५ बुधवार	चतुर्थी दिन ८:०८	उत्तरा भाद्रपद दिन १:००	मीन	रक्षा पंचमी (उडीसा)
१४.८.२५ गुरुवार	पंचमी/षष्ठी प्रातः ५:५६ ३:३५	रेवती दिन ११:३५	मीन दिन ११:३४	हलषष्ठी व्रत। (हरछट) व्रत। भद्रा रात्रि ३:३४ से। पंचक समाप्ति दिन ११:३५ सर्वार्थ सिद्धि योग समस्त।
१५.८.२५ शुक्रवार	सतमी रात्रि १:१०	अश्विनी दिन ६:५८	मेष	भारतीय ७६ वाँ स्वतन्त्रता दिवस। भद्रा दिन २:२१ तक। सर्वार्थ सिद्धि योग दिन ६:५८ तक।
१६.८.२५ शनिवार	अष्टमी रात्रि १०:४०	भरणी दिन ८:१८	मेष दिन १:५३	श्री कृष्ण जन्माष्टी व्रत सबका। (कृष्णावतार) "विशेष"
१७.८.२५ रविवार	नवमी रात्रि ८:१८	कृतिका/रोहिणी प्रातः ६:४० ४:५६	वृष	रोहिणी मतावलम्बी वैष्णवों का श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत। सिंह राशि का सूर्य सायं ४:३२। ६ घंटा २४ मिनट बाद पुष्य काल।
१८.८.२५ सोमवार	दशमी सायं ६:०३	मृगशिरा रात्रि ३:४२	वृष सायं ४:२४	भद्रा प्रातः ७:१० से सायं ६:०० तक। सर्वार्थ तथा अमृत सिद्धि योग रात्रि ३:४० तक।
१९.८.२५ मंगलवार	एकादशी दिन ३:५८	आर्द्रा रात्रि २:३२	मिथुन	जया एकादशी व्रत सबका।
२०.८.२५ बुधवार	द्वादशी दिन २:१४	पुनर्वसु रात्रि १:४४	मिथुन रात्रि ७:५६	प्रदोष व्रत।
२१.८.२५ गुरुवार	त्रयोदशी दिन १२:४८	पुष्य रात्रि १:१८	कर्क	मास शिवरात्रि व्रत। भद्रा दिन २:४६ से रात्रि १२:१६ तक। अधोर चतुर्दशी (प्रदोष मे) सर्वार्थ तथा अमृत सिद्धि योग रात्रि १:१६ तक।
२२.८.२५ शुक्रवार	चतुर्दशी दिन ११:४८	अश्लेषा रात्रि १:१७	कर्क रात्रि १:१६	श्राद्ध की अमावस्या।
२३.८.२५ शनिवार	अमावस्या दिन ११:१६	मघा रात्रि १:४५	सिंह	स्नान-दान की (कुशोत्पाटनी) अमावस्या। ॐ हूँ फट् मंत्र से कुशग्रहण करना चाहिए।

२४ अगस्त २०२५ से ७ सितम्बर २०२५ तक — श्री सूर्योदक्षिणायन- वर्षा ऋतुः

" भाद्रपद शुक्ल पक्ष "

दिनांक वार	तिथि समय समाप्ति काल में	नक्षत्र समय समाप्ति काल में	चन्द्रमा समय समाप्ति काल में	विवरण
२४.८.२५ रविवार	प्रतिपदा दिन ११:१८	पूर्वाफाल्गुनी रात्रि ४:१४	सिंह	चन्द्र दर्शन। सर्वार्थ सिद्धि योग रात्रि २:४४ से।
२५.८.२५ सोमवार	द्वितीया दिन ११:४२	उत्तराफाल्गुनी रात्रि ४:१४	सिंह दिन ६:१०	वाराह अवतार (अपराह्न)।
२६.८.२५ मंगलवार	तृतीया दिन १२:५२	हस्त समस्त	कन्या	हरि तालिका व्रत (तीजा) भद्रा रात्रि १:३२ से।
२७.८.२५ बुधवार	चतुर्थी दिन २:१८	हस्त प्रातः ६:१२	कन्या रात्रि ७:१८	वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी व्रत। गणेशोत्सव प्रारम्भ। भद्रा दिन २:१८ तक। सर्वार्थ सिद्धि योग प्रातः ६:१० तक।
२८.८.२५ गुरुवार	पंचमी दिन ४:०८	चित्रा दिन ८:२८	तुला	श्री ऋषि पंचमी व्रत। मध्यान्ह मे सप्तर्षि पूजा।
२९.८.२५ शुक्रवार	षष्ठी सायं ६:०५	स्वाती दिन ११:०३	तुला	लोलार्क षष्ठी व्रत। स्वामी कार्तिकेय दर्शन।
३०.८.२५ शनिवार	सप्तमी रात्रि ८:१०	विशाखा दिन १:३८	तुला प्रातः ६:५७	सन्तान सप्तमी (महालक्ष्मी व्रतारम्भ १६ दिनो तक) भद्रा रात्रि ८:१० से।
३१.८.२५ रविवार	अष्टमी रात्रि १०:०५	अनुराधा दिन ४:१०	वृश्चिक	भद्रा दिन ६:१० तक। ज्येष्ठा देवी आवाहन राधाष्टमी महा रविवार व्रत।
१.९.२५ सोमवार	नवमी रात्रि ११:४४	ज्येष्ठा सायं ६:३५	वृश्चिक सायं ६:२७	महानन्दा नवमी। श्री चन्द्र जयन्ती ज्येष्ठा देवी का पूजन।
२.९.२५ मंगलवार	दशमी रात्रि १:००	मूल रात्रि ८:३२	धनु	दशा अवतार व्रत। ज्येष्ठा देवी का विसर्जन। बुढवा मंगल पनकी कटरा हनुमान मंदिर कानपुर।
३.९.२५ बुधवार	एकादशी रात्रि १:४८	पूर्वाषाढा रात्रि ९:५५	धनु रात्रि ४:१०	पद्मा एकादशी व्रत। (सबका) भद्रा दिन १:३३ से रात्रि १:४८ तक।
४.९.२५ गुरुवार	द्वादशी रात्रि २:०८	उत्तराषाढा रात्रि १०:५८	मकर	वामन द्वादशी (अवतार)
५.९.२५ शुक्रवार	त्रयोदशी रात्रि १:५२	श्रवण रात्रि ११:२८	मकर	प्रदोष व्रत। सर्वार्थ सिद्धि योग रात्रि ११:२६ तक।
६.९.२५ शनिवार	चतुर्दशी रात्रि १:१०	धनिष्ठा रात्रि ११:२८	मकर दिन ११:२७	अनन्त चतुर्दशी व्रत। भद्रा रात्रि १:१० से पंचक प्रराम्भ दिन ११:२८। गणपति विसर्जन।
७.९.२५ रविवार	पूर्णिमा रात्रि ११:५७	शतभिषा रात्रि १०:५९	कुम्भ	स्नान-दान व्रत की पूर्णिमा। भद्रा दिन १२:३३ तक। नान्दी माता मह श्राद्ध। चन्द्र ग्रहण, तर्पण प्रारम्भ।

॥ जय गुरुदेव ॥

८ सितम्बर २०२५ से २१ सितम्बर २०२५ तक

श्री सूर्योदक्षिणायन- वर्षा ऋतुः

" आश्विन कृष्ण पक्ष "

दिनांक वार	तिथि समय समाप्ति काल में	नक्षत्र समय समाप्ति काल में	चन्द्रमा समय समाप्ति काल में	विवरण
८.९.२५ सोमवार	प्रतिपदा रात्रि १०:२८	पूर्वा भाद्रपद रात्रि १०:१५	कुम्भ सायं ४:२६	प्रतिपदा श्राद्ध। पितृ पक्ष मे पितरो को जल देने से वर्ष पर्यन्त मनुष्य सुखी रहता है।
९.९.२५ मंगलवार	द्वितीया रात्रि ८:३२	उत्तरा भाद्रपद रात्रि ९:१०	मीन	द्वितीय श्राद्ध। अशून्यशयन व्रत। सर्वार्थ सिद्धि योग रात्रि ९:०५ तक।
१०.९.२५ बुधवार	तृतीया सायं ६:३०	रेवती रात्रि ७:४२	मीन रात्रि ७:४२	तृतीया श्राद्ध। संकष्टी श्री गणेश चतुर्थी व्रत। चन्द्रोदय रात्रि ७:५६। पंचक समाप्ति रात्रि ७:४२ भद्रा दिन ७:३० से सायं ६:३५ तक।
११.९.२५ गुरुवार	चतुर्थी दिन ४:१०	अश्विनी सायं ६:१०	मेष	चतुर्थी श्राद्ध। सर्वार्थ सिद्धि योग सायं ६:१० तक।
१२.९.२५ शुक्रवार	पंचमी दिन १:४२	भरणी सायं ४:३१	मेष रात्रि १०:०८	पंचमी तथा षष्ठी श्राद्ध। भरणी श्राद्ध।
१३.९.२५ शनिवार	षष्ठी दिन ११:१५	कृतिका दिन २:४८	वृष	सत्तमी श्राद्ध। सर्वार्थ तथा अमृत सिद्धि योग दिन २:४८ से। भद्रा दिन ११:१४ से रात्रि १०:०५ तक।
१४.९.२५ रविवार	सप्तमी दिन ८:५२	रोहिणी दिन १:१२	वृष रात्रि ११:३०	अष्टमी श्राद्ध। जीवत्यपुत्रिका व्रत। महालक्ष्मी व्रत। चन्द्रोदय रात्रि ११:१५।
१५.९.२५ सोमवार	अष्टमी/नवमी प्रातः ६:३६ ४:३४	मृगशिरा दिन ११:४८	मिथुन	मातृ नवमी श्राद्ध। जीवपुत्रिका व्रत पारण। सर्वार्थ तथा अमृत सिद्धि योग दिन ११:४५ तक।
१६.९.२५ मंगलवार	दशमी रात्रि २:५२	आर्द्रा दिन १०:३३	मिथुन रात्रि ३:५३	दशमी श्राद्ध। भद्रा दिन ३:४२ से। रात्रि २:५० तक।
१७.९.२५ बुधवार	एकादशी रात्रि १:३०	पुनर्वसु दिन ९:४०	कर्क	इन्दिरा एकादशी व्रत। (सबका) एकादशी श्राद्ध। कन्या राशि का सूर्य सायं ५:३०। घंटा ६:२४ मिनट बाद पुन्य काल। शरद ऋतु प्रारम्भ। श्री विश्वकर्मा पूजा।
१८.९.२५ गुरुवार	द्वादशी रात्रि १२:२६	पुष्य दिन ९:१०	कर्क	द्वादशी श्राद्ध। सर्वार्थ तथा अमृत सिद्धि योग दिन ९:१० तक।
१९.९.२५ शुक्रवार	त्रयोदशी रात्रि ११:५८	अश्लेषा दिन ८:५६	कर्क दिन ८:५६	प्रदोष व्रत। त्रयोदशी श्राद्ध। मासशिव रात्रि व्रत। भद्रा रात्रि ११:५७ से।
२०.९.२५ शनिवार	चतुर्दशी रात्रि ११:५८	मघा दिन ९:२२	सिंह	चतुर्दशी श्राद्ध। भद्रा दिन ११:५७ तक।
२१.९.२५ रविवार	अमावस्या रात्रि १२:२८	पूर्वाफाल्गुनी दिन १०:१२	सिंह सायं ४:३२	स्नान-दान श्राद्ध की अमावस्या पितृ विसर्जन सर्वार्थ सिद्धि योग दिन १०:१२ से।

॥ जय गुरुदेव ॥

२२ सितम्बर २०२५ से ७ अक्टूबर २०२५ तक

श्री सूर्योदक्षिणायन- शरद ऋतुः

" आश्विन शुक्ल पक्ष "

दिनांक वार	तिथि समय समाप्ति काल में	नक्षत्र समय समाप्ति काल में	चन्द्रमा समय समाप्ति काल में	विवरण
२२.९.२५ सोमवार	प्रतिपदा रात्रि १:२६	उत्तराफाल्गुनी दिन ११:३५	कन्या	शरदीय नवरात्र प्रारम्भ कलश स्थापन समस्त प्रथम शैल पुत्री दर्शन। मातामह (नाना) का श्राद्ध महाराजा अग्रसेन जयन्ती।
२३.९.२५ मंगलवार	द्वितीया रात्रि २:५८	हस्त दिन १:२५	कन्या रात्रि २:३०	द्वितीय ब्रह्मचारिणी देवी दर्शन।
२४.९.२५ बुधवार	तृतीया रात्रि ४:४७	चित्रा दिन ३:३६	तुला	तृतीय चन्द्रघण्टा देवी दर्शन।
२५.९.२५ गुरुवार	चतुर्थी समस्त	स्वाती सायं ६:१०	तुला	चतुर्थकं कूष्माण्डा देवी दर्शन। वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी व्रत। भद्रा सायं ५:५० से।
२६.९.२५ शुक्रवार	चतुर्थी प्रातः ६:५२	विशाखा रात्रि ८:४४	तुला दिन २:०५	भद्रा प्रातः ६:५० तक। उपांग ललिता व्रत।
२७.९.२५ शनिवार	पंचमी दिन ८:५६	अनुराधा रात्रि ११:१८	वृश्चिक	पंचम स्कन्द माता दर्शन।
२८.९.२५ रविवार	षष्ठी दिन १०:५५	ज्येष्ठा रात्रि १:३६	वृश्चिक रात्रि १:४०	षष्ठं कात्यायनी देवी दर्शन। सर्वार्थ सिद्धि योग रात्रि १:४० से।
२९.९.२५ सोमवार	सप्तमी दिन १२:३६	मूल रात्रि ३:४४	धनु	सप्तमं काल रात्रि देवी दर्शन। भद्रा दिन १२:३६ से रात्रि १:१५ तक। सरस्वती आवाहन। महा निशा पूजा। अन्नपूर्णा परिक्रमा दिन १२:३६ से।
३०.९.२५ मंगलवार	अष्टमी दिन १:५५	पूर्वाषाढा रात्रि ५:१८	धनु	महाष्टमी व्रत। अष्टम महा गौरी दर्शन। अन्नपूर्णा परिक्रमा दिन १:५५ तक।
१.१०.२५ बुधवार	नवमी दिन २:४७	उत्तराषाढा समस्त	धनु दिन ११:३८	महानवमी व्रत। नवम सिद्धि दात्री देवी दर्शन सरस्वती पूजन। दशमी मे पारण नवरात्र का।
२.१०.२५ गुरुवार	दशमी दिन ३:१०	उत्तराषाढा प्रातः ६:२८	मकर	विजयदशमी (दशहरा)। दुर्गा विसर्जन, सरस्वती विसर्जन। नीलकंठ दर्शन भद्रा रात्रि ३:०० से। महात्मा गाँधी शास्त्री जयन्ती।
३.१०.२५ शुक्रवार	एकादशी दिन २:५५	श्रवण प्रातः ७:१०	मकर रात्रि ७:१२	पापा कुशा एकादशी व्रत सबका। भद्रा दिन २:५५ तक। पंचक प्रारम्भ रात्रि ७:१२। सर्वार्थ सिद्धि योग प्रातः ७:१० तक।
४.१०.२५ शनिवार	द्वादशी दिन २:१२	धनिष्ठा प्रातः ७:१६	कुम्भ	शनि प्रदोष व्रत। पद्मनाम द्वादशी।
५.१०.२५ रविवार	त्रयोदशी दिन १:१०	शतभिषा/पूर्वाभाद्रपद प्रातः ६:५७ ६:१४	कुम्भ रात्रि १२:२५	सर्वार्थ सिद्ध योग रा०शे० ६:१५ से।
६.१०.२५ सोमवार	चतुर्दशी दिन ११:३६	उत्तराभाद्रपद रात्रि ५:१२	मीन	व्रत की पूर्णिमा। शरद पूर्णिमा। भद्रा दिन ११:३६ से रात्रि १०:४० तक।
७.१०.२५ मंगलवार	पूर्णिमा दिन ६:४४	रेवती रात्रि ३:५२	मीन रात्रि ३:५२	स्नान-दान की पूर्णिमा। महार्षि वाल्मीक जयन्ती पंचक समाप्ति रात्रि ३:५०। कार्तिक मास दीपदान प्रारम्भ।

" कार्तिक कृष्ण पक्ष "

दिनांक वार	तिथि समय समाप्ति काल में	नक्षत्र समय समाप्ति काल में	चन्द्रमा समय समाप्ति काल में	विवरण
८.१०.२५ बुधवार	प्रतिपदा/द्वितीया प्रातः ७.३६ ५:२२	अश्विनी रात्रि २:२०	मेष	सौर कार्तिक मास आरम्भ। अशून्यशयन व्रत।
९.१०.२५ गुरुवार	तृतीया दिन १०:५८	भरणी रात्रि १२:४२	मेष रा०शे० ६:१६	भद्रा सायं ४:१२ से रात्रि २:५६ तक।
१०.१०.२५ शुक्रवार	चतुर्थी रात्रि १२:३४	कृतिका रात्रि १०:५६	वृष	संकष्टी श्री गणेश चतुर्थी (करवा चौथ) व्रत चन्द्रोदय रात्रि ८:१२। चन्द्रमा को अर्ध्यदान।
११.१०.२५ शनिवार	पंचमी रात्रि १०:१४	रोहिणी रात्रि ९:२५	वृष	सर्वार्थ तथा अमृत सिद्धि योग रात्रि ९:२५ तक।
१२.१०.२५ रविवार	षष्ठी रात्रि ८:०३	मृर्गशिरा रात्रि ७:५५	वृष दिन ८:४०	भद्रा रात्रि ७:५२ से।
१३.१०.२५ सोमवार	सप्तमी सायं ५:५८	आर्द्रा सायं ६:३६	मिथुन	भद्रा प्रातः ६:५६ तक। अहोई ८ व्रत।
१४.१०.२५ मंगलवार	अष्टमी सायं ४:१६	पुनर्वसु सायं ५:३९	मिथुन दिन ११:५३	श्री राधा जयन्ती।
१५.१०.२५ बुधवार	नवमी दिन २:५५	पुष्य सायं ४:४८	कर्क	भद्रा रात्रि २:२६ से।
१६.१०.२५ गुरुवार	दशमी दिन १:५६	अश्लेषा सायं ४:४८	कर्क सायं ४:४६	भद्रा दिन १:५६ तक।
१७.१०.२५ शुक्रवार	एकादशी दिन १:३०	मघा सायं ५:०२	सिंह	रम्भा एकादशी व्रत सबका। गोवत्स द्वादशी व्रत (प्रदोष मे) तुला राशि का सूर्य रात्रि ४:२६। (घंटे ६ मिनट २४ बाद मे पुष्य काल।)
१८.१०.२५ शनिवार	द्वादशी दिन १:३१	पूर्वाफाल्गुनी सायं ५:४८	सिंह रात्रि १२:०५	शनि प्रदोष व्रत (धनतेरस) धन्वन्तरि जयन्ती। दक्षिण मुख यम दीप दान।
१९.१०.२५ रविवार	त्रयोदशी दिन २:०५	उत्तराफाल्गुनी सायं ७:०४	कन्या	मास शिवरात्रि व्रत। नरक चतुर्दशी सांयकाले मेष लग्न मे हनुमान जन्म। यमराज को दीप दान। यमपंचक प्रारम्भ। भद्रा दिन २:०८ से रात्रि २:३६ तक।
२०.१०.२५ सोमवार	चतुर्दशी दिन ३:१०	हस्त रात्रि ८:४४	कन्या	दीपावली (प्रदोष मे) अमावस्या। लक्ष्मी-गणेश इन्द्र कुबेरादि पूजन (सर्वत्र)
२१.१०.२५ मंगलवार	अमावस्या सायं ६:३६	चित्रा रात्रि १०:५२	कन्या दिन ९:४८	स्नान-दान श्राद्ध की अमावस्या। महावीर निरवाण दिवस। भौमवती अमावस्या।

२२ अक्टूबर २०२५ से ५ नवम्बर २०२५ तक

श्री सूर्योदक्षिणायन- शरद ऋतुः

" कार्तिक शुक्ल पक्ष "

दिनांक वार	तिथि समय समाप्ति काल में	नक्षत्र समय समाप्ति काल में	चन्द्रमा समय समाप्ति काल में	विवरण
२२.१०.२५ बुधवार	प्रतिपदा सायं ६:२८	स्वाती रात्रि १:१८	तुला	अन्नकूट। गोवर्धन पूजा।
२३.१०.२५ गुरुवार	द्वितीया रात्रि ८:३२	विशाखा रात्रि ३:५३	तुला	यम द्वितीया। भातृ द्वितीया (भइयादूज) यम पंचक समाप्ति।
२४.१०.२५ शुक्रवार	तृतीया रात्रि १०:४२	अनुराधा रात्रि ६:२८	वृश्चिक	सर्वार्थ सिद्धि योग प्रातः ६:४० से।
२५.१०.२५ शनिवार	चतुर्थी रात्रि १२:४१	ज्येष्ठा समस्त	वृश्चिक	वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत। भद्रा दिन ११:४१ से रात्रि १२:४१ तक। सूर्य षष्ठी व्रतारम्भ (तीन दिनों तक)
२६.१०.२५ रविवार	पंचमी रात्रि २:२६	ज्येष्ठा दिन ८:५५	वृश्चिक दिन ८:५५	सूर्य षष्ठी व्रत द्वितीय दिन। सर्वार्थ सिद्धि योग दिन ८:५५।
२७.१०.२५ सोमवार	षष्ठी रात्रि ३:४५	मूल दिन ११:०८	धनु	श्री सूर्य षष्ठी व्रत(डाला छठ) सायंकालीन सूर्यार्घ्यदानम्।
२८.१०.२५ मंगलवार	सप्तमी रात्रि ४:३६	पूर्वाषाढा दिन १२:४८	धनु रात्रि ७:०८	श्री सूर्य षष्ठी व्रत की पारणा। भद्रा रात्रि ४:४० से।
२९.१०.२५ बुधवार	अष्टमी रात्रि ४:५६	उत्तराषाढा दिन २:०५	मकर	भद्रा सायं ४:५१ तक। गोपाष्टमी।
३०.१०.२५ गुरुवार	नवमी रात्रि ४:५२	श्रवण दिन २:४८	मकर रात्रि २:५६	अक्षय नवमी। आवला वृक्ष मूले सपरिवार करना चाहिए भोजन। पंचक प्रारम्भ रात्रि २:५६।
३१.१०.२५ शुक्रवार	दशमी रात्रि ४:१२	धनिष्ठा दिन ३:०५	कुम्भ	रवि योग समस्त।
१.११.२५ शनिवार	एकादशी रात्रि ३:१०	शतभिषा दिन २:५२	कुम्भ	प्रबोधिनी एकादशी व्रत। सबका देवोत्थापनम्। तुलसी विवाहोत्सव। भद्रा दिन ३:४० से रात्रि ३:१० तक।
२.११.२५ रविवार	द्वादशी रात्रि १:३८	पूर्वाभाद्रपद दिन २:१४	कुम्भ दिन ८:२४	नारायण द्वादशी। तुलसी विवाह। सर्वार्थ सिद्धि योग दिन २:१४ से।
३.११.२५ सोमवार	त्रयोदशी रात्रि ११:४८	उत्तराभाद्रपद दिन १:१८	मीन	सोम प्रदोष व्रत।
४.११.२५ मंगलवार	चतुर्दशी रात्रि ९:४४	रेवती दिन ११:५६	मीन दिन ११:५६	श्री वैकुण्ठ चतुर्दशी। श्री काशी विश्वनाथ प्रतिष्ठा दिवस। पंचक समाप्ति दिन ११:५६। सर्वार्थ अमृत सिद्ध योग। भद्रा रात्रि ९:४४ से।
५.११.२५ बुधवार	पूर्णिमा रात्रि ७:२६	अश्विनी दिन १०:३१	मेष	स्थान-दान व्रत की कार्तिक पूर्णिमा। गुरू नानक जयन्ती। देव दीपावली महोत्सवः भद्रा दिन ८:३४ तक। भीष्म पंचक समाप्ति।

६ नवम्बर २०२५ से २० नवम्बर २०२५ तक | श्री सूर्योदक्षिणायन- शरद ऋतुः

" मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष "

दिनांक वार	तिथि समय समाप्ति काल में	नक्षत्र समय समाप्ति काल में	चन्द्रमा समय समाप्ति काल में	विवरण
६.११.२५ गुरुवार	प्रतिपदा सायं ५:१०	भरणी दिन ८:५३	मेष दिन २:२७	फसली मार्गशीर्ष मासारम्भ।
७.११.२५ शुक्रवार	द्वितीया दिन २:४२	कृतिका/रोहिणी प्रातः ७:१२ ५:३२	वृष	भद्रा रात्रि १:३१ से।
८.११.२५ शनिवार	तृतीय दिन १२:२४	मृगशिरा रात्रि ३:५६	वृष सायं ४:४६	संकष्टी श्री गणेश चतुर्थी व्रत। चन्द्रोदय रात्रि ७:५५ भद्रा दिन १२:२४ तक।
९.११.२५ रविवार	चतुर्थी दिन १०:१५	आर्द्रा रात्रि २:४२	मिथुन	यायी जय योग।
१०.११.२५ सोमवार	पंचमी/षष्ठी प्रातः ८:१२ ६:३२	पुनर्वसु रात्रि १:३६	मिथुन रात्रि ७:५१	भद्रा रा०रो० ६:३१ से। माता अन्नपूर्णा। व्रतारम्भ (१७ दिनो तक)
११.११.२५ मंगलवार	सप्तमी रात्रि ५:१२	पुष्य रात्रि १२:५२	कर्क	सर्वार्थ सिद्धि योग रात्रि १२:५२ से। भद्रा सायं ५:५२ तक।
१२.११.२५ बुधवार	अष्टमी रात्रि ४:१८	अश्लेषा रात्रि १२:३१	कर्क रात्रि १२:३१	श्री भैरवाष्टमी व्रत। भैरव उत्पति।
१३.११.२५ गुरुवार	नवमी रात्रि ३:५२	मघा रात्रि १२:३६	सिंह	अन्वष्टक श्राद्ध।
१४.११.२५ शुक्रवार	दशमी रात्रि ३:५८	पूर्वाफाल्गुनी रात्रि १:१८	सिंह	नेहरु जयन्ती (बाल दिवस) भद्रा दिन ४:५५ से रात्रि ३:५७ तक।
१५.११.२५ शनिवार	एकादशी रात्रि ४:३५	उत्तराफाल्गुनी रात्रि २:२६	सिंह दिन ७:३३	उत्पन्ना एकादशी व्रत सबका।
१६.११.२५ रविवार	द्वादशी रात्रि ५:३६	हस्त रात्रि ३:५६	कन्या	वृश्चिक राशि का सूर्य रात्रि १:५८। घंटा ६ मिनट २४ पुष्य काल। हेमन्त ऋतु प्रराम्भ सर्वार्थ तथा अमृत सिद्धि योग रात्रि ३:५६ तक।
१७.११.२५ सोमवार	त्रयोदशी समस्त	चित्रा रात्रि ५:५६	कन्या सायं ४:५६	सोम प्रदोष व्रत (विशेष)।
१८.११.२५ मंगलवार	त्रयोदशी प्रातः ७:१४	स्वाती समस्त	तुला	मास शिवरात्रि व्रत। भद्रा दिन ७:१२ से रात्रि ८:१० तक।
१९.११.२५ बुधवार	चतुर्दशी दिन ९:०८	स्वाती प्रातः ८:२४	तुला रात्रि ४:१८	श्राद्ध की अमावस्या।
२०.११.२५ गुरुवार	अमावस्या दिन ११:१४	विशाखा दिन १०:५८	वृश्चिक	स्नान-दान अमावस्या। सर्वार्थ सिद्धि योग दिन १०:५७ से।

॥ जय गुरुदेव ॥

२१ नवम्बर २०२५ से ४ दिसम्बर २०२५ तक

श्री सूर्योदक्षिणायन- हेमन्त ऋतुः

" मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष "

दिनांक वार	तिथि समय समाप्ति काल में	नक्षत्र समय समाप्ति काल में	चन्द्रमा समय समाप्ति काल में	विवरण
२१.११.२५ शुक्रवार	प्रतिपदा दिन १:२०	अनुराधा दिन १:३३	वृश्चिक	रूद्र व्रतम। (पीडिया)
२२.११.२५ शनिवार	द्वितीया दिन ३:२४	ज्येष्ठा दिन ४:०५	वृश्चिक दिन ४:०६	हिजरी सन् १४४७।
२३.११.२५ रविवार	तृतीया सायं ५:१०	मूल सायं ६:१५	धनु	सर्वार्थ सिद्धि योग सायं ६:१५ तक। भद्रा रात्रि ५:४७ से।
२४.११.२५ सोमवार	चतुर्थी सायं ६:२८	पूर्वाषाढा रात्रि ८:१०	धनु रात्रि २:२८	वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी व्रत। भद्रा सायं ६:२८ तक।
२५.११.२५ मंगलवार	पंचमी रात्रि ७:२४	उत्तराषाढा रात्रि ९:२९	मकर	श्री राम विवाह महोत्सव। विवाह पंचमी।
२६.११.२५ बुधवार	षष्ठी रात्रि ७:४४	श्रवण रात्रि १०:२२	मकर	**श्री स्कन्दषष्ठी व्रत। माता अन्नपूर्णा व्रत समाप्त।**
२७.११.२५ गुरुवार	सप्तमी रात्रि ७:३५	धनिष्ठा रात्रि १०:४४	मकर दिन १०:३४	भद्रा रात्रि ७:३४ से। पंचक प्रारम्भ दिन १०:३३।
२८.११.२५ शुक्रवार	अष्टमी सायं ६:५५	शतभिषा रात्रि १०:३८	कुम्भ	भद्रा प्रातः ७:१४ तक।
२९.११.२५ शनिवार	नवमी सायं ५:५२	पूर्वाभाद्रपद रात्रि १०:०५	कुम्भ सायं ४:१४	श्री नन्दा नवमी।
३०.११.२५ रविवार	दशमी सायं ४:२०	उत्तराभाद्रपद रात्रि ९:१२	मीन	भद्रा रात्रि ३:२५ से। सर्वार्थ सिद्धि योग रात्रि ९:१४ तक।
१.१२.२५ सोमवार	एकादशी दिन २:३१	रेवती रात्रि ७:५९	मीन रात्रि ७:५९	मोक्षदा एकादशी व्रत सबका। गीता जयन्ती पंचक समाप्ति रात्रि ७:५९। भद्रा दिन २:३१ तक।
२.१२.२५ मंगलवार	द्वादशी दिन १२:२६	अश्विनी सायं ६:३२	मेष	भौम प्रदोष व्रत। सर्वार्थ तथा अमृत सिद्धि योग सायं ६:३४ तक।
३.१२.२५ बुधवार	त्रयोदशी दिन १०:१२	भरणी सायं ४:५६	मेष रात्रि १०:३२	पार्वण श्राद्ध। सर्वार्थ सिद्धि योग सायं ६:५६ से।
४.१२.२५ गुरुवार	चतुर्दशी/पूर्णिमा प्रातः ७:५७ ५:२८	कृतिका दिन ३:१५	वृष	स्नान-दान व्रत की पूर्णिमा। दत्तात्रेय जयन्ती। भद्रा दिन ७:५० से सायं ६:४० तक।

॥ जय गुरूदेव ॥

५ दिसम्बर २०२५ से १९ दिसम्बर २०२५ तक

श्री सूर्योदक्षिणायन- हेमन्त ऋतुः

" पौष कृष्ण पक्ष "

दिनांक वार	तिथि समय समाप्ति काल में	नक्षत्र समय समाप्ति काल में	चन्द्रमा समय समाप्ति काल में	विवरण
५.१२.२५ शुक्रवार	प्रतिपदा रात्रि ३:१२	रोहिणी दिन १:३६	वृष रात्रि १२:५०	फसली पौष मासारम्भ।
६.१२.२५ शनिवार	द्वितीया रात्रि १:१०	मृर्गशिरा दिन ११:५६	मिथुन	द्विपुष्कर योग।
७.१२.२५ रविवार	तृतीया रात्रि ११:०५	आर्द्रा दिन १०:३८	मिथुन रात्रि ३:४५	भद्रा दिन १२:०८ से रात्रि ११:१० तक।
८.१२.२५ सोमवार	चतुर्थी रात्रि ९:२८	पुनर्वसु दिन ९:२८	कर्क	संकष्टी श्री गणेश चतुर्थी व्रत। चन्द्रोदय रात्रि ८:५८ शुक्रवार्द्धक्य आरम्भ रात्रि १२:१८। सर्वार्थ सिद्धि योग दिन ९:२८ से।
९.१२.२५ मंगलवार	पंचमी रात्रि ८:१२	पुष्य दिन ८:४२	कर्क	सर्वार्थ सिद्धि योग दिन ८:४२ से।
१०.१२.२५ बुधवार	षष्ठी रात्रि ७:२०	अश्लेषा दिन ८:१२	कर्क दिन ८:१४	भद्रा रात्रि ७:२१ से।
११.१२.२५ गुरुवार	सप्तमी सायं ६:५८	मघा दिन ८:१३	सिंह	भद्रा प्रातः ७:१२ तक। शुक्र का अस्त पूर्व मे रात्रि १२:२८।
१२.१२.२५ शुक्रवार	अष्टमी सायं ७:१०	पूर्वाफाल्गुनी दिन ८:४२	सिंह दिन २:५५	अष्टका श्राद्ध।
१३.१२.२५ शनिवार	नवमी रात्रि ७:५२	उत्तराफाल्गुनी दिन ९:४२	कन्या	अन्वष्टका श्राद्ध।
१४.१२.२५ रविवार	दशमी रात्रि ८:५६	हस्त दिन ११:१२	कन्या रात्रि १२:१०	भद्रा दिन ८:२८ से रात्रि ८:५६ तक सर्वार्थ तथा अमृत सिद्धि योग रात्रि १०:३२ तक।
१५.१२.२५ सोमवार	एकादशी रात्रि १०:३३	चित्रा दिन १:१०	तुला	सफला एकादशी व्रत सबका।
१६.१२.२५ मंगलवार	द्वादशी रात्रि १२:२८	स्वाती दिन ३:२५	तुला	धनु राशि का सूर्य दिन २:०८ ६ घंटा मिनट २४ बांद पुष्य काल। गोदावरी स्नान-दान खरमासारम्भ।
१७.१२.२५ बुधवार	त्रयोदशी रात्रि २:३८	विशाखा सायं ५:५५	तुला दिन ११:१८	प्रदोष व्रत। भद्रा रात्रि २:३८ से। सर्वार्थ तथा अमृत सिद्धि योग सायं ५:५५ से।
१८.१२.२५ गुरुवार	चतुर्दशी रात्रि ४:४८	अनुराधा रात्रि ८:३२	वृश्चिक	मास शिव रात्रि व्रत। भद्रा दिन ३:४२ तक। सर्वार्थ सिद्धि योग रात्रि ८:३२ तक।
१९.१२.२५ शुक्रवार	अमावस्या रात्रि ६:४८	ज्येष्ठा रात्रि ११:०८	वृश्चिक रात्रि ११:०८	स्नान-दान-श्राद्ध की अमावस्या।

२० दिसम्बर २०२५ से ३ जनवरी २०२६ तक

श्री सूर्यो दक्षिणायन- हेमन्त ऋतुः

" पौष शुक्ल पक्ष "

दिनांक वार	तिथि समय समाप्ति काल में	नक्षत्र समय समाप्ति काल में	चन्द्रमा समय समाप्ति काल में	विवरण
२०.१२.२५ शनिवार	प्रतिपदा समस्त	मूल रात्रि १:२६	धनु	तिथि वृद्धिः
२१.१२.२५ रविवार	प्रतिपदा दिन ८:३३	पूर्वाषाढा रात्रि ३:२०	धनु	सर्वार्थ सिद्धि योग रात्रि ३:१८ से।
२२.१२.२५ सोमवार	द्वितीया दिन ९:५२	उत्तराषाढा रात्रि ४:५२	धनु दिन ९:४२	सर्वार्थ सिद्धि योग रात्रि ४:५२ से।
२३.१२.२५ मंगलवार	तृतीया दिन १०:४४	श्रवण रात्रि ५:५२	मकर	वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी व्रत। भद्रा रात्रि १०:५३ से।
२४.१२.२५ बुधवार	चतुर्थी दिन ११:०८	धनिष्ठा रात्रि ६:२२	मकर सायं ६:१०	भद्रा दिन ११:१० तक। पंचक प्रारम्भ सायं ६:१० से।
२५.१२.२५ गुरुवार	पंचमी दिन १०:५२	शतभिषा रात्रि ६:२२	कुम्भ	पं. अटल बिहारी बाजपेई जयन्ती। तुलसी दिवस (बडा दिन)
२६.१२.२५ शुक्रवार	षष्ठी दिन १०:१२	पूर्वाभाद्रपद रात्रि ५:५५	कुम्भ रात्रि १२:१०	सिद्धि योग।
२७.१२.२५ शनिवार	सप्तमी दिन ९:०५	उत्तराभाद्रपद रात्रि ५:१०	मीन	श्री गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती भद्रा दिन ९:१० से रात्रि ८:२० तक।
२८.१२.२५ रविवार	अष्टमी/नवमी प्रातः ७:३२ ५:४४	रेवती रात्रि ३:५९	मीन रात्रि ३:५९	महाभद्राष्टमी। पंचक समाप्ति रात्रि ३:५९। सर्वार्थ सिद्धि योग रात्रि ३:५९ से।
२९.१२.२५ सोमवार	दशमी रात्रि ३:३८	अश्विनी रात्रि २:३५	मेष	साम्ब दशमी।
३०.१२.२५ मंगलवार	एकादशी रात्रि १:२६	भरणी रात्रि १:०३	मेष रा०शे० ६:३८	पुत्रदा एकादशी व्रत। (सबका) भद्रा दिन २:३० से रात्रि १:१८ तक। सर्वार्थ सिद्धि योग रात्रि १:१० से।
३१.१२.२५ बुधवार	द्वादशी रात्रि ११:०३	कृतिका रात्रि ११:२२	वृष	कूर्म द्वादशी। सर्वार्थ सिद्धि योग समस्त।
१.१.२६ गुरुवार	त्रयोदशी रात्रि ८:४०	रोहिणी रात्रि ९:४२	वृष	प्रदोष व्रत। ईसाई नव वर्ष २०२६ प्रारम्भ।
२.१.२६ शुक्रवार	चतुर्दशी रात्रि ६:२४	मृगशिरा रात्रि ८:०५	वृष दिन ८:५३	व्रत की पूर्णिमा। भद्रा सायं ९:२४ से। रात्रि ५:१८ तक।
३.१.२६ शनिवार	पूर्णिमा सायं ४:१४	आर्द्रा सायं ६:३८	मिथुन	स्नान दान की पूर्णिमा (माघ मेला प्रारम्भ)

॥ जय गुरुदेव ॥

४ जनवरी २०२६ से १८ जनवरी २०२६ तक

श्री सूर्यो दक्षिणायन- हेमन्त ऋतुः

" माघ कृष्ण पक्ष "

दिनांक वार	तिथि समय समाप्ति काल में	नक्षत्र समय समाप्ति काल में	चन्द्रमा समय समाप्ति काल में	विवरण
४.१.२६ रविवार	प्रतिपदा दिन २:१८	पुनर्वसु सायं ५:२५	मिथुन दिन ११:४५	सर्वार्थ सिद्धि योग सायं ५:२५ से। माघ मासारम्भ।
५.१.२६ सोमवार	द्वितीया दिन १२:४४	पुष्य सायं ४:३३	कर्क	श्री गुरुगोविन्द सिंह जयन्ती (नवीनतम) भद्रा रात्रि १२:१० से। सर्वार्थ सिद्धि योग सायं ४:३२ तक।
६.१.२६ मंगलवार	तृतीया दिन ११:२८	अश्लेषा दिन ३:५६	कर्क दिन ३:५६	संकष्टी श्री गणेश चतुर्थी व्रत। चन्द्रोदय रात्रि ८:४५। भद्रा दिन ११:२८ तक। सर्वार्थ सिद्धि योग दिन ३:५६ तक।
७.१.२६ बुधवार	चतुर्थी दिन १०:३६	मघा दिन ३:५३	सिंह	एक राशि पर चार या पाँच ग्रहो का योग उत्पात कारक होता है।
८.१.२६ गुरुवार	पंचमी दिन १०:२०	पूर्वाफाल्गुनी सायं ४:१५	सिंह रात्रि १०:३१	सिद्धि योग।
९.१.२६ शुक्रवार	षष्ठी दिन १०:३२	उत्तराफाल्गुनी सायं ५:११	कन्या	भद्रा दिन १०:३२ से रात्रि १०:५८ तक।
१०.१.२६ शनिवार	सप्तमी दिन ११:१५	हस्त सायं ६:३२	कन्या	श्री रामानन्दाचार्य जयन्ती।
११.१.२६ रविवार	अष्टमी दिन १२:२६	चित्रा रात्रि ८:२२	कन्या दिन ७:२८	यायीजय योग।
१२.१.२६ सोमवार	नवमी दिन २:१०	स्वाती रात्रि १०:३५	तुला	महर्षि महेश योगी जन्मोत्सव दिवस। स्वामी विवेकानन्द जयन्ती।
१३.१.२६ मंगलवार	दशमी दिन ४:०५	विशाखा रात्रि १:१०	तुला सायं ६:२८	भद्रा दिन ४:१० तक।
१४.१.२६ बुधवार	एकादशी सायं ६:१२	अनुराधा रात्रि ३:४१	वृश्चिक	षट्तिला एकादशी व्रत सबका-मकर राशि का सूर्य रात्रि ९:५०। ८ या १६ घंटा पुण्य काल। (उत्तरायन) खरमास समाप्ति शिशिर ऋतु प्रारम्भ।
१५.१.२६ गुरुवार	द्वादशी रात्रि ८:२०	ज्येष्ठा रात्रि ६:१५	वृश्यिक रा०रो० ६:१५	मकर संक्रान्ति पुण्य काल (खिचडी पर्व)
१६.१.२६ शुक्रवार	त्रयोदशी रात्रि १०:२१	मूल समस्त	धनु	प्रदोष व्रत। मास शिवरात्रि व्रत। भद्रा रात्रि १०:२१ से।
१७.१.२६ शनिवार	चतुर्दशी रात्रि १२:०३	मूल दिन ८:३७	धनु	भद्रा दिन १२:१४ तक।
१८.१.२६ रविवार	अमावस्या रात्रि १:२०	पूर्वाषाढ़ा दिन ४:००	धनु सायं ५:१०	स्नान-दान-श्राद्ध की मौनी अमावस्या।

॥ जय गुरुदेव ॥

१९ जनवरी २०२६ से १ फरवरी २०२६ तक — श्री सूर्यो उत्तरायण- शिशिर ऋतुः

" माघ शुक्ल पक्ष "

दिनांक वार	तिथि समय समाप्ति काल में	नक्षत्र समय समाप्ति काल में	चन्द्रमा समय समाप्ति काल में	विवरण
१९.१.२६ सोमवार	प्रतिपदा रात्रि २:१०	उत्तराषाढा दिन १२:१५	मकर	गुप्त नवरात्र प्रारम्भ। वल्लभाचार्य जयन्ती। सर्वार्थ सिद्धि योग दिन १२:१८ से।
२०.१.२६ मंगलवार	द्वितीया रात्रि २:२६	श्रवण दिन १:२४	मकर रात्रि १:४०	पंचक प्रारम्भ रात्रि १:४० से।
२१.१.२६ बुधवार	तृतीया रात्रि २:१२	धनिष्ठा दिन १:५९	कुम्भ	राष्ट्रीय माघ मास
२२.१.२६ गुरुवार	चतुर्थी रात्रि१:२७	शतभिषा दिन २:१०	कुम्भ	वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत। भद्रा दिन १:५० से रात्रि १:२७ तक।
२३.१.२६ शुक्रवार	पंचमी रात्रि १२:२०	पूर्वाभाद्रपद दिन १:४६	कुम्भ दिन ७:५२	श्री वसन्तपंचमी (सरस्वती पूजन)। श्री नेताजी जयन्ती।
२४.१.२६ शनिवार	षष्ठी रात्रि १०:४६	उत्तराभाद्रपद दिन १२:५९	मीन	श्री शीतलाषष्ठी (बंगाल)
२५.१.२६ रविवार	सप्तमी रात्रि ८:५५	रेवती दिन ११:५७	मीन दिन ११:५८	अचला सप्तमी व्रत। भद्रा रात्रि ८:५८ से। पंचक समाप्ति दिन ११:५७ सर्वार्थ सिद्धि योग दिन ११:५७ तक।
२६.१.२६ सोमवार	अष्टमी सायं ६:४८	अश्विनी दिन १०:३६	मेष	भीष्माष्टमी भद्रा दिन ७:५० तक। भारतीय ७७ वाँ गणतन्त्र दिवस।
२७.१.२६ मंगलवार	नवमी सायं ४:३२	भरणी दिन ९:१०	मेष दिन २:४२	महानन्दा नवमी। सर्वार्थ सिद्धि योग दिन ९:१० से।
२८.१.२६ बुधवार	दशमी दिन २:१२	कृतिका/रोहिणी प्रातः ७:२५ ५:४५	वृष	सर्वार्थ सिद्धि योग समस्त। भद्रा रात्रि १:१० से।
२९.१.२६ गुरुवार	एकादशी दिन ११:५२	मृगशिरा रात्रि ४:१०	वृष सायं ४:५६	जया एकादशी व्रत सबका। भद्रा दिन ११:५० तक।
३०.१.२६ शुक्रवार	द्वादशी दिन ९:३२	आर्द्रा रात्रि २:३८	मिथुन	प्रदोष व्रत। तीन दिन माघ स्नान विशेष महात्मा गाँधी स्मृति दिवस शहीद दिवस।
३१.१.२६ शनिवार	त्रयोदशी/चतुर्दशी प्रातः ७:२६ ५:३०	पुनर्वसु रात्रि १:२२	मिथुन रात्रि ७:४२	भद्रा रात्रि ५:३० से।
१.२.२६ रविवार	पूर्णिमा रात्रि ३:५७	पुष्य रात्रि १२:२५	कर्क	स्थान-दान व्रत की माघी पूर्णिमा। भद्रा सायं ४:४२ तक। शुक्र का उदय पश्चिम मे। सन्त रवि दास जयन्ती।

२ फरवरी २०२६ से १७ फरवरी २०२६ तक

श्री सूर्यो उत्तरायण- शिशिर ऋतुः

" फाल्गुन कृष्ण पक्ष "

दिनांक वार	तिथि समय समाप्ति काल में	नक्षत्र समय समाप्ति काल में	चन्द्रमा समय समाप्ति काल में	विवरण
२.२.२६ सोमवार	प्रतिपदा रात्रि २:४२	अश्लेषा रात्रि ११:४६	कर्क रात्रि ११:४७	यायी जय योग।
३.२.२६ मंगलवार	द्वितीया रात्रि १:५५	मघा रात्रि ११:३३	सिंह	सिद्धि योग।
४.२.२६ बुधवार	तृतीय रात्रि १:३८	पूर्वाफाल्गुनी रात्रि ११:५०	सिंह रा०शे० ६:०८	शुक्र बालत्व की समाप्ति सायं ६:१८ से। भद्रा दिन १:४६ से रात्रि १:३८ तक।
५.२.२६ गुरुवार	चतुर्थी रात्रि १:५२	उत्तराफाल्गुनी रात्रि १२:३४	कन्या	संकष्टी श्री गणेश चतुर्थी व्रत। चन्द्रोदय रात्रि ९:२१।
६.२.२६ शुक्रवार	पंचमी रात्रि २:३६	हस्त रात्रि १:५२	कन्या	पश्चिम मे बुध का उदय।
७.२.२६ शनिवार	षष्ठी रात्रि ३:५०	चित्रा रात्रि ३:३५	कन्या दिन २:४४	भद्रा रात्रि ३:५० से। सर्वार्थ सिद्धि योग रात्रि ३:३५ से।
८.२.२६ रविवार	सप्तमी रात्रि ५:२९	स्वाती रात्रि ५:४४	तुला	भानु सप्तमी। भद्रा सायं ४:४० तक।
९.२.२६ सोमवार	अष्टमी समस्त	विशाखा समस्त	तुला रात्रि १:३३	जानकी जयन्ती। अष्टका श्राद्ध।
१०.२.२६ मंगलवार	अष्टमी प्रातः ७:२५	विशाखा प्रातः ८:१०	वृश्चिक	अन्वष्टका श्राद्ध।
११.२.२६ बुधवार	नवमी दिन ९:३४	अनुराधा दिन १०:४८	वृश्चिक	भद्रा रात्रि १०:४० से। सर्वार्थ तथा अमृत सिद्धि योग दिन १०:४६ तक।
१२.२.२६ गुरुवार	दशमी दिन ११:४४	ज्येष्ठा दिन १:२४	वृश्चिक दिन १:२५	भद्रा दिन ११:४५ तक।
१३.२.२६ शुक्रवार	एकादशी दिन १:४२	मूल दिन ३:४८	धनु	विजया एकादशी व्रत। (सबका) कुम्भ राशि का सूर्य दिन ८:३२, ६ घंटा २४ मिनट बाद पुष्य काल।
१४.२.२६ शनिवार	द्वादशी दिन ३:२२	पूर्वाषाढ़ा सायं ५:५५	धनु रात्रि ११:२२	शनि प्रदोष व्रत।
१५.२.२६ रविवार	त्रयोदशी सायं ४:३२	उत्तराषाढा रात्रि ७:४८	मकर	महाशिव रात्रि व्रत। शिव बरात शोभा यात्रा भद्रा सायं ४:३२ से रात्रि ४:५७ तक।
१६.२.२६ सोमवार	चतुर्दशी सायं ५:२०	श्रवण रात्रि ८:५२	मकर	शिवरात्रि व्रत का पारण। सर्वार्थ सिद्धि योग रात्रि ८:५० तक।
१७.२.२६ मंगलवार	अमावस्या सायं ५:३४	धनिष्ठा रात्रि ९:३५	मकर दिन ९:१४	स्नान-दान श्राद्ध की भौमवती अमावस्या। पंचक प्रारम्भ दिन ९:१४।

॥ जय गुरुदेव ॥

१८ फरवरी २०२६ से ३ मार्च २०२६ तक

श्री सूर्यो उत्तरायण- शिशिर ऋतुः

" फाल्गुन शुक्ल पक्ष "

दिनांक वार	तिथि समय समाप्ति काल में	नक्षत्र समय समाप्ति काल में	चन्द्रमा समय समाप्ति काल में	विवरण
१८.२.२६ बुधवार	प्रतिपदा सायं ५:१५	शतभिषा रात्रि ६:४६	कुम्भ	सन्धि कर योग।
१९.२.२६ गुरुवार	द्वितीया सायं ४:२८	पूर्वाभाद्रपद रात्रि ६:३४	कुम्भ दिन ३:३८	श्री राम कृष्ण परम हंस जयन्ती। छत्रपति शिवाजी जयन्ती। (नवीनतम)
२०.२.२६ शुक्रवार	तृतीया दिन ३:१४	उत्तराभाद्रपद रात्रि ८:५३	मीन	भद्रा रात्रि २:२८ से। सर्वार्थ तथा अमृत सिद्धि योग रात्रि ८:०५ से।
२१.२.२६ शनिवार	चतुर्थी दिन १:४२	रेवती रात्रि ७:५५	मीन रात्रि ७:५५	वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी व्रत। भद्रा दिन १:४२ तक। पंचक समाप्ति रात्रि ७:५५।
२२.२.२६ रविवार	पंचमी दिन ११:४४	अश्विनी सायं ६:३८	मेष	सर्वार्थ सिद्धि योग सायं ६:३७ तक।
२३.२.२६ सोमवार	षष्ठी दिन ९:३६	भरणी सायं ५:१०	मेष रात्रि १०:४५	होलाष्टक आरम्भ। अपने यहा इसका दोष नही होता है। कानपुर मे।
२४.२.२६ मंगलवार	सप्तमी/अष्टमी प्रातः ७:२० ४:५८	कृतिका दिन ३:३२	वृष	कामदा। सप्तमी व्रत। भद्रा दिन ७:२० से सायं ६:१२ तक। सर्वार्थ सिद्धि योग दिन ३:३२ तक।
२५.२.२६ बुधवार	नवमी रात्रि २:३४	रोहिणी दिन १:४२	वृष रात्रि १:०५	सर्वार्थ सिद्धि योग समस्त।
२६.२.२६ गुरुवार	दशमी रात्रि १२:१८	मृगशिरा दिन १२:१४	मिथुन	फागुदशमी (उडीसा)
२७.२.२६ शुक्रवार	एकादशी रात्रि १०:१०	आर्द्रा दिन १०:३९	मिथुन रात्रि ३:४२	आमल की एकादशी व्रत। (सबका) रंगभरी एकादशी। भद्रा दिन ११:१४ से रात्रि १०:१० तक। सर्वार्थ सिद्धि योग दिन ११:४० तक।
२८.२.२६ शनिवार	द्वादशी रात्रि ८:१४	पुनर्वसु दिन ९:२२	कर्क	गोविन्द द्वादशी।
१.३.२६ रविवार	त्रयोदशी सायं ६:४२	पुष्य दिन ८:१८	कर्क	प्रदोष व्रत। सर्वार्थ सिद्धि योग दिन ८:१८ तक।
२.३.२६ सोमवार	चतुर्दशी सायं ५:२८	अश्लेषा दिन ७:३५	कर्क दिन ७:३५	व्रत की पूर्णिमा। भद्रा सायं ५:२८ से रात्रि ५:१० तक। भद्रा पुच्छः रात्रि १:०५ से रात्रि २:१२ तक। होलिका दहन मुहूर्त है।
३.३.२६ मंगलवार	पूर्णिमा सायं ४:४४	मघा दिन ७:१८	सिंह	स्नान-दान पूर्णिमा। खण्ड ग्रास चन्द्र ग्रहण। ग्रहण का विवरण पृष्ठ संख्या ८ पर देखे।

४ मार्च २०२६ से १९ मार्च २०२६ तक — श्री सूर्यो उत्तरायण- शिशिर ऋतुः

" चैत्र कृष्ण पक्ष "

दिनांक वार	तिथि समय समाप्ति काल में	नक्षत्र समय समाप्ति काल में	चन्द्रमा समय समाप्ति काल में	विवरण
४.३.२६ बुधवार	प्रतिपदा सायं ४:२५	पूर्वाफाल्गुनी दिन ७:२८	सिंह दिन १:३७	होलिकोत्सव रंगोत्सव (होली)। रति काम महोत्सव।
५.३.२६ गुरुवार	द्वितीया सायं ४:४०	उत्तराफाल्गुनी दिन ८:१०	कन्या	भद्रा रात्रि ५:१० से।
६.३.२६ शुक्रवार	तृतीया दिन ५:२६	हस्त दिन ९:१६	कन्या रात्रि ११:२५	भद्रा सायं ५:२६ तक। संकष्टी श्री गणेश चतुर्थी व्रत। चन्दोदय रात्रि ८:५६। छत्रपति शिवाजी जयन्ती (प्राचीनतम)
७.३.२६ शनिवार	चतुर्थी सांय ६:४०	चित्रा दिन १०:५५	तुला	सर्वार्थ सिद्धि योग दिन १०:५५ से।
८.३.२६ रविवार	पंचमी रात्रि ८:१८	स्वाती दिन १२:५८	तुला	रंग पंचमी।
९.३.२६ सोमवार	षष्ठी रात्रि १०:१४	विशाखा दिन ३:२२	तुला दिन ८:४५	भद्रा रात्रि १०:१५ से। सर्वार्थ सिद्धि योग दिन ३:२१।
१०.३.२६ मंगलवार	सप्तमी रात्रि १२:२२	अनुराधा सायं ५:५६	वृश्चिक	भद्रा दिन ११:१८ तक।
११.३.२६ बुधवार	अष्टमी रात्रि २:२९	ज्येष्ठा रात्रि ८:३४	वृश्चिक रात्रि ८:३४	श्री शीतला अष्टमी व्रत। आजवासी भोजन करना चाहिए।
१२.३.२६ गुरुवार	नवमी रात्रि ४:२५	मूल रात्रि ११:०३	धनु	गुरु पूर्णा सिद्धि योग।
१३.३.२६ शुक्रवार	दशमी रात्रि ६:१०	पूर्वाषाढा रात्रि १:१५	धनु	भद्रा सायं ५:१२ से रा०शे ५:५९ तक।
१४.३.२६ शनिवार	एकादशी समस्त	उत्तराषाढा रात्रि ३:०३	धनु दिन ७:४२	मीन राशि का सूर्य रात्रि ३:४६। ६ घंटा २४ मिनट बाद पुष्य काल। खरमास प्रारम्भ। वसन्तु ऋतु प्रारम्भ।
१५.३.२६ रविवार	एकादशी प्रातः ७:१०	श्रवण रात्रि ४:२५	मकर	पापमोचनी एकादशी व्रत सबका।
१६.३.२६ सोमवार	द्वादशी दिन ७:५२	धनिष्ठा रात्रि ५:१४	मकर सायं ४:४८	सोम प्रदोष व्रत। पंचक प्रारम्भ सायं ४:४८।
१७.३.२६ मंगलवार	त्रयोदशी दिन ८:०३	शतभिषा रात्रि ५:३३	कुम्भ	मास शिव रात्रि व्रत। भद्रा दिन ८:०५ से रात्रि ७:५२ तक।
१८.३.२६ बुधवार	चतुर्दशी दिन ७:४२	पूर्वाभाद्रपद रात्रि ५:२४	कुम्भ रात्रि ११:२८	श्राद्ध की अमावस्या।
१९.३.२६ गुरुवार	अमावस्या/प्रतिपदा प्रातः ६:५० ५:३५	उत्तराभाद्रपद रात्रि ४:५२	मीन	स्नान-दान की अमावस्या। चान्द्र संवतसर २०८२ समाप्तिः। वासन्त नवरात्र प्रारम्भ आज ही कलश स्थापन-ध्वजा रोपण।

गणपति अथर्वशीर्ष

ॐ भद्रं कर्णेभिरित शान्तिः॥

ॐ नमस्ते गणपतये। त्वमेव प्रत्यक्षं तत्वमसि। त्वमेव केवलं कर्तासि। त्वमेव केवलं धर्तासि। त्वमेव केवलं हर्ताति। त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि। त्वं साक्षादात्मासि नित्यम् ।१।।

ऋमं वच्मि। सत्यं वच्मि ।।२।।

अव त्वं माम्। अव वक्तारम्। अव श्रोतारम्। अव दातारम्। अव धातारम्। अव अनूचानम। अव शिष्यम्। अव पश्चातात्। अव पुरस्तात्। अवोत्तरात्तात्। अव चोध्रातात्। अव दक्षिणात्तात्। अवाधरातात्। सर्वतो मां पाहि पाहि समन्तात् ।।३।।

त्वं वाङ्.मयस्त्वं चिन्मयः। त्वमानन्दमयस्त्वं बंह्ममयः। त्वं सच्चिदानन्दद्वितीयोऽसि। त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि ।।४।।

सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते। सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति। सर्वं जगदिदं त्वयिलयमेष्यति। सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति। त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिलो नभः। त्वं चत्वारि वाक्पदानि ।।५।।

त्वं गुणत्रयातीतः। त्वं वस्त्रात्रयातीतः त्वं कालत्रयातीतः। त्वं देहत्रयातीतः। त्वं मूलाधारस्थितोऽसि नित्यम्। त्वं शक्तित्रयत्मकः। त्वां योगिनोध्यायन्ति नित्यम्। त्वं ब्रह्म त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वमिन्द्रस्त्वमग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चन्द्रमास्त्वं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् ।।६।।

गणादि पूर्वमुच्चार्य वर्णादिं तदनन्तरम्। अनुस्वारः परतरः। अधेन्दुलसितम् तारेण रूद्धम। एतत्तव मनुस्वरूपम्। गकारः पूर्वारूपम्। अकारो मध्यमरूपम्। अनुस्वारश्चान्तरूपम्। बिन्दुरूत्तररूपम्। नादः सन्धानम्। संहिता सन्धिः। सैषा गणेशविद्या। गणक ऋषिः निचृद्गायत्री छन्दः। गणपतिर्देवता ॐ गं गणपतये नमः ।।७।।

एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात् ।।८।।

एकदन्तं चतुर्हस्तंपाश्मङ्कुशधारिणम्।
रदं चं वरदं हस्तैर्बिभ्राणं मूषकध्वजम्।।
रक्तं लम्बोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम्।
रक्तगन्धानुलिप्ताङगं रक्तपुष्पैः सुपूजितम्।।
भक्तानुकम्पिनं देवं गतकारणमच्तुतम्।
आविर्भूतं चं सृष्टयादौ प्रकृतेः पुरुषत्परम्।।
एवं ध्यायति यो नित्य स योगी योगिनां वरः ।।९।।

नमो व्रातपतये नमो गणपतये नमः प्रमथपतये नमस्तेऽस्तु लम्बोदरयैकदन्ताय
विध्ननाशिने शिवसुताय श्री वरद्मूर्तये नमः ।।१०।।

गणेश अथर्वशीर्ष का हिन्दी अनुवाद

गणपति को नमस्कार है, तुम्ही प्रत्यक्ष तत्व हो, तुम्हीं केवल कर्ता, तुम्ही केवल धारणकर्ता और तुम्ही केवल संहारकर्ता हो, तुम्हीं केवल समस्त विश्वरूप ब्रह्म हो और तुम्हीं साक्षात नित्य आत्मा हो ।।१।।

यथार्थ कहता हूँ। सत्य करता हूँ ।।२।।

तुम मेरी रक्षा करो। वक्ता की रक्षा करो। श्रोता की रक्षा करो। दाता की रक्षा करो। धाता की रक्षा करो। षडंग वेदविद् आचार्य की रक्षा करो। शिष्य की रक्षा करो। पीछे से रक्षा करो। आगे से रक्षा करो। उत्तर (वाम) भाग की रक्षा करो। दक्षिण भाग की रक्षा करो। ऊपर से रक्षा करो। नीचे की ओर से रक्षा करो। सर्वतोभाव से मेरी रक्षा करो, सब दिशाओं से मेरी रक्षा करो ।।३।।

तुम वाङ्मय हो, तुम चिन्मय हो। तुम आनन्दमय हो, तुम ब्रह्ममय हो, तुम सच्चिदानन्द अद्वितीय परमात्मा हो। तुम प्रत्यक्ष ब्रह्म हो। तुम ज्ञानमय हो विज्ञानमय हो ।।४।।

यह सारा जगत तुमसे उत्पन्न होता है। यह सारा जगत तुमसे सुरक्षित रहता है। यह सारा जगत तुममें लीन होता है। यह अखिल विश्व तुममें ही प्रतीत होता है। तुम्ही भूमि, जल, अग्नि, वायु और आकाश हो। तुम्हीं परा, पश्यन्ती, मध्यमा और वैखरी चर्तुविध वाक् हो ।।५।।

तुम सत्व-रज-तम इन तीनों गुणों से परे हो। तुम भूत भविष्यत्-वर्तमान-इन तीनों कालों से परे हो। तुम स्थूल, सूक्ष्म और कारण इन तीनों देहों से परे हो। तुम नित्य मूलाधार चक्र में स्थित हो। तुम प्रभु-शक्ति, उत्साह-शक्ति और मन्त्र शक्ति इन तीनों शक्तियों से संयुक्त हो। योगीजन नित्य तुम्हारा ध्यान करते हैं। तुम ब्रह्म हो, तुम विष्णु हो, तुम रूद हो, तुम इन्द्र हो, तुम अग्नि हो, तुम वायु हो, तुम सूर्य हो, तुम चन्द्रमा हो, तुम (सगुण) ब्रह्म हो। तुम (निर्गुण) त्रिपाद, भूःभुवःस्वःप्रणव हो ।।६।।

'गण' शब्द के आदि अक्षर गकार का पहले उच्चारण करके अनन्तर आदि वर्ण अकार का उच्चारण करे। उसके बाद अनुसार रहे। इस प्रकार अर्थचन्द्र से पहल शोभित हो 'गं' है, वह ओंकार के द्वारा रूद्ध हो अर्थात् उसके पहले और पीछे भी ओंकार हो। यही तुम्हारे मन्त्र का स्वरूप ऊं गं ऊं है 'गककार' पूर्वरूप है, 'अकार' मध्यरूप है, 'अनुस्वार' अन्त्यरूप है। 'बिन्दु' उत्तर रूप है। 'नाद' संधान है। 'संहिता' सन्धि है। ऐसी यह गणेश विद्या है। इस विद्या के गणक ऋषि हैं, निचृद् गायत्री छन्द है और गणपति देवता हैं। मन्त्र है – 'ऊँ गं गणपतये नमः ।।७।।

एकदन्त को हम सब जानते हैं, वक्रतुण्ड का हम ध्यान करते हैं। दन्ती हमको उस ज्ञान और ध्यान में प्रेरित करे ।।८।।

गणपतिदेय एकदन्त और चतुर्बाहु हैं। वे अपने चार हाथों में पाश, अंकुश, दन्त और वरमुद्रा धारण करते है। उनके ध्वज में मूषक का चिन्ह है। वे रक्तवर्ण, लम्बोदर, शूर्पकर्ण तथा रक्तवस्त्रधारी हैं। रक्त चन्दन के द्वारा उनके अंग अनुलिप्त हैं। वे रक्तवर्ण के पुष्पों द्वारा सुपूजित हैं। भक्तों की कामना पूर्ण करने वाले, ज्योतिर्मय, जगत के कारण, अच्युत तथा प्रकृति और पुरूष से परे विद्यमान वे पुरुषोत्तम सृष्टि के आदि में आविर्भूत हुए। इनका जो इस प्रकार नित्य ध्यान करता है, वह योगी योगियों में श्रेष्ठ है ।।९।।

व्रातपति को नमस्कार, गणपति को नमस्कार, प्रमथपति को नमस्कार, लम्बोदर, एकदन्त, विध्ननाशक, शिवतनय श्रीवरदमूर्ति को नमस्कार है।।१०।।

आनन्देश्वर बाबा की दिव्य स्तुति

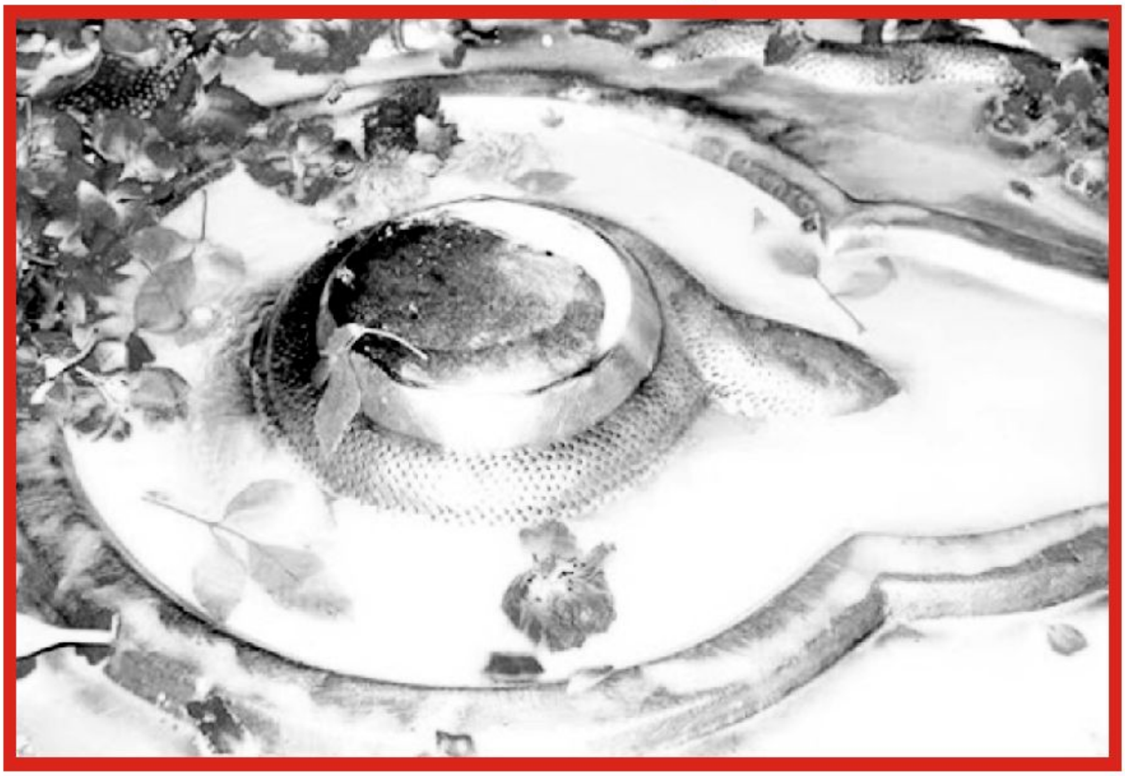

ब्रह्मा माने विष्णु माने, नारद वीणा से गायें। ॐ नमः शिवाय हरि ॐ नमः शिवाय।

जटा में जिनकी गंगा विराजें, मस्तक चन्द्र सुहाय। ॐ नमः शिवाय हरि ॐ नमः शिवाय।

गौरा जिनकी करें आरती, गणपति जिनके जाय। ॐ नमः शिवाय हरि ॐ नमः शिवाय।

हाथ कमण्डल गले में माला, बाघम्बर लपटाये। ॐ नमः शिवाय हरि ॐ नमः शिवाय।

नन्दी पर जो करें सवारी, नील कण्ठ कहलायें। ॐ नमः शिवाय हरि ॐ नमः शिवाय।

गोरे तन पर भस्म रमाकर, भाँग धतूरा खाये। ॐ नमः शिवाय हरि ॐ नमः शिवाय।

भोले भाले ओ भण्डारी, सबके कष्ट मिटायें। ॐ नमः शिवाय हरि ॐ नमः शिवाय।

यही मंत्र जपने से तेरा, कार्य सिद्ध हो जाये। ॐ नमः शिवाय हरि ॐ नमः शिवाय।

इतनी अर्ज सुनो मेरे बाबा, नित दर्शन को आये। ॐ नमः शिवाय हरि ॐ नमः शिवाय।

दिव्य नाम तेरा जपते जपते, प्राण बदन से जाये। ॐ नमः शिवाय हरि ॐ नमः शिवाय।

आनन्देश्वर बाबा मेरे, आनंद रहे लुटाये। ॐ नमः शिवाय हरि ॐ नमः शिवाय।

नर्ममदेश्वर बाबा मेरे सब कुछ रहे दिलाये। ॐ नमः शिवाय हरि ॐ नमः शिवाय।

मूकं करोति वाचालं, पंगुम लांघयते गिरिम।
यत्कृपा तमहं वन्दे, परमानन्द माधवम्।
जरत सकल सुर वृन्द, विषम गरल जेहि-पान किय।
तेहि न भजसि मति मन्द, को कृपाल शंकर सरिस॥

शिव लिंगाष्टक स्तोत्रम्

ब्रह्म-मुरारि-सुराऽर्चित-लिंगम्, निर्मल-भासित-शोभित-लिंगम् ।
जन्मज दुःख विनाशक लिंगम्, तत्प्रणमामि सदा शिव लिंगम् ॥1॥
देव मुनि प्रवरार्चित-लिंगम्, काम दहं करुणाकर लिंगम् ।
रावण दर्प विनाशन लिंगम्, तत्प्रणमामि सदा शिव लिंगम् ॥2॥
सर्व सुगन्धि सुलेपित-लिंगम, बुद्धि-विवर्धन-कारण-लिंगम्
सिद्धसुराऽसुर वन्दित लिंगम्, तत्प्रणमामि सदा शिव लिंगम् ॥3॥
कनक-महामणि-भूषित लिंगम्, फणिपति वेष्टित शोभित लिंगम् ।
दक्ष-सुयज्ञ विनाशक लिंगम्, तत्प्रणमामि सदा शिव लिंगम् ॥4॥
कुमकुम-चन्दन लेपित लिंगम्, पंकंजहार सुशोभित लिंगम् ।
संचित पाप विनाषन लिंगम्, तत्प्रणमामि सदा शिव लिंगम् ॥5॥
देवगणर्चित सेवित लिंगम्, भार्वेर्भक्तिभिरेव च लिंगम् ।
दिनकर कोटि प्रभाकर लिंगम्, तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम्॥6॥
अष्टदलोपरि वेष्टित लिंगम्, सर्वसमुद्भव-कारण लिंगम् ।
अष्टदरिद्र-विनाशित लिंगम्, तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम्॥7॥
सुरगुरु-सुरवर-पूजित-लिंगम्, सुरवन पुष्प सदार्चित लिंगम्।
परात्परं परमात्मक लिंगम्, तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥8 ॥

लिंगगाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेच्छिव-सन्निधौ।
शिव लोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥ 9॥

अथ शिवताण्डवस्तोत्र प्रारम्भः

जटाटवीगलज्जलप्रवाहपावितस्थले गलेऽवलम्ब्य लम्बितां भुजगंतुगंमालिकाम्।

डमड्डमड्डमड्डमन्निनादवड्डमर्वयं चकार चण्डताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम् ।।१।।

जटाकटाहसंभ्रमभन्निलिम्पनिर्झरी- विलोलवीचिवल्लरी विराजमानमूर्द्धनि।

धगद्धगद्धगज्ज्वलल्लाटपट्टपावके किशोरचन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम ।।२।।

धराधरेन्द्रनन्दिनीविलासबन्धुबन्धर स्फुरद्दुगन्तसन्ततिप्रमोदमानमानसे।

कृपाकटाक्षधोरणीनिरुद्धदुर्धरापदि, क्वचिद्दिगम्बरे मनो विनोदमेतु वस्तुनि ।।३।।

जटाभुजंगपिगंलस्फुरत्फणामणिप्रभा- कदम्बकुंकुमद्रवप्रलिप्तदिग्वधूमुखे।

मदान्धसिन्धुरासुरत्वगुत्तरीयमेदुरे, मनो विनोदमभ्दुतं बिभर्तु भूतभर्तरि ।।४।।

ललाटचत्वरज्वलद्धनज्जयस्फुलिंगया, निपीतपंचसायकं नमन्निलिम्पनायकम्

सुधामयूखरेखया विराजमानशेखरं, महः कपालि संपदे सरिज्जटालमस्तु नः ।।५।।

सहस्रलोचनप्रभृत्यशेषलेखशेखर- प्रसूनधूलिधोरणीविधूसरांध्रिपीठभूः।

भुजंगराजमालया निबद्ध जाटजूटकः, श्रिये चिराय जायतां चकोरबन्धुशेखरः ।।६।।

करालभालपट्टिकाधगद्धगद्धगज्जवल- द्धनंजयाहुतीकृतप्रचण्डपन्चसायके।

धराधरेन्द्रनन्दिनीकुचाग्रचित्रपत्रक - प्रकल्पनैकशिल्पिनि त्रिलोचने रतिर्मम ।।७।।

नवीनमेघमण्डलीनिरुद्धदुर्धरस्फुरत्, कुहूनिशीथिनीतमः प्रबन्धबद्धकन्धरः।

निलिम्पनिर्झरीधरस्तनोतु कृत्तिसुन्दरः कलानिधानबन्धुरः श्रियं जगद्धुरन्धुरः ।।८।।

प्रफुल्लनीलपकंजप्रपन्चकालिमप्रभा- बलम्बिकण्ठकन्दलीरुचिप्रबद्धकन्धरम्।

स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं, गजच्छिादान्धकच्छिदं तमन्तकच्छिदं भजे ।।९।।

अखर्वसर्वमंगलाकलाकदम्बमन्जरी- रसप्रवाहमाधुरीविजृम्भणीमधुव्रतम्।

स्मरान्तकंपुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं, गजान्तकान्धकान्तकं तमन्तकान्तकं भजे ।।१०।।

जयत्यदभ्रविभ्रमभ्रमद्भुजंगमश्वसद्, विनिर्गमक्रमस्फुरत्करालभाँलहव्यवाट्।

धिमिंधिमिंधिमिध्वनन्दमृदंगतुंगमंगल - ध्वनिक्रमप्रवर्तितप्रचण्डताण्डवः शिवः ।।११।।

दृषद्विचित्रतल्पयोर्भुजंगमौक्तिकस्रजो, र्गरिष्ठरत्नलोष्ठयोः सुहृद्विपक्ष पक्षयोः।

तृणारविन्दचक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः, समप्रवृत्तिकः कदा सदाशिवं भजाम्यहम् ।।१२।।

कदा निलिम्पनिर्झरीनिकुंजकोटरे वसन्, विमुक्तदुर्मतिः सदा शिरस्थमंजलिं वहन्।

विलोललोललोचनाललामभाललग्नकं, शिवेति मन्त्रमुच्चरन्सदा सुखी भवाम्यहम् ।।१३।।

निलिम्पनाथनागरीकदम्बमौलिमल्लिका, निगुम्फनिर्भरक्षरन्मधूष्णिकामनोहरः।

तनोतु नो मनोमुदं विनोदिनीमहर्निशं, परश्रियः परं पदं तदंगजत्विषां चयः ।।१४।।

प्रचण्डवाडवानलप्रभाशुभप्रचारिणी, महाष्टसिद्धिकामिनीजनावहूतजल्पना।

विमुक्तवामलोचनाविवाहकालिकध्वनिः, शिवेति मन्त्रभूषणं जगज्जयाय जायताम् ।।१५।।

इमं हि नित्यमेवमुक्तमुत्तमोत्तमं स्वतं, पठन् स्मरन् ब्रुवन् नरो विशुद्धिमेति सन्ततम्

हरे गुरौ सुभक्तिमाशु याति नान्यथा गतिं, विमोहनं हि देहिनां सुशंकरस्य चिन्तनम् ।।१६।।

पूजावसानसमये दशवक्त्रगीतं, यः शम्भुपूजनमिदं पठति प्रदोषे।।

तस्य स्थिरां रथगजेन्द्रतुरंगयुक्तां, लक्ष्मी सदैव सुमुखीं प्रददाति शम्भुः ।।१७।।

इति रावणकृत शिवताण्डवस्तोत्रं सम्पूर्णम्!

श्री आदि शंकराचार्य रचित कनकधारा स्तोत्र का हिन्दी रूपान्तर

अंग अंग से पुलकित होकर, स्वर्ण प्रदान करो माता।
मेरे शून्य सदन के अन्दर, स्थिर सुख शान्ति भरो माता।

अलिका सी श्री हरि के मुख पर, मुग्ध हुई मंडराती हो,
तरु तमाल सी आभा पाकर, शरमाती भरमाती हो
लीलामयी दया की दृष्टि, मुझको दान करो माता।
मेरे शून्य सदन के अन्दर, स्थिर सुख शान्ति भरो माता ... १.
देवाधिप को वैभव देती, दें आनन्द मुरारी को,
नीलकमल की सहोदरा माँ, सरसाती हर क्यारी को,
वही मधुर ममता की दृष्टि, मुझे प्रदान करो माता। मेरे ... २.
कोटि काम छवि के अभिनेता, सतचित आनन्द ईश मुकुन्द,
जिनके हृदय कमल में राजी, मना रही अतिशय आनन्द,
शेषशायिनी श्री हरि माया, मुझको धन्य करो माता। मेरे ... ३.
मधुसूदन के वक्षस्थल पर, कौस्तुभ मणिका राज रही,
कमल वासिनी श्री की आभा, जिनके अन्दर साज रही,
नीलाभापति का मन हरती, मेरी विपति हरो माता। मेरे ... ४.
जैसे श्याम घटा सुषमा में, विद्युत कान्ति चमकती है,
वैसे हरि के हृदय कमल में, माता ! आप दमकती हैं,
भार्गव नन्दिनि विश्व वन्दिनी, दिव्य प्रकाश भरो माता। मेरे ... ५.
सिन्धुसुता श्री की सुन्दरता, मन्धगति महिमा वाली,
मधुसूदन का मन हरती हैं, मंगल मुख गरिमा वाली,
स्नेहमयी दारिद्रय हारिणी, दुख दारिद्रय हरो माता। मेरे ... ६.
श्री नारायण की प्रिय प्राणा, करूणा मयि करूणा कर दो,
मेरे पाप ताप सब मेटो मेरा गृह सुख से भर दो,
मैं प्यासा हूँ जन्म जन्म का, शुभ जल वृष्टि करो माता। मेरे ... ७.
पदमासना पद्मजा पदमा, बुध जन तुम्हें मनाते है,
तेरी अनुपम अनुकम्पा से, अनुपम साधन पाते हैं,
मेरी सब अभिलाषा पूरी, मम गृहवास करो माता। मेरे ... ८.
ब्रह्म शक्ति बनकर जग रचती, लक्ष्मी बन पालन करती,
शिव शक्ति बन प्रलय मचाती, तीन रूप धारण करती,
शाकम्भरी शारदा श्री माँ, ज्ञान प्रदान करो माता । मेरे ... ६.

शुभ कर्मो का फल प्रदायिनी, दुष्कर्मों का करती अन्त,
सहज कमल दल में निवासिनी, रमा शक्ति समृद्धि अनन्त,
पुरुषोत्तम की प्राण वल्लभा, परम प्रकाश भरो माता।
मेरे शून्य सदन के अन्दर, स्थिर सुख शान्ति भरो माता ... १०.
क्षीरसिन्धु तनया शशिभगिनी, अमृत सहोदरा शुभ रुप,
नारायण की मरम प्रेयसी, कमल मुखी सौम्या श्री रूप,
बारम्बार प्रणाम आपको, मम दुर्भाग्य हरो माता। मेरे ... ११.
मातु आपकी सतत् वन्दना, करती सुख साम्राज्य प्रदान,
पाप ताप सन्ताप मिटाती, देती सब साधन सम्मान,
चरण वन्दना करू आपकी, शुभ सद्भक्ति भरो माता। मेरे ... १२.
जिनकी कृपा कटाक्ष मात्र से, पूर्ण मनोरथ होते हैं,
विपुल विभव सन्तति सुख मिलते, दुःख दरिद्र सब खोते हैं।
तन मन वचन कर्म से सुमिरों, मन में हर्ष भरो माता। मेरे ... १३.
कमल कुन्ज कलिका निवासिनी, हरि पत्नी आनन्दमयी,
श्वेताम्बरा गन्ध माला में, कमल कान्ति नित नवल नयी,
त्रिभुवन को वैभव प्रदायिनी, मुझको मत विसरो माता। मेरे ... १४.
गगन जान्हवी नीर क्षीर से, जिनका हो अभिषेक सदा,
उन्ही जगनायक की प्रणया, हो मुझपर मांगल्य मुदा,
प्रणत प्रभात प्रणाम आपको, स्वीकारो मेरी माता। मेरे ... १५.
कमल नयन की प्राण बल्लभे, अग्रगण्य मैं दीन दुखी,
मातु सहज करूणा की सागर, कर दो तत्क्षण मुझे सुखी,
मुझ पर दयादृष्टि बरसा कर, अभ्युत्थान करो माता। मेरे ... १६.
लक्ष्मी के इस कनक स्त्रोत्र का, तीन काल जो पठन करें,
त्रिभुवन को सुख देने वाली, सुख से उनका सदन भरें,
शुभ सौभाग्य सहज में देकर, विपति हरे माँ जल जाता। मेरे ... १७.
आद्य शंकराचार्य रचित यह, कनक स्त्रोत जो गाते हैं,
माँ लक्ष्मी की अनुकम्पा से, सब सुख साधन पाते हैं,
करती हैं कल्याण शीघ्र ही, त्रिभुवन की माँ सुखदाता। मेरे ... १८.

कमल कान्ति करूणामयी करूणा की अवतार, माँ लक्ष्मी करूणा करो, करो कनक बौछार॥
मेरे दुःख दारिद्र हरो, करो सिद्धियाँ दान, माँ कनके मेरा करो, पद पद पर कल्यान ॥

।। काल सर्पयोग और निवारण के उपाय ।।

परिभाषा :- कालसर्प योग उसे कहते हैं जो राहु हेतु के अन्दर सभी ग्रहो के स्थिति होने से कालसर्प योग का पूरा प्रभाव होता है। उसे काल सर्प योग कहते है। काल सर्प योग के निम्न भेद इस प्रकार है -

१.	अनन्त नामक कालसर्प योग।	७.	लक्षक नामक कालसर्प योग।
२.	कुलिक नामक कालसर्प योग।	८.	करर्कोटक नामक कालसर्प योग।
३.	वासुकि नामक कालसर्प योग।	९.	शंख चूर्ण नामक कालसर्प योग।
४.	शंखपाल नामक कालसर्प योग।	१०.	घातक नामक कालसर्प योग।
५.	पद्म नामक कालसर्प योग।	११.	विषधर नामक कालसर्प योग।
६.	महापद्य नामक कालसर्प योग।	१२.	शेषनाग नामक कालसर्प योग।

लेकिन व्यावधानिक परीक्षण से विद्वानों ने २८८ प्रकार के कालसर्प योग बताये हैं।

१. **अनन्त नामक कालसर्प योग** :- लग्न से लेकर सप्तम भाव पर्यन्त राहु केतु में फसे ग्रहों के मध्य अनन्त नामक कालसर्प योग कहलाता है। ऐसे जातक को आगे बढ़ने में काफी संघर्ष करना पडता है। वैवाहिक जीवन कष्टमय होता है। मानसिक परेशानी बढ़ती जाती है।

२. **कुलिक नामक कालसर्प योग** :- द्वितीय स्थान से अष्टम स्थान के मध्य पड़े ग्रहो कि स्थिति के कारण कुलिक नामक कालसर्प योग बनता है। ऐसे जातक को संघर्षमय जीवन परेशानी युक्त खर्च बढ़ता रहता है, और अस्वस्थ रहता है। और व्यक्ति कुलीन होते हुए कंगाल हो जाता है।

३. **वासुकि नामक कालसर्प** :- तृतीय भाव से नवम भाव के मध्य स्थिति के कारण वासुकि नामक कालसर्पयोग होता है। इस योग वाले जातक को भाई, बहिन, मृतजनों से परेशानी बढ़ती रहती है। नौकरी धंधे में परेशानी बनी रहती है परिजनों में हमेशा मुसीबत का सामना करना पडता है।

४. **शंखपाल नामक कालसर्प योग** :- चतुर्थ भाव से लेकर दशम स्थान पर्यन्त राहु केतु के अन्दर कैद ग्रहो की स्थिति के कारण शंषपाल नामक कालसर्पयोग बनता है। इस योग वालों की माता, बहन, नौकर को लेकर परेशानी, पिता की ओर से कष्ट मिलता है। विद्या अध्ययन में बाधा एवं विश्वासघात का सामना करना पडता है।

५. **पद्म नामक कालसर्प** :- पंचम स्थान के एकादश स्थान तक स्थन पर्यन्त स्थिति के कारण पद्म नामक कालसर्पयोग बनता है। इस योग वाले जातक को विद्या अध्ययन में रूकावट, सन्तान की चिन्ता रहती है, जीवन साथी विश्वास पत्र नहीं मिलता। जिस कार्य में हाथ डालें वह पूर्ण नहीं होगा।

६. **महापदम् नामक कालसर्प योग** :- षष्टम स्थान में बारहवां स्थान के पर्यन्त ग्रहों की स्थिति के कारण महापद्म नामक कालसर्पयोग बनता है। इस योग के कारण

जातक का चरित्र हास्याप्रद रहता है। बाधायें बहुत होती है। निराश की भावना बनी रहती है। जीवन कष्ट मय होता है, निरन्तर संघर्ष बना रहता है।

७. **तक्षक नामक कालसर्प योग:-** सप्तम स्थान में लग्न प्रथम भाव तक राहु केतु के बीच फंसे ग्रहों के कारण तक्षक नामक कालसर्पयोग होता है। ऐसे व्यक्ति का वैवाहिक जीवन तनाव पूर्व रहता है जीवन साथी से विछोह प्रेम प्रसंग में असफलता होती हैं। बने कार्यों में रूकावट आती है। भागीदारों एवं मित्रों से धोखा हो सकता है।

८. **कर्कोटक नामक कालसर्प योग :-** अष्टम स्थान से लेकर द्वितीय भाव पर्यन्त ग्रह स्थिति के कारण कर्कोटक नामक कालसर्प योग होता है। इस योग के कारण जातक की अल्पआयु दुर्घटना का योग होता है। स्वास्थ्य चिंताजनक रहता है।प्रयत्न करने पर भी असफलता बनी रहती है। परिवार में अपयश समाज में सम्मान नहीं मिल पाता।

९. **शंखचूर्ण नामक कालसर्प योग:-** नवम स्थान से तृतीय स्थान के पर्यन्त ग्रह स्थिति के कारण शंखचूड़ नामक कालसर्प योग बनता है। इसके कारण जातक को भाग्यउदय में परेशानी। मित्रों से शत्रुता राजयुक्त नौकरी में भय बना रहता है। शिश्ते-नाते दारों से सम्बन्ध खराब होता हैं। जीवन कष्टमय होता है।

१०. **घातक नामक कालसर्प योग:-** दशम स्थान पर्यन्त ग्रसित ग्रहों के कारण घातक नामक काल सर्पयोग होता है। इस योग के कारण भागीदारों में मन मुटाव, सरकारी अधिकारियों से तनाव, परिवार में विग्रह, चिंता जनक, निरन्तर व्यवहारिक एवं ग्रहस्थ जीवन कष्टमय होगा।

११. **विषधर नामक कालसर्प योग:-** एकादश स्थान से पंचम स्थान पर्यन्त ग्रहों के स्थिति के कारण विषधर नामक कालसर्पयोग बनता है। इस योग के करण ज्ञानर्जन में दुविधा होता है। उच्च शिक्षा में बाधा, चाचा, ताऊ, नाना, नानी इन सबसे पूर्ण लाभ नहीं, होता, स्थान सुख नहीं होगा। जीवन संतान विहीन होगा।

१२. **शेषनाग नाकम कालसर्प योग:-** द्वादश स्थान में षष्टम स्थान पर्यन्त ग्रह स्थिति के कारण शेषनाग नामक काल सर्प योग बनता है। इस योग के कारण जन्म स्थान देश से दूरी सदैव संघर्षशील स्थिति नेत्रपीड़ा ऐसे जातक गुप्तरोग, शत्रुता बहुत होती है। इनको मरने के बाद ख्याति प्राप्त होती है। इसका कोई भी कार्य देर से होता है।

।। काल सर्पयोग और निवारण के उपाय ।।

कालसर्पयोग से बचने के लिए कालसर्पयोग की पूजा करन चाहिए। यह पूजा गंगा के किनारे, शिव रुद्राभिषेक कराकर नागों की षोडशोंपचार पूजा करानी चाहिए पूजा करानी चाहिए पूजा के बाद हवन विधि भी जरूरी है। पूजा मे बारह नाग की जरूरत होती है, वह नाक चांदी, सोना तांबे से बने हो। हवन करने के बाद इन्हें जल में प्रवाह करना चाहिए या ब्राह्मण को दान करें। जातक को सहस्त्र गंगा स्थन करना चाहिए वस्त्र को गंगा घाट पर ही छोड़ देना चाहिए और यह इससे बचने की सबसे बड़ी क्रिया है।

॥ जय गुरुदेव ॥

राशिफलम् संवत् २०८२

मेषः- चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ

अप्रैल- मास में कोई नया काम करने में सफल होंगे। नवनिर्माण तथा देवदर्शन की इच्छा बलवन्ती होगी। नित नई योजना की उधेड़बुन लगी रहेगी। मई- मास ग्रहगति के अनुसार अति उत्तम रहेगा। भौतिक सुख-समृद्धि व्यवसायिक वृद्धि का योग है। राजनीतिक परिचर्चा, स्वास्थ्य हानि, आलस्य प्रमाद से बचे रहें। जून- अद्योगधन्धे में आश्चर्यजनक लाभ की संभावना है अत्याधिक भागदौड़ का चक्र चलेगा। असामान्य परिस्थितियों का डटकर सामना करें। योजना पूर्ति से लाभ। जुलाई- विरोधी परास्त होंगे। समय के स्वरूप को ध्यान में रखते हुए काम करें। दीर्घकालीन विवाद निवृत्ति से चित्त प्रसन्न होगा। अगस्त- मास कुछ उपलब्धियाँ लेकर आ रहा है। यह मास अजीबोगरीब परिवर्तन के लिए स्मरणीय रहेगा। रचनात्मक कार्य, भूमि के क्रय-विक्रय से लाभ होगा। विवाद सुलझेगा। सितम्बर- नये काम के संदर्भ में अनिश्चितता बनी रहेगी। प्रतियोगिता में विजय, घर में नई खुशी सम्भव है। रुका हुआ धन देर से मिलेगा। समय का सही उपयोग करें। अक्टूबर- कारोबार के विचार से मध्यम रहेगा। उच्चाधिकारियों की हाँ में हाँ मिलाते रहें। घर गृहस्थी की चिन्ता सतायेगी। नवम्बर- असफलता के मध्य सफलता का योग है। आगम प्राप्ति का रास्ता मेहनत से बनेगा। युवा वर्ग में मित्रों के साथ सैर-सपाटे का कार्यक्रम बनेगा। दिसम्बर- अनिवार्य प्रवास, सामाजिक धार्मिक कामों के पूर्ण होने के सुयोग हैं। पदाधिकार की चिन्ता अन्तर्विरोध को जन्म दे सकती है। मनोरंजन का अवसर मिलेगा। जनवरी- पूर्वापेक्षा लाभाधिक्य व्यय कम, परिस्थितियों में सुधार आयेगा। अमर्यादित व्यवहार से क्षोभ सम्भव है। जन सम्पर्क से प्रतिष्ठा बढ़ेगी। फरवरी- बनते-बिगड़ते परिवेश में नये आयाम मिलेंगे। अधूरी योजनापूर्ति में सहयोग मिलेगा। आयोजन में प्रियभोज का लाभ, गृहखर्च में वृद्धि होगी। मार्च- भूमि वाहन अन्यान्य वस्तु का लेन-देन होगा। कुछ समय तक योजनाएं बनती-बिगड़ती रहेंगी। मिथ्याभियोग बन्धु विरोध क्षोभ का कारण बन सकता है।

वृषः- इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू वे, वो

अप्रैल- सुषुप्त चेतना जागृत होने से नवीन कार्य का विचार पूरा होगा। सुखद स्मृततियों के बीच मंगलोत्सव का अनुभव होगा। संयम बरतें, अन्यथा हानि उठानी पड़ेगी। मई- गोचर ग्रहानुसार व्यवसाय में बदलाव के योग बन रहे हैं। आप अचानक किसी व्यक्ति विशेष के प्रति आकर्षित हो सकते हैं। कोई रुका हुआा काम बनेगा। जून- गोचर ग्रहानुसार अर्थागमन, व्यवसाय वृद्धि की चिन्ता व्याप्त रहेगी। बनते-बिगड़ते परिवेश में नई योजना सफल होगी। स्थानांतरण तथा लम्बी यात्रा श्रेष्ठ नहीं। जुलाई- गोचरग्रह शुभ परिवर्तन के सूचक हैं। वृष राशि वालों के लिए व्यसवसायिक रद्दोबदल ठीक नहीं। राजकीय मान-सम्मान के साथ पदोन्नति मिलेगी। अगस्त- निर्माण एवं मंगलोत्सव में व्यय अधिक होगा। किंचित विवाद भी सम्भव है। लाभ का नया मार्ग प्रशस्त होगा, कुसंगति से बचे रहें। सितम्बर- व्यवसायिक गतिरोध नई चिन्ताओं को जन्म दे सकता है। अप्रासंगिक वातावरण, अनपेक्षित व्यवहार क्षोभ का कारण बन सकता है। मंगलोत्सव मिलन होगा। अक्टूबर- स्वजन समागम, हर्षोल्लास के साथ लाभप्रद योजना में रुचि बनेगी। पारिवारिक अन्यर्विरोध कुघटनाचक्र को जन्म दे सकता है। संयम बरतें, अपव्यय से बचें। नवम्बर- कहीं से खुशी का समाचार मिलेगा। लम्बी यात्रा, अभिष्ट लाभ से मन प्रसन्न रहेगा। आशातीत लाभ के योग बन रहे हैं। रोग, ऋण से प्रतिक्षण सचेत रहें। दिसम्बर- नित नया कुछ करने की जिज्ञासा बलवन्ती होगी। चिरस्मरणीय कार्य सम्पन्न होगा। घर में नये मेहमान के आवागमन से हर्ष होगा। जनवरी- दैनिक कार्यों में सुधार मान-सम्मान में वृद्धि होगी। पर्याप्त मेहनत से योजना कारगर होगी। गृह उपयोगी वस्तु खरीदी जायेगी। फरवरी- समय के सदुपयोग से कार्य व्यवसाय में लाभ होगा। कानूनी वाद-विवाद से बचे रहें। घर में नई खुशी सम्भव है। साथी के स्वास्थ्य की चिंता बनी रहेगी। मार्च- नई परिस्थितियों से गुजरना पड़ सकता है। बन्धुओं से इच्छित सहयोग मिलेगा। यात्रा छोटी व सुखद रहेगी। चल अचल सम्पतित्त का लाभ मिलेगा।

मिथुनः- का, की, कू, घ, ङ, छ, के को, हा

अप्रैल- काम का बोझभार बढ़ेगा। राज समाज में सम्मान मिलेगा। मासान्त में नयेपन का अनुभव होगा। नवीन विषय के प्रति जिज्ञासा बनेगी। मई- नई परिस्थितियों से गुजरना पड़ सकता हैं। सत्कर्मों में रुचि बनेगी। समस्या का समाधान मिलेगा। जमाखर्च में सन्तुलन बनाये रखें। जून- खरीद-फरोख्त से लाभ होगा। प्रेम प्रसंग के चक्कर में हानि भी उठानी पड़ सकती है। बच्चों से मन प्रसन्न रहेगा। परिश्रम से सफलता मिलेगी। जुलाई- अकर्मण्यता शुभ फलों में बाधक है। हरिभजन, देवदर्शन का संयोग बनेगा। कानूनी विवाद राजनीतिक परिचर्चा में परेशानी होगी। अगस्त- किसी नये विषय में जिज्ञासा होगी। महिलाओं का समय खरीदारी साजश्रृंगार में आनंदपूर्वक बीतेगा। साथी की चिंता सतायेगी। सितम्बर- गृहस्थी में कटुता-पादिता तदन्तर सरसता का योग बनेगा। लेन-देन में झन्झट बढ़ सकता है। रोजमर्रा के कामों में कोताही न बरतें। अक्टूबर- मास में धार्मिक सत्संग, वैवाहिक कार्यक्रमों से मन प्रसन्न होगा। कहीं घूमने-फिरने का अवसर मिलेगा। सहयाग से अधूरा पड़ा काम पूरा होगा। नवम्बर- नौकरी पेशावर्ग फायदे में रहेगा। किसी की कही सुनी बातों में न आयें। अधिकांश समय बाल बच्चों के साथ हंसी-खुशी से बीतेगा। दिसम्बर- स्थानान्तरण का सुयोग है। विरोधी पड्यन्त्र रचेंगे। सामाजिक धार्मिक काम से कहीं जाना होगा। बाल बच्चों में हास्य रस बढ़ेगा। जनवरी- विवादास्पद प्रकरण में नया मोड़ आयेगा। व्यापारिक बुद्धि वाले फायदे में रहेंगे। पारिवारिक खुशी की खबर मिलेगी। उत्तरदायित्व को निष्ठापूर्वक निभायें। फरवरी- समय की चाल समझते हुए काम करें। व्यापार में सहयोग अपेक्षित रहेगा। सफलता सुनिश्चित जानें। अच्छी खबर मिलेगी। मार्च- व्यवसायिक समझौते में लाभ होगा। किसी मित्र परिजन की चिन्ता सतायेगी। चौपाये का साथ श्रेष्ठ नहीं। कानूनी झमेले में पड़ सकते है।

कर्कः- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो

अप्रैल- प्रियवस्तु के मिलने से मन प्रसन्न होगा। अनजान से दोस्ती का हाथ न मिलायें। महिलाओं का समय घरगृहस्थी के कार्यों में बीतेगा। मई- नये काम की रूपरेखा बनेगी। पड़ौसी से सद्भाव बनाये रखें। बढ़ते उत्तरदायित्व निष्ठापूर्वक निभायें। विरोधी पड्यन्त्र से बचें। मंगलोत्सव में जाने का अवसर मिलेगा। जून- हर्षविवाद के योग समान हैं। व्यर्थ की राजनीतिक कुचक्र रचना से बचें। वैवाहिक जीवन में खुशियों का संचार होगा। कहीं से शुभाशुभ खबर मिलेगी। जुलाई- परिवार में सामंजस्य बनाये रखें। व्यापर में कठिन परिश्रम भविष्य में लाभ देगा। कुछ समय व्यर्थ उल्ग्न में बीतेगा। दाम्पत्य में सरसता बनेगी। अगस्त- चल-अचल सम्पत्ति का लाभ मिलेगा। बैंक बैलेन्स में वृद्धि होगी। चल रहे साम्यक कार्यों मे सजगता बरतें। घर गृहस्थी की चिन्ता सतायेगी। सितम्बर- पदाधिकार की चिन्ता अन्तर्विरोध को जन्म दे सकती है। मास का अधिकांश समय हर्षोल्लास से बीतेगा। खेलकूद प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी। अक्टूबर- भौतिक सुखोपभोग के साधन सुलभ होंग। लम्बी यात्रा का संयोग बन सकता है। देश विदेश से समाचार मिलेगा। उत्तरार्ध दुविधाजनक होगा। नबम्बर- मास में सत्कर्मजन्य पुण्यार्जन से अभिष्ट सिद्ध होगा। यशकीर्ति का विस्तार होगा। स्थायी सम्पत्ति की खरीद-फरोख्त होगी। दिसम्बर- आगंतुक मेहमान की खुशी होगी। सामाजिक व अध्यात्मिक उन्नति होगी। व्यापर व उद्योग में किंचित अवरोध के बाद सफलता मिलेगी। जनवरी- मास की ग्रहचाल सामान्य फलदायक है। बच्चों में हास्यरस चलता रहेगा। अनावश्यक दु:श्चिन्ताओं को अपने ऊपर हावी न होने दें। फरवरी- मौसम की प्रतिकूलता के चलते स्वास्थ्य हानि से बचें। लम्बी यात्रा का योग बन सकता है। चौपाया वाहनादि का लाभ होगा। मार्च- उच्चाधिकारियों की घनिष्ठता से लाभ होगा। कार्यालय में अतिरिक्त कार्यभार बढ़ सकता है। चौपाये से सावधान रहें। प्रेम प्रसंग का चक्कर चल सकता है।

सिंहः- मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे

अप्रैल- मन पूरी तरह जोश से भरा रहेगा। अनजान व्यक्ति के व्यवहार से बचें। घर-गृहस्थी में परस्पर विरोधपूर्ण वातावरण बनेगा। आर्थिक मामलों में सफलता मिलेगी। मई- ग्रहानुसार व्यवसाय में बदलाव के संकेत हैं। खास प्रयोजन से कहीं जाना होगा। चल रहे विवाद की विकराल रूप धरने से पहले समाप्त करने का प्रयास करें। जून- मास सामान्य फलदायी है। व्यवसाय में नई पहल से लाभ होगा। अनावश्यक

घूमने-फिरने में अपना समय नष्ट न करें। राजनीतिक सम्पर्क से फायदा होगा। जुलाई- उत्तमभोजन, वस्त्र, संगीत का आनंद प्राप्त होगा। घर गृहस्थी में छोटे-मोटे विवाद हो सकते हैं। विचाराधीन काम देर से बनेगा। अगस्त- भाग्य विकास एवं लम्बी यात्रा का संयोग बनेगा। घर गृहस्थी का कोई उपकरण खरीदा जायेगा। कानूनी विवाद समझौते के तहत सुलझेगा। सितम्बर- व्यवसाय में ठहराव से क्षोभ सम्भव है। बेवजय हानि, मामूली शारीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। पड़ौसियों से संबंध अच्छे होंगे। अक्टूबर- किसी खास विषय, धर्म, अध्यात्म में अचानक आस्था जागृत होगी। घर गृहस्थी में सामंजस्य बनाए रखें। विरोधी आपको नुकसान पहुँचा सकते हैं। नवम्बर- बिगड़े हुए काम बनेंगे। वाहनादि क्रय-विक्रय का अवसर मिलेगा। जनसम्पर्क बढ़ेगा, लाभ के योग हैं। लम्बी यात्रा अनुकूल नहीं रहेगी, शारीरिक कष्ट सम्भव। दिसम्बर- नवनिर्माण की योजना कार्यरूप लेगी। नौकरी में स्थानान्तरण शुभ नहीं हैं। आप अपने स्वास्थ्य सौंदर्य के प्रति सजग होंगे। इष्ट मित्र समागम हर्षोल्लास। जनवरी- आशा पर निराशा के योग हावी हो सकते हैं। पर्याप्त लाभोन्नति के लिए काला कम्बल, तेल आदि दान दें। अनजान व्यक्ति से सावधान रहें। फरवरी- मास कुछ विशेषताएं लिए आ रहा है। बढ़ती जिम्मेदारियों को संभाले। प्रकृति के सानिध्य में रहने का मौका मिलेगा। परिजनों की राय व्यक्तितत्व में बदलाव लायेगी। मार्च- गोचर के प्रभाव से पराक्रम बढ़ेगा। कोई रुका हुआ काम सहयोग से पूरा होगा। सन्तान की ओर से खुशी मिलेगी। परीक्षा में सफलता मिलेगी।

कन्याः- टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो

अप्रैल- ग्रहानुसार चल रहा समय कठिन है। श्रमसाध्य सफलता के बीच असफलता शत्रुजनित जानें। पारिवारिक सदस्यों द्वारा सहयोग मिलेगा। मई- चल रहे साम्यक कामों में प्रगति का सुयोग है। बालबच्चों में हास्यरस चलता रहेगा, मन प्रसन्न रहेगा। देश-विदेश से समाचार आयेगा। जून- विषय परिस्थितियों में धैर्य से काम लें। समय रहते समस्या का समाधान निकालने का प्रयास करें। दैनिक कार्यों में सावधानी बरतें, रोगऋण से बचें। जुलाई- साझीदार से घाटा हो सकता है। राजनीतिक क्षेत्र में सितारा बुलन्द होगा। निर्माणाधीन काम पूरा होगा। दोस्ती में सरसता बनायें। कानूनी कार्यवाही का विचार छोड़ें। अगस्त- असफलता के मध्य सफलता का योग है। अनजान से दोस्ती का हाथ न मिलायें। खरीद-फरोख्त के धन्धे में लाभ होगा।अनावश्यक अवरोध-विरोध का सामना करना पड़ेगा। सितम्बर- चिरस्थाई काम में धन खर्च होगा। ग्रहचाल का दुष्प्रभाव नित नई उलझनों को जन्म दे सकता है। स्थानान्तरण सुखोन्नति कारक है। स्वास्थ्य हानि से बचें। अक्टूबर- किसी की कही सुनी बातों पर ध्यान न दें। पारिवारिक समस्या का समधान हो जायेगा। नये काम की आशा बलवन्ती होगी। दोस्त मदद करेंगे। नवम्बर- दौड़-धुप की अधिकता, मनोवांछित कार्यसिद्धि का योग है। प्रतिद्वन्दी की कुचालों से सचेत रहें। अकर्मण्यता शुभ फलों में बाधक रहेगी। दिसम्बर- दीर्घकालीन विवाद की समाप्ति, उत्थान पतन के संदर्भ में खट्टे-मीठे अनुभव प्राप्त होंगे। कार्य विशेष की पूर्ति हर्षोल्लास का कारण बनेगी। जनवरी- भाग्योदय की दशा में उद्यमशक्ति का विकास एवं प्रगति जानें। घर-गृहस्थ की जरूरत पूरी होगी। लाभ-खर्च का समान योग चलेगा। यात्रा लाभदायक रहेगी। फरवरी- में आप नित्यानन्द का अनुभव करेंगे। अचानक द्रव्यलाभ, मित्र मिलन की खुशी होगी। प्रतिकुल सूचना क्षोभ का कारण बनेगी। मार्च- सावधानी से चलें, सफलता मिलेगी। प्रतियोगिता परिणाम श्रेष्ठ। सांसारिक सुखोपभोग, सम्मान वृद्धि, भाग्यविकास का सुयोग है।

तुलाः- रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, ते

अप्रैल- लक्ष्य साधन में त्रुटि शत्रुपक्ष को सबल बना सकती है। नवीन जोड़-तोड़ एवं कानूनी विवाद में उलझ सकते हैं। दूर-दराज की यात्रा, वाहन भूमि का सुख मिलेगा। मई- इष्ट-मित्र मिलन, अचानक धन लाभ का सुयोग हैं। अधूरी योजना को कार्यरूप देने में समयाभाव के करण कठिनाई होगी। स्वास्थ्य नियमों का पालन करें। जून- वस्तु विशेष का लेन-देन लाभ दायक रहेगा। लाभ का नया स्त्रोत भी खुल सकता है। कानूनी विवाद में सफलता मिलेगी। मित्र परिजनों से पर्याप्त सहयोग मिलेगा। जुलाई- बौद्धिक विकास होगा।

सामाजिक काम से कहीं जाना होगा। लेन-देन में सावधानी बरतें। शत्रु कुचक्र, मानसिक अशान्ति कुघटना को जन्म दे सकती है। अगस्त- स्वजन समागम, यशोपलब्धि मिलेगी। हर्षोल्लास के साथ क्षणिक विषाद भी सम्भव है। उद्योग धन्धे में सामान्य लाभ मिलेगा। सितम्बर- कहीं से आकस्मिक लाभ मिल सकता है। व्यवसायिक सम्पर्को से फायदा होगा। समस्याओं के समयोचित समाधान मिलेंगे। अक्टूबर- राजकीय-सामाजिक उपद्रव अनेक चिन्ताओं को जन्म दे सकते हैं। अधूरी योजनापूर्ति हेतु दूर-दराज की यात्रा पर जाना पड़ सकता हैं। नवम्बर- श्रमसंघर्ष के बावजूद लाभ कम होगा। जीवन साथी का भरपूर सहयोग मिलेगा। मानसिक परेशानी व लम्बी बीमारी से राहत मिलेगी। दिसम्बर- जनसम्पर्क से सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। नवनिर्माण तथा देवदर्शन की इच्छा पूरी होगी। स्वास्थ्य कुछ नरम चल सकता है। जनवरी- मास कुछ विशेषताएं लिए आ रहा है। नित्यानन्द, सौख्यसमृद्धि, विवाद निवृत्ति के योग हैं। कर्मोद्योग में तत्परता बनी रहेगी। कानूनी झन्झट छूट जायेगा। फरवरी- पठन-पाठन में रुचि उत्तरोत्तर बढ़ती जायेगी। मंगलोत्सवों में जाना होगा। दाम्पत्य सुखोपभोग के साधन सुलभ होंगे। उदर विकारों से बचें। मार्च- मास कुछ विशेषताएं लिए आ रहा है। आशातीत लाभ मिलेगा। राजनीति में काम बनेगा। कोई तुम्हें गुमराह करने का प्रयास करेगा। घरगृहस्थी का सुख मिलगा।

वृश्चिकः- तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू

अप्रैल- अनजान से दोस्ती का खतरा न उठायें। नये आगन्तुकों का आवागमन होगा। विवेकपूर्ण निर्णय जीवन में बदलाव लायेगा। प्रतिष्ठा बढ़ेगी। मई- छोटी कहा-सुनी बड़े विवाद का रूप धारण कर सकती है। मास के मध्य मे कार्य की रुकावटें दूर होंगी। पारिवारिक मेल मिलाप बढ़ेगा। जून- रोजगार के नवीन अवसर मिलेंगे। कोई नाहक ही झन्झटों में उलझाने का प्रयास कर सकता है। परिवार में सुखोपभोग की वस्तु खरीदी जायेगी। जुलाई- देवदर्शन, पर्यटन के अवसर सुलभ होंगे। सत्प्रयत्न से मनोरथ सिद्धि होगा। परिवार में मेहमान के आने से खर्च बढ़ सकता है। लाभ हानि का समान योग है। अगस्त- व्यवसाय में नया समझौता फायदेमन्द रहेगा। घर गृहस्थी की समस्याएं सुलझ जायेंगी। अनावश्यक व्यय भार से बचें। साहसिक प्रवृत्ति और तर्कशक्ति प्रबल रहेगी। सितम्बर- नौकरी एवं प्रतियोगिता में सफलता के पूर्ण आसार हैं। व्यापारी वर्ग विशेष सफलता हासिल करेगा। साथी पदोन्नति में रुकावटें डालेंगे। अक्टूबर- कभी खुशी तो कभी तनावपूर्ण माहौल बन सकता है। व्यवसाय में विकास के लिए समय उचित है। उत्तम अन्न, द्रव्य, वस्त्रादि की प्राप्ति का योग है। नवम्बर- महत्वपूर्ण योजना अज्ञात कारणों से स्थगित हो सकती है। महिलाओं का समय हास-परिहास में बीतेगा। नवनिर्माण, वाहन, पशु, धनादि संदिग्ध जानें। दिसम्बर- कार्यारम्भ कीजिए, भाग्य का सितारा चमकेगा। भूमि वाहनादि लेन-देन का विचार बनेगा। कठोर परिश्रम से लाभ प्राप्ति का योग है। जनवरी- लम्बी यात्रा श्रेष्ठ नहीं। पारिवारिक कलह कुघटनाचक्र को जन्म दे सकती है। मंगलोत्सव में जाने का अवसर मिलेगा। भौतिक खुखोपभोग का साधन मिलेगा। फरवरी- दूर-दारज से शुभ सन्देश आयेंगे। अचानक द्रव्य लाभ होगा। साथियों के द्वेषपूर्ण व्यवहार से क्षति सम्भव है। घर परिवार में मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं। मार्च- शिक्षा एवं व्यवसायिक क्षेत्र में सफलता मिलने से आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। कहीं प्रेम प्रसंग का चक्कर चलेगा। योजना में धन लगाना श्रेष्ठ है।

धनुः- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फ, ढ, भे

अप्रैल- उत्तम ग्रहचाल परिवर्तन का संकेत देते हैं। कारोबार में नई उपलब्धि मिलेगी। जमीन-जायदाद, मुकद्दमा संबंधी परेशानी हो सकती है। मई- दुविधाजनक मनः स्थिति में तनाव को अपने ऊपर हावी न होने दें। अध्ययन कार्यो के प्रति रुचि बढ़ेगी। विवाहादि मांगलिक कार्यों पर कुछ खर्च होगा। जून- स्वविवेक से लिये गए निर्णय भविष्य में लाभदायक सिद्धि होंगे। बच्चों का मन खेलकूद के साथ पढ़ाई में भी रमेगा। मांगलिक कार्य शादी-विवाहादि सम्पन्न होंगे। जुलाई- सुख-सुविधा, मनोरंजन की सामग्री खरीदी जायेगी। परिश्रम परित्वेन रुका हुआ काम बन जायेगा। अनावश्यक भागदौड़ चिन्ता का कारण है। अगस्त- नवनिर्माण की इच्छा पूरी होगी। सृजनात्मक कार्यों की ओर रुझान बढ़ेगा। मास में अकारण ही कुछ समय उलझनों में

बीतेगा। व्यवसाय में लाभ होगा। सितम्बर- दीर्घकालीन मनमुटाव, वाद-विवाद समाप्त होकर संबंधों में मधुरता आयेगी। व्यवसाय में किया समझौता लाभप्रद सिद्धि होगा। भौतिक सुख-सुविधा के संसाधन जुटेंगे। अक्टूबर- दूर दराज के इलाके से कोई मेहमान या संदेश आयेगा। जमा-खर्च में सन्तुलन बनाए रखें। पुराने रोग ऋणादि से राहत मिलेगी। विवाद सुलझ जायेंगे। नवम्बर- सुख सुविधा के साथ कुछ शारीरिक कष्ट भी सम्भव है। धर्म कार्य में भाग लेने का अवसर प्राप्त होगा। दिसम्बर- राजनीतिक क्षेत्र में नया गठबंधन लाभदायक रहेगा। दिनचर्या को बिगड़ने न दें। स्वास्थ्य कुछ नरम चलेगा। स्थानान्तरण फायदेमंद रहेगा। जनवरी- दफ्तर में बढ़ते उत्तरदायित्व को निष्ठा से निभायें। प्रियजन विछोह से मन उदास होगा। शुभाशुभ समाचार आयेगा। परिवार में सामंजस्य बनाये रखें। फरवरी- कार्यारम्भ कीजिए, भाग्य आपकी प्रतीक्षा कर रहा है। अचानक दूर-समीप की यात्रा का कार्यक्रम बनेगा। प्रतियोगिता परिणाम उत्तम निकलेगा। मार्च- दानपुण्य सत्कर्म से मन को असीम शान्ति मिलेगी। बड़े अधिकारी से तालमेल बनाए रखना लाभप्रद सिद्धि होगा। दाम्पत्य सुखोपभोग के साधन सुलभ होंगे।

मकरः- भो, जा, जी (जू, जे, जो) खी, खू, खे, खो, गा, गी

अप्रैल- मेहनत के चलते सेहत का ख्याल रखें। कार्यक्षेत्र में भाग्य का सितारा चमकेगा। प्रतियोगिता परिणाम अनुकूल रहेगा। जमा-खर्च का सन्तुलन बना रहेगा। मई- यह मास व्यापार में वृद्धिकारक है। मन प्रसन्न रहेगा। साझेदारी में व्यवसाय फायदेमंद रहेगा। जीवन साथी से पूर्ण सहयोग मिलेगा। जून- विकास कार्यों को बल मिलेगा। प्रियजन मिलन का संयोग बनेगा। धनाभाव की स्थिति अखरेगी। विषम परिस्थितियों में धैर्य न खोयें। जुलाई- आर्थिक मसलों में पूर्ण सफलता मिलेगी। व्यापार में गुप्त शत्रुओं द्वारा हानि पहूँचाई जा सकती है। व्यर्थ के झगड़े झमेलों में भाग न लें। अगस्त- पारिवारिक मांगलिक कार्यों में भाग लेने का मौका मिलेगा। स्वास्थ्य विकार सम्भव है। धूमने-फिरने के कार्यक्रम आनन्ददायक रहेंगे। सितम्बर- सामाजिक धार्मिक कृत्यों से धनागम होगा। समय प्रायः अच्छा बीतेगा। सरकारी सहयोग से उद्देश्यपूर्ति सम्भव है। आदान-प्रदान का विशेष योग है। अक्टूबर- व्यापार सावधानी से करें। किसी प्रकार का जोखिम न उठायें। मंगलोत्सव आदि की सूचना मिलेगी। श्रम चिन्ता की स्थिति में अनावश्यक व्यय सम्भव है। नवम्बर- मास में कोई शुभ संदेश मिलेगा। आप धार्मिक क्रियाकलापों में सक्रिय होंगे। सन्तान पक्ष की चिन्ता सतायेगी। लगातार प्रयास से सभी बाधायें टलेंगी। दिसम्बर- किसी अनजान व्यक्ति से मित्रता न करें। भाग्य का सितारा चमकेगा। उत्तम ग्रहचाल से रुका हुआ काम बनेगा। उच्चाधिकारी की घनिष्ठता, अनावश्यक श्रम से बचें। जनवरी- राज समाज में मान सम्मान मिलेगा। कारोबार में नया समझौता फायदा पहुँचायेगा। शत्रु की गतिविधियों का ध्यान रखें। विश्वासघात से सतर्क रहें। फरवरी- दूर-दराज से समाचार प्राप्त होगा। दाम्पत्य जीवन में परस्पर वाद-विवाद की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। व्यवसाय में ज्यादा सावधानी बरतने की आवश्यकता है। मार्च- चल-अचल सम्पत्ति विवाद का कारण बन सकती है। अधिकारी वर्ग की पदोन्नति शुभ संकेत है। माता से भरपूर स्नेह मिले। श्रमाधिक्य शिक्षा में गतिरोध होगा।

कुम्भः- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा

अप्रैल- पूर्वापेक्षा लाभ अधिक तो व्यय कम होगा। घर गृहस्थी की समस्याएं सुलझेंगी। प्यार-प्रीति का चक्कर चलेगा। खास प्रयोजन से कहीं जाना पड़ेगा। मई- गोचर ग्रह विकास में सहायक हैं। विचाराधीन योजना को कार्यरूप देने में सफलता मिलेगी। अतीत के संदर्भ में नई खोजों का लाभ मिलेगा। जून- रोजमर्रा के मामों में कोताही न बरतें। साथी पदोन्नति में बाधक बन सकता है। गुप्त शत्रु ईर्ष्या का भाव रखेगा। सामाजिक उपद्रव, चौराग्निभय बना रहेगा। जुलाई- मास में कोई नया काम करने में आप सक्षम होंगे। कृषकों को खेती से लाभ होगा। सुखद समाचार मिलेगा। घुमने-फिरने का कार्यक्रम बनेगा। अगस्त- चल रहे साम्यक कार्य में प्रगति का सुयोग है। परिवार में जायदाद सम्बन्धी विवाद से परस्पर मनोमालिन्य सम्भव है। समय का सही उपयोग करें। सितम्बर- इच्छित सहयोग, यथेष्ट लाभ की खुशी होगी। व्यापारी वर्ग नये समझौते से फायदे में रहेगा। गृहणियों का साज सज्जा में अधिक समय बीतेगा। अक्टूबर- घर में परस्पर विरोधपूर्ण वातावरण बन सकता

अनावश्यक भाग दौड होने से शारीरिक मानसिक कष्ट सम्भव है, समस्याओं के समयोचित समाधान मिलेंगे। नवम्बर- अनिवार्य प्रवास, भ्रमण, धार्मिक, सामाजिक कार्य सम्पादन का योग है। बन्धु विरोध से बचे रहें। शत्रु पर विजय पाने में आप सफल होंगे। दिसम्बर- मेहनत के चलते सेहत का ख्याल रखें। अच्छे-खराब दोनों प्रकार के समाचार मिलेंगे। मित्र परिजनों के परामर्श से गृहस्थी का मसला हल हो जायेगा। जनवरी- नौकरी में स्थानान्तरण शुभ नहीं। नवनिर्माण की योजना कार्यरूप लेगी। जारी विवाद को विकराल रूप देने से पहले समाप्त करने का प्रयास करें। फरवरी- परिजनों की राय से आपके व्यक्तित्व में बदलाव आयेगा। प्रकृति के सानिध्य में रहने का मौका मिलेगा। पुराने रोगोपद्रव से छुटकारा मिल जायेगा। मार्च- समय के स्वरूप को देखते हुए कार्य करें। कार्यक्षेत्र-व्यवसाय में उन्नति होगी। राजनीतिक क्षेत्र में वर्चस्व कायम होगा। चिरस्थायी योजना में धन खर्च होगा।

मीनः- दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची

अप्रैल- तीव्रलाभ की जिज्ञासा बलवंती होगी। पुरानी निराशा खत्म हो जायेगी। बेवजह कानूनी विवाद में उलझ सकते हैं, सतर्कता की आवश्यकता है। मई- आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। धनागम का नया मार्ग प्रशस्त होगा। शिक्षा प्रतियोगिता में किया प्रयास सफल होगा। संतानपक्ष से सहयोग मिलेगा। जून- अनावश्यक अवरोध-विरोध का सामना करना पड़ सकता है। ऐश्वर्यवृद्धि, अभूतपूर्व सम्मान से विरोधियों को डाह होगी। जुलाई- समय के स्वरूप को ध्यान में रखते हुए कार्य करें। रोजगार व नौकरी में उन्नति होगी। राजनैतिक क्षेत्र में वर्चस्व कायम होगा। अगस्त- पूर्वापेक्षा मास में व्यय अधिक होने से परेशानी होगी। पड़ौसियों से आनन्दानुभूति, स्वजन समागम, भाग्योन्नति का सुयोग है। सितम्बर- आय-व्यय सामान्य रहेगा। किसी खास वस्तु को पाने कल आकांक्षा पूर्ण होगी। व्यस्तता अधिक रहेगी। कर्त्तव्य के प्रति सचेत रहें। अक्टूबर- आपसी संबंधों में मधुरता आयेगी। स्फुर्तियुक्त सत्प्रयत्न से मनोरथ सिद्ध होगा। मन किसी अनजानी आशंका से त्रस्त रहेगा। नवम्बर- दानपुण्य सत्कर्म से अभिष्ट सिद्धि के योग हैं। विवादास्पद प्रकरण नया मोड़ लेगा। प्रतियोगिता में विजय मिलेगी। धार्मिक सामाजिक कार्यों में भाग लें। दिसम्बर- महत्वपूर्ण कार्य सम्पादन योजनापूर्ति का पूरा लाभ मिलेगा। जन समुदाय से सम्पर्क बढ़ेगा। धन लाभ का योग बना है। रोजगार में उन्नति होगी। जनवरी- ग्रहचाल उत्तम है। पुरुषार्थ की वृद्धि होगी। झगड़े-झमेलों से बचें। क्रोध पर काबू रखें। भूमि वाहनादि का लेन-देन होगा। साहित्य-संगीत में रुचि बढ़ेगी। अर्थ सम्बन्धी विवाद सम्भव है। फरवरी- व्यवसाय में पर्याप्त विकास, अन्य-वस्त्रादि का पर्याप्त सुयोग है। लम्बी यात्रा श्रेष्ठ नहीं। विविध प्रतिस्पर्धओं में चित्ताकर्षण होगा। आगन्तुक मेहमान से गृहखर्च में वृद्धि होगी। मार्च- समारोह में सम्मान व उपहार का लाभ मिलेगा। व्यवसायिक उपलब्धि का प्रयास सफल रहेगा। देश-विदेश की यात्रा का सुयोग है। आलस्य प्रमार अवन्नतिकारक है।

।। पंचक क्या है ।।

पूर्वा भाद्रपदः पंचक के दौरान जब पूर्वा भद्रपद नक्षत्र हो तब चरपाई को न खरीदे और न ही बनवाए। इससे कोई गंभीर बीमारी घर में आ सकती है।

उत्तरा भाद्रपद (स्थित संज्ञक): इस नक्षत्र में स्थिरता वाले कार्य करने चाहिये जैसे-बीज बोना, ग्रह प्रवेश, शांति पूजन और जमीन से जुड़े स्थिर कार्य करने चाहिए। इस नक्षत्र में धन हानि के योग बनते है।

शतभिषा नक्षत्र (चल संज्ञक): इस नक्षत्र में वाद-विवाद से बचना चाहिये। इस नक्षत्र में वाहन खदीदना, यात्रा करन (दक्षिण दिशा को छोड़कर) शुभ माना जाता है।

पंचक के प्रकार

(१) रोग पंचक: रविवार को शुरू होने वाला पंचक कहलाता है। इसके प्रभाव से ये ५ दिन शारीरकि और मानसिक परेशानियों वाले होते है। इस पंचक में कोई भी शुभ कार्य नहीं करने चाहिए।

(२) राज पंचक: सोमवार को शुरू पंचक राज पंचक कहलाता है। यह पंचक शुभ माना जाता है। इसके प्रभाव से इन ५ दिनो तक सरकारी कार्यो को करने से सफलता मिलती है।

(३) अग्नि पंचक: मंगलवार को शुरू होने वाला पंचक अग्नि पंचक कहलाता है। इन ५ दिनों में कोर्ट कचहरी विवाद आदि के फैसले अपने पक्ष से करवाने वाले कार्य करवाये जा सकते है। अग्नि पंचक से अग्नि का भय होता है। अग्नि पंचक में किसी भी तरह का निर्माण कार्य, औजार और मशीनरी कामों की शुरूआत करना अशुभ होता है।

(४) मृत्यु पंचक: शनिवार को शुरू होने वाला पंचक मृत्यु पंचक कहलाता है। मृत्यु पंचकों में विवाद और दुर्घटना आदि से बचना चाहिये।

(५) चोर पंचक: शुक्रवार को शुरू होने वाला पंचक चोर पंचक कहलाता है। चोर पंचक से ना तो किसी से लेन देन का कार्य करे और ना व्यापार में किसी भी तरह का सौदा करें।

पंचक: जब चन्द्रमा कुम्भ और मीन राशी में होता है, तब उस समय को पंचक कहते है। घनिष्का के आखिरी दो चरण - शतभिषा, उतरा भाद्रपद, पूर्वा भाद्रपद और रेवती नक्षत्र के अंतर्गत आते है। पंचक में यात्रा न करें, दक्षिण दिशा में यात्रा तो बिल्कुल ना करें। पंचक में रविवार को यदि उतरा भाद्रपद, पूर्वा भाद्रपद व रेवती नक्षत्र आये तो यह शुभ योग होते है। इस समय सगाई, विवाह आदि शुभ कार्य किये जाते है। शव का अन्तिम संस्कार करने से पहले किसी योग पंडित से सलाह अवश्य ले लेनी चाहिये। यदि ऐसा न हो पाए तो शव के साथ ५ पुतले जौ के आटा से बनाकर कुश से लगाकर अर्थी से रखना चाहिये और इन पांचों को भी पूर्ण विधि विधान से अंतिम संस्कार करना चाहिये।

घनिष्ठा नक्षत्र (चल संज्ञक): जब पंचक में घनिष्ठा नक्षत्र हो तब घर में घास फूस जलाने वाली वस्तुए नहीं रखनी चाहिये, इससे घर में आग लगने का भय होता है। लेकिन इस नक्षत्र में वाहन खरीदना और मशीनरी सम्बंधित काम शुरू करना शुभ माना जाता है।

रेवती नक्षत्र (मैत्री संज्ञक): पंचक के दौरान जब रेवती नक्षत्र चल रहा हो तब घर की छत नहीं बनानी चाहिये इससे घर में कलेश और घर की हानि होती है। लेकिन इस नक्षत्र में कपड़े से संबंधित व्यापार का सौदा करना, किसी विवाद का निपटारा करना, गहने खरीदना आदि शुभ माना जाता है।

पं. श्यामेश मिश्र (ज्योतिषाचार्य)
मो. 9935383670

।।वास्तु के अनुभूत तथ्य।।

जिस भूमि पर मनुष्यादि प्राणी वास करते हैं, उसे वास्तु कहा जाता है। वास्तु की शुभाशुभ परीक्षा पूजन आदि सौख्य समृद्धि हेतु आवश्यक है। मत्स्यपुराण अ. २५१ में लिखा है कि अन्धकासुर के वध के समय भगवान शंकर के ललाट से पृथ्वी पर जो स्वेदबिन्दु गिरे उनसे एक भयंकराकृति वाला, पुरुष प्रकट हुआ । जिसने अन्धकणों का रक्तपान किया फिर भी अतृप्त हो त्रिलोकी को भक्ष्ण करने के लिए उद्यत हो गया । जिसे महादेवादि देवों ने पृथ्वी पर सुलाकर वास्तु देवता के रूप में प्रतिष्ठित किया और उसके शरीर में सभी देवताओं ने वास किया, इसीलिए वह वास्तु पुरुष या वास्तु देवता कहलाने लगा । देवताओं ने वास्तु को गृह निर्माण के वैश्वदेव बलि के तथा पूजन, यज्ञ, यादि के समय पूजित होने का वर देकर कहा कि वापी, कूप, तड़ाग, गृह, मन्दिर, बाग-बगीचा, जीर्णोद्धार यज्ञ मण्डप निर्माणादि के समय जो तुम्हारी पूजा प्रतिष्ठा अर्चना करेंगे उन्हें सभी प्रकार की सौख्य समृद्धि मिलेगी ।

वास्तु देवता का मूल मन्त्र

ॐ व्वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्म्मान्स्वावेशोऽअनमीवो भवानः।।
यत्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नोभव द्विपदेशं चतुष्पदे।।

मकान में कहाँ क्या बनावें -

स्नानागार दिशि प्राध्यां आग्रेयां च महानसम। याम्यायां शयनागार नेत्रर्ध्यां वस्तमन्दिरम्।।
वारुण्यां भोजन गृहं वायाव्यां पशुमन्दिरम् । भण्डारं वेशमोत्तस्यां एंशान्यां देवतालयम् ।।
एनान्युतानि शस्तानि स्वस्ये स्वरूप क्षिवपि।

वायव्य — उत्तर — ईशान

धान्य संग्रह आभूषण कक्ष	रति कक्ष	शयन कक्ष	रोगी कक्ष	पूजा गृह
सन्तान कक्ष	आंगन			स्टोर
भोजन कक्ष				मुख्य द्वार
अध्यन कक्ष				स्नान घर पानी (जल)
शौचालय अस्त्र-शस्त्र कक्ष	स्वामी कक्ष	बेड रूम	स्टोर रूम	पाक गृह

नैऋत्य — दक्षिण — अग्नि

शनि की साढ़ेसाती संवत् २०८२

शनि वर्ष पर्यन्त मीन राशि में संचरण करेगा। कुभ राशिवालों के लिए उतरती साढ़ेसाती, मीन राशि वालों के लिए मध्य तथा मेष राशि वालो के लिए चढ़ती शनि की साढ़ेसाती चलेगी। सिंह एवं धनु राशि वालो को शनि की ढैय्या चलेगी।

परामर्श- शनि जन्य कष्ट निवारण शनि स्तोत्रम-

-ः दशरथ कृत शनि स्त्रोतः-

"शनि जन्य कष्ट निवारणार्थ पिंगलाय स्तोत्रम"

नमस्ते कोण संस्थाय पिंगलाय नमोऽस्तुते।
नमस्ते बभ्रुरुपाय कृष्णायच मनोऽस्तुते ॥
नमस्ते रौद्र देहाय नमस्ते चांतकाय च ।
नमस्ते यम संज्ञाय नमस्ते सौरये विभो ॥
नमस्ते मन्द संज्ञाय शनैश्चर नमोऽस्तुते।
प्रसीदं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च ॥

शनिदान मंत्र-

शनेश्चर प्रीतिकरं दान पीड़ा निवारकम्।
सर्वापत्ति विनाशाय द्विजाग्रयाय ददाम्यहम्॥

१. उपरोक्त शनि स्त्रोत अथवा महाराज दशरथ कृत शनि स्त्रोत का पाठ प्रत्येक शनिवार को करें, सम्भव हो तो नित्य करें ।
२. नौकर-भृत्य-सहायक का भरण पोषण करें तथा उसको पास रख उसकी सहायता करें।
३. कौवे को चारा दें। ज्यादा कष्ट समझ में आये तो कास के कटोरे में तेल भरकर उसमें अपनी मुखाकृति देख कटोरा सहित दान ग्रहण करने वाले को दान दें।
४. सुन्दर काण्ड का पाठ नित्य करें।

॥ जय गुरुदेव ॥

।।नवग्रह शान्ति प्रयोग।।

(सूर्य)

सूर्य कारक - यह आत्मा, आरोग्य, स्वभाव, राज्य, देवालय एवं पितृकारक है। मंदाग्नि, अतिसार- सिरदर्द-क्षय-नेत्रविकार-उदासी-अपमान-कलह-मेरुदण्ड-कलेजा-नेत्र आदि अंगो पर इसका प्रभाव होता है।

सूर्य मण्डल

ध्यान - पद्मासनः पद्मकरः पद्मगर्भः समद्युति।
सप्ताश्वः सप्तरज्जुश्च द्विभुजः स्यात् सदारविः।।

सूर्य यंत्र

६	१	८
७	५	३
२	९	४

विनयोग - हिरण्य स्तूप ऋषि, सविता देवता, अनुष्टुपछन्दः है ।।

वैदिक मंत्र - ऊँ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यंञ्च।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।।

तान्त्रिक मंत्र - ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः ।

एकाक्षरी बीज मंत्र - ऊँ घृणिः सूर्याय नमः ।

सूर्य गायत्री मंत्र - ऊँ आदित्याय विदमहे प्रभाकराय धीमहि तन्नो सूर्य प्रचोदयात ।।

जप संख्या - (७००० हजार वैदिक मंत्र) (२८००० हजार तांत्रिक मंत्र)

सूर्य जानकारी - कश्यप गोत्र, रक्त वर्ण, सिंह राशि स्वामी, वाहन सप्ताश्व, समिधा (लकड़ी) मदार।

दान सामग्री - माणिक्य, सोना, तांबा, गेहूँ, घी, गुड़, केशर, लाल कपडा, लाल फूल, लाल गौ, लाल चन्दन।

दान का समय - रविवार को अरुणोदय (सूर्योदय) काल

रत्न धारण - माण्क्यि ७ या ८ रत्ती

यंत्र एवं जडी - सूर्य यंत्र अथवा बिल्व वृक्ष की जड गले या बाहु में धारण कर सकते है।

उपवास - रविवार का व्रत सूर्य पूजन एवं सूर्य सहस्त्रनाम का पाठ करें।

(चन्द्र)

चन्द्र कारक- चित्तवृत्ति, स्वास्थ्य, सम्पत्ति, राजकीय, अनुग्रह, माता का सुख तथा चतुर्थ स्थान का कारक है। इसके द्वारा अनिद्रा कफ सम्बन्धी, पाचन स्थान, मूत्रकृच्छ, मानसिक रोग, स्त्रीजन्य रोग निरर्थक भ्रमण उदर तथा मस्तक का विचार किया जाता है।

चन्द्र मण्डल

ध्यान - श्वेतः श्र्वेताम्बरधरः श्र्वेताश्र्वः, श्र्वेतवाहनः ।
गदपाणिर्द्विबाहुश्च कर्तव्यो वरदः शशीः ।।

चन्द्र यंत्र

७	२	९
८	६	४
३	१०	५

विनयोग – गौतम ऋषिः सोमो देवता, द्विपदविराट् छन्दः,

वैदिक मंत्र – इमन्देवाऽअसपत्नꣳ सुवध्वं महते क्षत्राय महते ।
ज्यैष्ठयाय महते जानराज्यायेन्द्र स्येन्द्रियाय ।
इमममुण्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशऽएष वोऽमी
राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाꣳ राजा ।।

तात्रिक मंत्र – ऊँ श्रां श्री श्रौं सः चन्द्राय नमः ।

एकाक्षरी बीज मंत्र – सों सोमाय नमः ।

चंद्र गायत्री मंत्र – ऊँ अमृताङ, गाय विद्महे कलारूपाय धीमहि तन्नो सोमः प्रचोदयात्।।

जप संख्या – (११००० हजार वैदिक मंत्र) (४४००० हजार तांत्रिक मंत्र)

चन्द्र की जानकारी – अत्रि गोत्र, श्रवेतवर्ण, कर्क राशि का स्वामी है। वाहन हरिण-समिधा पलास।

दान सामग्री – मोती, चाँदी, चावल, मिश्री, दूध, दही, सफेद कपड़ा, शंख, कर्पूर, सफेद बैल, सफेद चंदन, सफेद पुष्प।

दान का समय – सोमवार को प्रदोष (संध्या) काल। रत्न धारण – मोती – १० से १५ रत्ती।

यंत्र एवं जडी – चन्द्र का यंत्र अथवा खिरनी की जड़ को सफेद वस्त्र में बांधकर गले या बाहु में धारण करें।

उपवास – सोमवार व्रत १६ सोमवार व्रत लाभकारी होगा।

(मंगल)

भौम कारक – धैर्य पराक्रम का स्वामी, भाई-बहन का कारक, रक्तवर्ण, शक्ति, कारक है। गले की बीमारी, कष्ट रोग फोडा फुन्सी रक्त विकार, गठिया, आंखो की बीमारी, दौरे पड़ना, सिर दर्द, रक्त एवं गर्भपात इत्यादि।

ध्यान – रक्त माल्याम्बरधरः शक्ति शूलगदाधरः।
चतुर्भजः रक्तरोमा वरदः स्यात् धरासुतः ।।

मंगल यंत्र

८	३	१०
९	७	५
४	११	६

विनयोग – गौतम ऋषि, भौमो देवता, गायत्री छन्दः ।।

वैदिक मंत्र – अग्निर्मूर्द्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयूम। अपाꣳ रेताꣳ सिजिन्वति ।।

तात्रिक मंत्र – क्रां क्री क्रौं सः भौमाय नमः ।

एकाक्षरी बीज मंत्र – ऊँ अं आङ्गरकाय नमः ।

भौम गायत्री मंत्र – ऊँ अंगारकाय विद्महे शक्तिहस्ताय धीमहि तन्नो भौमः प्रचोदयात ।।

जप संख्या – (१०००० हजार वैदिक मंत्र) (४०००० हजार तांत्रिक मंत्र)

भौम की जनकारी – भारद्वाज गोत्र, रक्त वर्ण, मेष, वृश्चिक राशि का स्वामी।

समिधा - (खैर) खादिर, वाहन भेडा।

दान सामग्री - मूँगा, सोना, तांबा, भूमि, मसूर, गुड गेहूँ, घी लाल कपड़ा, लाल फूल, कस्तूरी, केशर, लाल चन्दन, वर्ण दक्षिणा।

दान का समय - सुबह ६ बजे से ९ बजे तक।

रत्न धारण - मूंगा ९-११ रत्ती।

यंत्र एवं जडी - मंगल का यंत्र अथवा अनंत मूल या खैर की जड को लाल वस्त्र में बांधकर गले या बाहू में धारण करें।

व्यवसाय - औषधि (दवा) घड़ी ईट, गेहूँ, भूमि

उपवास - मंगलवार, अथवा भूमि पूजन, हनुमान जी का व्रत करना शुभप्रद है।

(बुध)

बुध कारक - यह ज्योतिष, चिकित्सा, शिल्प, कानून-व्यवसाय चतुर्थ तथा दशम स्थान का कारक है। इसके द्वारा गुप्त रोग, संग्रहणी, वातरोग, श्वेतकुष्ट, गूंगापन, बुद्धिभ्रम, विवेकशक्ति, जिहवा तथा तालु आदि शब्द के उच्चारण से सम्बन्धित अवयवों का विचार किया जाता है।

ध्यान - पीत माल्याम्बरधरः कर्णिकार समधुतिः।
खडगूचर्मगदापाणि सिंहस्थो वरदो बुधः ।।

बुध यंत्र

९	४	११
१०	८	६
५	१२	७

विनयोग - परमेष्ठी ऋषि, बुधदेवता, वृहती छन्दः।

वैदिक मंत्र - ऊँ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्त्तेस ᑌ सृजेथा मयं च।
अस्मिन् सधस्थे। अध्युत्तरस्मिन ।विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत् ।।

तान्त्रिक मंत्र - ब्रां ब्री, ब्रौ सः बुधाय नमः।

एकाक्षरी बीज मंत्र - ऊँ बुं बुधाय नमः। लघुमन्त्र ऊँ ऐ स्त्री श्री बुधाय नमः।

बुध गायत्री मंत्र - ऊँ सौम्य रूपाय विद्महे वाणेशाय धीमहि तन्नो सौम्यः प्रयोदयात्।

जप संख्या - (९००० हजार वैदिक मंत्र) (३६००० हजार तांत्रिक मंत्र)

बुध की जानकारी - अत्रि गोत्र, श्याम वर्ण, मिथुन एवं कन्या राशि का स्वामी, वाहन सिंह, समिया-अपामार्ग।

दान सामग्री - कांसे का कटोरा, हरा वस्त्र, हाथी दांत घी, हरा मूंग, पन्ना, सोना अनेक प्रकार का फूल, कर्पूर, अनेक फूल, वरण दक्षिणा।

दान का समय - दोपहर

रत्न धरण - पन्ना ९ से १२ रत्ती।

यंत्र एवं जडी - बुध यंत्र अथवा आधी झाड़ा की जड़ को हरे वस्त्र में बांधकर गले या वाह में धारण करें।

व्यवसाय - मूँग, रेशम, सूत, कापी लेखन सामग्री ।

उपवास - बुधवार का व्रत तथा गौ को हरा चारा, पालक, दूब आदि खिलाना चाहिए ।

(गुरु)

गुरू कारक - यह कफ, धातु तथा चर्बी की वृद्धि, शोध (सूजन) गुल्म, गैस, बुखार, विद्या, पुत्र पौत्र आदि । का विचार किया जाता है । इसे हृदय की शक्ति का कारक माना जाता है।

गुरू मण्डल

ध्यान - देव दैत्यगुरू तद्वत् पीतश्वेतौ चतुर्भुजौ ।
दण्डिनौ वरदौ कार्यौ साक्षसूत्र कमण्डल ।।

गुरू यंत्र

१०	५	१२
११	९	७
६	१३	८

विनयोग - गृत्समद ऋषि, वृहस्पति देवता, त्रिष्टुप छन्दः ।

वैदिक मंत्र - ऊँ बृहस्पते अति यदर्योऽअर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु ।
यद्दीदयच्छवसऽऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ।
उपयामृग हीतोऽसि वृहस्पते त्वैष ते योनि बृहस्पतये त्वा ।।

तात्रिक मंत्र - ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः ।

एकाक्षरी बीज मंत्र - ऊँ बृं बृहस्पते नमः ।

गुरू गायत्री मंत्र - अडिगूरसाय विद्महे दण्डायुधाय धीमहि तन्नो जीवः प्रचोदयात् ।

जप संख्या - (१९००० हजार वैदिक मंत्र) (७६ हजार तांत्रिक मंत्र)

गुरू की जनकारी - आंगिरस गौत्र, पीत वर्ण, धनु एवं मीन राशि का स्वामी, वाहन हाथी, समिधा, पीपल ।

दान सामग्री - पुखराज, सोना, कांसा, चने की दाल, खाँड, घी, पीला फूल, हल्दी, पीला कपड़ा, पुस्तक, घोड़ा, भूमि, पीला फल, मधु, लौंग, गुड, वरण दक्षिणा ।

दान का समय - सायंकाल ।

रत्न धारण - पुखराज ७ से १० रत्ती ।

यंत्र एवं जडी - गुरु यंत्र अथवा (केले की जड़) को पीले वस्त्र में बाँधकर गले या बाहु में धारण करें ।

व्यवसाय - किराना, वकालत, ब्याज पर पैसा लगाना, पारलाकिक एवं आध्यात्मिक सुखो का विशेष विचार किया जाता है ।

उपवास - बृहस्पति का व्रत एवं विष्णु सहस्रनाम का पाठ ।

(शुक्र)

शुक्र कारक - कफ, वात, पित्त, वीर्य, कोढ़ सम्बन्धी, नेत्र पीड़ा, मूत्र पीड़ा, गुदा रोग, गर्भाशय की कमजोरी, पेट का दर्द, अण्डकोष की सूजन इत्यादि।

शुक्र मण्डल

ध्यान - श्वेतवर्णा दण्डा युधा दानवादि पुरोहिता ।
अग्निवर्णाष्टाश्रवयुत रथारूढ़ शुशोभित ।।

शुक्र यंत्र

११	६	१३
१२	१०	८
७	१४	९

विनयोग - पराशर ऋषि, शुक्र देवता, शक्वरी छन्दः

वैदिक मंत्र - ऊँ अन्नात् परिस्त्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिवत्क्षत्रम्पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ᴗशुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रिय मिदं पयोऽमृतम्मधु।।

तात्रिक मंत्र - ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः ।

एकाक्षरी बीज मंत्र - ऊँ शुं शुक्राय नमः ।

शुक्र गायत्री मंत्र - भृगु सुताय विद्महे दिव्य देहाय धीमहि तन्नो शुक्रः प्रचोदयात् ।

जप संख्या - (१६००० हजार वैदिक मंत्र) (६४००० हजार तांत्रिक मंत्र)

शुक्र की जानकारी - दनु गोत्र, श्वेत् वर्ण, वृष एवं तुला राशि का स्वामी वाहन - अश्व ।

समिधा - उदुम्बर (गूलर)

दान सामग्री - सफेद चन्दन, चावल, सफेदवस्त्र, सफेद पुष्प, चाँदी, हीरा, सोना, दही, चीनी गाय, भूमि, वरण दक्षिणा ।

दान का समय - सूर्योदय काल ।

रत्न धारण - हीरा २ रत्ती ।

यंत्र एवं जडी - शुक्र यंत्र अथवा गूलर की जड़ को सफेद वस्त्र में बाधक कर गले या बाहु में धारण करे ।

व्यवसाय - प्रसाधन सामग्री, फूल, वाहनों की खरीद - बिक्री इत्यादि ।

उपवास - शुक्रवार व्रत एवं दुर्गा सरस्वती का पाठ ।

(शनि)

शनि कारक - इसके द्वारा आयु, शारीरिक बल, दृढता, विपत्ती, प्रभुता, पैरो में कष्ट,मोक्ष, यक्ष ऐश्वर्य, नौकरी, योगाभ्यास, विदेशी भाषा का ज्ञान, दुर्घटना, मूर्च्छा आदि का विचार किया जाता है।

शनि मण्डल

ध्यान - इन्द्रनीलद्युतिः शूली वरदो गृध्रवाहनः ।
बाण बाणा सन्धरः कर्तव्योऽर्कसुतस्तथा ।।

शनि यंत्र

१२	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०

विनयोग - दध्यऽड़थर्वण ऋषि, शनिदेवता, गायत्री छन्दः ।

वैदिक मंत्र - शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । शन्योरभिस्त्रवन्तुनः ।।

तात्रिक मंत्र - प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः (खां खीं खौ सः शनैश्चरायनमः)

एकाक्षरी बीज मंत्र - ऊँ शं शनैश्चराय नमः ।

शनि गायत्री मंत्र – सूर्यपुत्राय विद्महे मृत्युरूपाय धीमहि तन्नो शनि प्रचोदयात् ।

जप संख्या – (२३००० हजार वैदिक मंत्र) (९२००० हजार तांत्रिक मंत्र)

शनि की जनकारी – कश्यपगोत्र, कृष्णवर्ण, मकर – कुम्भ राशि का स्वामी है ।

वाहन – गीध।

समिधा – शमी ।

दान सामग्री – नीलम, तिल, काला, उदड, सरसों तेल, काला कपडा, लोहा, भैंस या काली गाय, नीला पुष्प, काला जूता, कस्तूरी सोना वरण दक्षिणा ।

दान का समय – शनिवार को सायंकाल ।

रत्न धारण – नीलम – ५'७ रत्ती ।

यंत्र एवं जडी – शनि यंत्र या काले घोड़े के नाल या नाव के कील की अँगूठी अथवा शमी वृक्ष की जड को काले कपडे मे बांधकर गले या बाहु में धारण करे ।

व्यवसाय – लकडी, लोहा, जूते कोयला इत्यादि ।

उपवास – शनि की पीडा निवृति हेतु ३३ शनिवार का व्रत करना चाहिए । शनि देव को काला तिल एवं पुष्प, सरसो का तेल अर्पण करें ।

(राहु)

राहु कारक – दिल का दौरा, दिल की कमजोरी, जहर, लेन-देन आत्म हत्या, पाचन, सम्बन्धी बीमारी आदि ।

राहु मण्डल

ध्यान – करालवदनः खडगूचर्मशूली वरप्रदः ।
नीलसिंहासनस्थश्च राहुस्त्र प्रशस्यते ।।

राहु यंत्र

१३	८	१५
१४	१२	१०
९	१६	११

विनयोग – वामदेव ऋषि, राहु देवता, गायत्री छन्दः

वैदिक मंत्र – ॐ कयानचिश्त्र आ भुवदूती सदावृधः सखा ।
कया शचिष्ठया वृता ।।

तात्रिक मंत्र – ॐ भ्रां भीं भ्रौ सः राहवे नमः ।

एकाक्षरी बीज मंत्र – ॐ रां राहवे नमः ।

राहु गायत्री मंत्र – शिरोरूपाय विदमहे अमृते शाय धीमहि तन्नो राहुः प्रचोदयात ।

जप संख्या – (१८००० हजार वैदिक मंत्र) (७२००० हजार तांत्रिक मंत्र)

राहु की जानकारी – पैठीन गोत्र, कृष्ण वर्ण, राहु कन्या राशि का स्वामी है ।
वाहन व्याध्र है ।

समिधा – दूर्वा ।

दान सामग्री - सत्तधान्य, काला उड़द, हेमनाग, नीला कपडा, नीला फूल, गोमेद, सरसों तेल, लोहा, सीसा, कम्बल, काला तिल, ताँबा, ब्राह्मण को वरण दक्षिणा।

दान का समय - रात्रि में ।

रत्न धारण - गोमेद ६-१२ रत्ती ।

यंत्र एवं जडी - राहु यंत्र अथवा सफेद चन्दन की लकड़ी, नीले कपडे में बांधकर गले या बाहु में धारण करे ।

व्यवसाय - तेल, अलसी,चना, हड्डी के समान ।

उपवास - दुर्गा जी की उपासना ।

(केतु)

केतु कारक - इसके द्वारा हाथ, पाँव, धुंआजनित कष्ट, चर्म रोग, घाव होना, दाँत का सड़ना, गर्भपात सम्बन्धी जैसे कृत्य केतु के द्वारा होता है ।

केतु मण्डल

ध्यान - ध्रूमा द्विवाहवः सर्वे गदिनो विकृताननाः ।
गृधासनगताः नित्यं के तवः स्युवर्रप्रदाः ।।

केतु यंत्र

१४	९	१६
१५	१३	११
१०	१७	१२

विनयोग - मधु, ऋषि, केतु देवता, गायत्री छन्दः ।

वैदिक मंत्र - ऊँ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशोमर्याऽअपेशसे समुषभ्दिरजा यथाः ।।

तात्रिक मंत्र - ऊँ स्त्रां, स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः ।

एकाक्षरी बीज मंत्र - ऊँ कें केतवे नमः ।

केतु गायत्री मंत्र - गदाहस्ताय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो केतु प्रचोदयात् ।

जप संख्या - (१७००० हजार वैदिक मंत्र) (६८००० हजार तांत्रिक मंत्र)

केतु की जनकारी - जैमिनी गोत्र, ध्रुमवर्ण, मिथुन राशि का स्वामी, वाहन, कबूतर ।

समिधा - कुश ।

दान सामग्री - कम्बल, कस्तूरी, काला उड़द, नीला फूल, लहसुनिया, तिल का तेल, सोना, लोहा, बकरा, शस्त्र, सत्तधान्य, ब्रह्मण वरण, दक्षिण ।

दान का समय - रात्रि में ।

रत्न घारण - लहसुनिया ९ - १२ रत्ती ।

यंत्र एवं जडी - केतु यंत्र अथवा अश्वगंधा की जड़ काले कपडे में बांधकर गले या बाहु में धारण करें ।

व्यवसाय - अभ्रक, चावल, फिल्म उद्योग, राजनीति आदि ।

उपवास - गणेश जी की उपासना ।

॥ जय गुरुदेव ॥

गणेश जी आरती

गणधीश गजानन दीन दयाल। आरती उतारूँ तेरी गौरा जी का लाल।
लम्बोदर चतुर्भुज लीला तेरी न्यारी है। वक्रतुण्ड महाकाय चुहे की सवारी है।
भक्तजन भर-भर लाएं लडडुअन के थाल। आरती उतारूँ ....।
रिद्धि सिद्धि शक्ति तेरी यश लाभ दो है सुत तेरी पूजा करने वाला हो जाए पापों से मुक्त।
जय गणेश बोलो कटें संकटों के जाल आरती उतारूँ ....।
ब्रह्मा विष्णु रूद्र से भी पहले पूजा तेरी है। कार्य सिद्धि हेतु तेरी कृपाभी जरूरी है।
शंख बाजे, घण्टा बाजे - झझारों की ताल आरती उतारूँ ....।
धनहीन धन पाऐं बलहीन बल है। रोग वान नमन करे रोग जाए टल है।
बुध्दि के प्रदाता तेरी जय हो ओंकार। आरती उतारूँ ....।

आरती लक्ष्मी जी की

ओउम् जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निशदिन सेवत, हर विष्णु विधाता।। ओउम् ....
उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जग:माता।
सूर्य-चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता। ओउम् ....
दुर्गा रूप निरंजनि सुख संपत्ति दाता।
जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि सिद्धि धन पाता।। ओउम् ....
तुम पाताल-निवासिनि, तुम ही शुभदाता।
कर्म-प्रभाव प्रकाशिनी, भवनिधि को त्राता।। ओउम् ....
जिस घर में तुम रहती, सब सद्गुण आता।
सब संभव हो जाता, मन नही धवराता।। ओउम् ....
तुम बिन यज्ञ न होवे, वस्त्र न कोई पाता।
खानपान का वैभव, सब तुमसे आता ।। ओउम् ....
शुभ-गुण मन्दिर, सुन्दर, क्षीरोदधि-जाता।
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता।। ओउम् ....
महालक्ष्मी जी की आरती, जो कोई जन गाता।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता।। ओउम् ....

॥ जय गुरुदेव ॥

आरती श्री शंकर जी

जय शिव ओंकारा भज शिव ओंकारा। भोले ....
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्धांगी धारा॥ ॐ हर हर हर महादेव ....
एकानन चतुरानन पंचानन राजे। भोले ....
हंसासन गरुड़ासन वृषवाहन साजे॥ ॐ हर हर हर महादेव ....
दो भुज चार चतुर्भुज दस भुज ते सोहे। भोले ....
तीनों रूप निरखते त्रिभुवन जन मोहे॥ ॐ हर हर हर महादेव ....
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे। भोले ......
सनकादिक प्रेतादिक भूतादिक संगे॥ ॐ हर हर हर महादेव ....
अक्षमाला बनमाला मुण्डमाला धारी। भोले ....
त्रिपुरारी व मुरारी कर कमला धारी॥ ॐ हर हर हर महादेव ....
कर मध्ये कमण्डलु चक्र त्रिशूलधारी। भोले ....
सुखकरता दुखहरता जग पालन कारी॥ ॐ हर हर हर महादेव ....
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका। भोले .....
प्रणवाक्षर में शेभित ये तीनों एका॥ ॐ हर हर हर महादेव ....
लक्ष्मी वर सावित्री पार्वती संगा। भोले ......
पार्वती अर्द्धंगी शिव लहरी गंगा॥ ॐ हर हर हर महादेव ....
पर्वत में पार्वती जी विराजत शंकर कैलाशा। भोले ......
भाँग धतूरे के भोजन भस्मी में वासा॥ ॐ हर हर हर महादेव ....
शिव की जटा में गंग बहत है। भोले ......
शेषनाग लिपटावत ओढ़त मृगछाला॥ ॐ हर हर हर महादेव ....
काशी में विश्वनाथ बिराजत नंदी ब्रह्मचारी। भोले .....
नित उठ दर्शन पावत महिमा अति भारी॥ ॐ हर हर हर महादेव ....
त्रिगुण स्वामी की आरती जो कोई नर गावे। भोले ......
भजत शिवानन्द स्वामी मनवांछित फल पावे॥ ॐ हर हर हर महादेव ....

॥ इति शंकरजी की आरती समाप्त॥

आरती जय जगदीश हरे

ऊँ जय जगदीश हरे स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्तजनो के संकट क्षण मे दूर करे ।। ऊँ जय ....
जो ध्यावे फल पावे दुख बिनशे मन का।
सुख सम्पत्ति घर आवे कष्ट मिटे तन का।। ऊँ जय ....
माता पिता तुम मेरे शरण गहूं किसकी।
तुम बिन और ना दूजा आस करूं जिसकी।। ऊँ जय ....
तुम पूरण परमात्मा तुम अन्तर्यामी।
पार ब्रह्म परमेश्वर तुम सबके स्वामी।। ऊँ जय ....
तुम करूणा के सागर तुम पालन कर्ता।
मैं मूरख खल कामी कृपा करो भार्ता।। ऊँ जय ....
तुम हो एक अगोचर सबके प्राणपति।
किस विधि मिलूं दयामय तुमको मैं कुमति।। ऊँ जय ....
दीनवंधु दुख हरता तुम रक्षक मेरे।
अपने हाथ उठाओ द्वार पड़ा मैं तेरे।। ऊँ जय ....
विषय विकार मिटाओं पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ संतन की सेवा।। ऊँ जय ....
तन-मन-धन सब है तेरा स्वामी सब कुछ है तेरा।
तेरा तुझको अर्पण क्या लागे मेरा।। ऊँ जय ....
श्री जगदीश जी की आरती जो कोई नर गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी सुख संपत्ति पावे।। ऊँ जय ....

आरती श्री जगजननी जी की

जगजननी जय! जय!! (मा! जगजननी जय ! जय!!)
भयहारिणि, भवतारिणि, भवभामिनि जय! जय!! जग०

तु ही सत-चित-सुखमय शुद्ध ब्रह्मरूपा।
सत्य सनातन सुन्दर पर-शिव सुर-भूपा।।१।। माँ जगजननी०

आदि अनादि अनामय अविचल अविनाशी।
अमल अनन्त अगोचर अज आनंदराशी।।२।। माँ जगजननी०

अविकारी, अघहारी, अकल, कलाधारी।
कर्ता विधि, भर्ता हरि, हर संहारकारी।।३।। माँ जगजननी०

तू विधिवधू, रमा, तू उमा, महामाया।
मूल प्रकृति विद्या तू, तू जननी, जाया।।४।। माँ जगजननी०

राम, कृष्ण तू, सीता, ब्रजरानी राधा।
तू वांछाकपद्रुम, हारिणि सब बाधा।।५।। माँ जगजननी०

दश विद्या, नव दुर्गा, नानाशस्त्रकरा।
अष्टमातृका, योगिनि, नव नव रूप धरा।।६।। माँ जगजननी०

तु परधामनिवासिनि, महाविलासिन तू।
तू ही श्मशानविहारिणि, ताण्डवलासिनि तू।।७।। माँ जगजननी०

सुर-मुनि-मोहिन सौम्या तू शोभाऽऽधारा।
विवसन विकट-सरूपा, प्रलयमयी धारा।।८।। माँ जगजननी०

तु ही स्नेह-सुधामयि, तू अति गरलमना।
रत्नविभूषित तू ही, तू ही अस्थि-तना।।९।। माँ जगजननी०

मूलधार निवासिनि, इह-पर-सिद्धिप्र दे।
कालातीता काली, कमला तू वरदे।।१०।। माँ जगजननी०

शक्ति शक्तिधर तू ही नित्य अभेदमयी।
भेदप्रदर्शिनि वाणी विमले! वेदत्रयी।।११।। माँ जगजननी०

हम अति दीन दुखी मा! विवत-जल घेरे।
हैं कपूत अति कपटी, पर बालक तेरे।।१२।। माँ जगजननी०

निज स्वभाववश जननी ! दयादृष्टि कीजै।
करूणा कर करूणामयि ! चरण-शरण दीजै।।१३।। माँ जगजननी०

।। नव संवत्सर की हार्दिक शुभकामनाएँ ।।

।। श्री ।।

प्रो० उमेश चन्द्र वर्मा (गोपी)

गोपी ज्वैलर्स

360, पनकी रोड, कल्यानपुर क्रॉसिंग कानपुर नगर

मो.: 9839910908, 7518985908

॥ नव संवत्सर की
हार्दिक शुभकामनाएँ ॥
Kariye Khushiyon Ki Shuruaat Brijwasi Ke Saath
BRIJWASI
SWEETS & NAMKEEN BHANDAR
Kyu Ki Ye Mithaash........................hai Kuch Khass
Brijwasi Misthan Bhandar & Bakery Shop
117/114, 'O' Block, Geeta Nagar, Kanpur - 208025 U.P. (India)
Contact us : 7007224233, 7007429544

Baked Well
100% Natural
मलाई और मक्खन ब्रेड
JUMBO
Milk Bread
Sandwich BREAD
GOLD COIN
BREAD THAT YOU AND YOUR FAMILY WILL LOVE
Nutritional Bread
दूध मलाई ब्रेड
WHITE BREAD
Natural
मक्खन मलाई Milk Bread
Rusk
MILK RUSK
Delicious COOKIES
SAVITRI BAKERS PVT. LTD.
Head Office -117/114 'O' Block Geeta Nagar, Kanpur-208025
Works - 18, 19, 22A, 23B & 24, Bhawanipur Mandhana, Kanpur-209 217 (U.P.) India
Customer Care No. : 9198909991 • Email ID-savitribakers@gmail.com
Mfd. By :

॥ नव संवत्सर की
हार्दिक शुभकामनाएँ ॥

9839069066
7897493210

BANSHI GROUP OF INSTITUTIONS

Naac "A" Grade Accredited

ADMISSION OPEN

Learn Today
Lead Tomorrow ....

B.Ed | **D.Ed.Ed**
B.P.Ed | **B.C.A.**
B.B.A | **B.Com**
B.Sc. | **MBA**

www.banshicollege.org
banshicollegeenquiry@gmail.com
Mohammadpur Bithoor, Kanpur-209201

।। नव संवत्सर की हार्दिक शुभकामनाएँ ।।

सरला रियल स्टेट

शाप न० 70 रैना मार्केट, कानपुर नगर

सरला उपाध्याय

धीरज कुमार उपाध्याय (दीनू)

"एडवोकेट"

मो० 9935013620

Chamber D.M. Office के सामने

नव संवत्सर 2082 की हार्दिक शुभकामनाएँ

शैलेंद्र कुमार तिवारी 'एडवोकेट'
अध्यक्ष, पूर्व महामंत्री जिला बार एसोसिएशन
माती मुख्यालय कानपुर देहात
निवासी
नगर पंचायत रनिया कानपुर देहात
कार्यालय
गौतम विहार नया शिवली रोड कल्याणपुर,
कानपुर नगर
संपर्क सूत्र – मो.: 9415723286 • 8127795256

Prop. Prem Yadav

Mob.: 9918100891,
7007709021

Love Buffet Restaurent

Party & Banquet Hall

इनडोर आउटडोर कैटरिंग
की सुविधा उपलब्ध है

पताः गुप्ता चौराहा, सतबरी रोड
कानपुर

॥ नव संवत्सर की हार्दिक शुभकामनाएँ ॥
RK
GRAND
Booking Start
Your Dream Wedding Destination
HALDI | RECEPTION | MARRIAGE
ROOMS
HALL
LAWN
Call Now For Booking
Mob.: 9369851155, 8887522204
शादी-विवाह, तिलक-जनेऊ, जन्मदिन, हल्दी-मेंहदी,
रिंग सेरोमनी हेतु सम्पर्क करें।
HOTAL R.K. GRAND
Office : N.B. Tower, Keshav Puram, Awas Vikas No.-1, KDMA Road
(Opp. of ICICI Bank) Kalyanpur, Kanpur

नव संवत्सर 2082 की हार्दिक शुभकामनाएँ

Laxmi Bai Saraswati Vidya Mandir

AN ENGLISH MEDIUM

तमसो माँ ज्योतिर्गमय

Estd. 2004
Reconized by Govt.

Rahul Shukla (Director)
Mob.: 9415735056

Satish Chandra Mishra
(Principal)

Late Rajkumar Shukla
Founder

Panki Road, Kalyanpur • Ph.: 0512-2571944

व्यापारी एकता जिन्दाबाद   प. श्याम विहारी मिश्रा जिन्दाबाद

कानपुर ग्रामीण व्यापार मंडल (पंजी.)

सम्बद्ध

उ.प्र. उद्योग व्यापार मंडल (पंजी.)

राहुल शुक्ला (जिलाध्यक्ष)
कानपुर ग्रामीण व्यापार मण्डल
मो.: +91 9415735056
आपका हार्दिक स्वागत करता है।

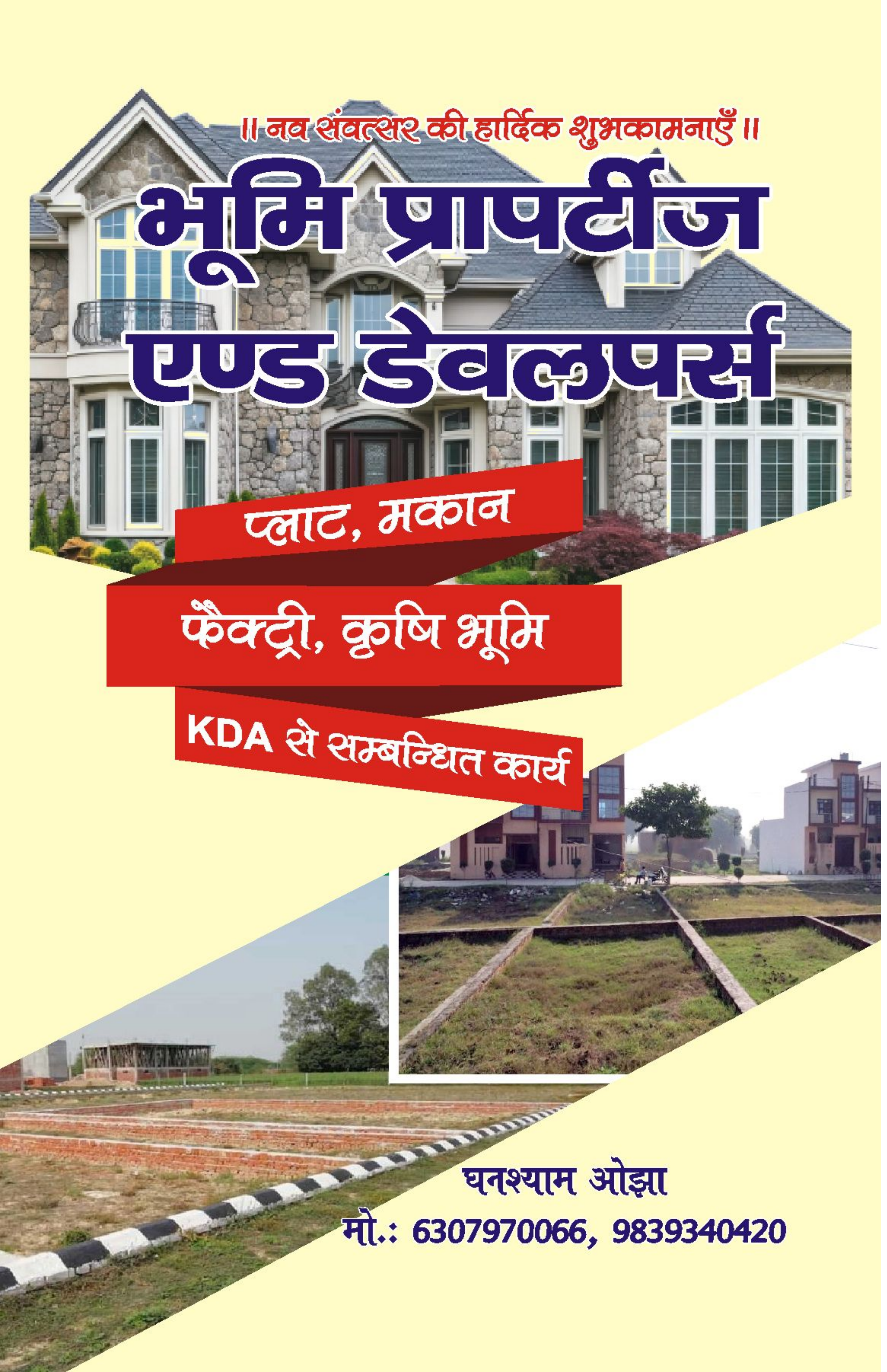

॥ नव संवत्सर की हार्दिक शुभकामनाएँ ॥
भूमि प्रापर्टीज
एण्ड डेवलपर्स
प्लाट, मकान
फैक्ट्री, कृषि भूमि
KDA से सम्बन्धित कार्य
घनश्याम ओझा
मो.: 6307970066, 9839340420

॥ जय गुरुदेव ॥

संपादक

पं. श्यामेश मिश्र

संस्थापक/अध्यक्ष

वैदिक लाइफ न्यास ट्रस्ट (रजि.) पंजीकरण संख्याः 318

संपादकीय

सिन्दूरवर्ण द्विभुजं गणेशं लम्बोदरं पद्मदले निविष्टम्।
ब्रह्मादिदेवैः परिसेव्यमानं सिद्धैर्युतं तं प्रणमामिदेवम्॥

मो.:9935383670

प्रिय विद्वद्जन,

भारतीय वैदिक परम्परा (वेद सिद्धान्त) के अनुसार इस ब्रह्माण्ड में पृथ्वी व ग्रहों, उपग्रहों की चलायमान गति के अनुरूप ग्रह, नक्षत्रों व तिथि, योग, करण आदि में शुभ-अशुभ योगों का निर्माण होता रहता है। जिसका प्रभाव जड़ चेतन, जीव आदिपर पड़ता है।

अतः श्री गणेश तिथि स्मरण वार्षिक धर्म प्रचार हेतु वैदिक लाइफ न्यास ट्रस्ट के माध्यम से इस पत्रिका का पंचदश पुष्प आप के कर कमलों में देते हुए अपार हर्ष हो रहा है। इस वर्ष पुस्तिका का प्रकाशन सभी के सहयोग से 20 हजार प्रतियों तक पहुँच गई है, जो अपने आप में सराहनीय है। वैदिक लाइफ न्यास ट्रस्ट का उद्देश्य है कि यह पुस्तक प्रत्येक सनातन धर्मावलम्बियों के घर-घर पहुँचे और उसका लाभ सबको बराबर मिलें, इस पत्रिका के प्रकाशन में जुड़े सभी सहयोगियों को शुभ आशीर्वाद एवं मंगलमय कामना ईश्वर से करता हूँ।

यह पंचांग सभी लोगों को शुद्धता के साथ प्रकाशित करता है। जिससे आम जनता को शुद्धता से लाभ प्राप्त हो सकें। इसी उद्देश्य से हमारा पंचांग शुद्ध गणित करके अपने पाठकों को भ्रम रहित जानकारी उपलब्ध कराता है। ताकि अनुकूल समय में कार्यो का शुभ संपादन कर अपनी कामना सिद्ध कर सकें व अपने भाग्य का शुभ निर्माण कर सकें।

उद्देश्य - हमें आशा है कि इससे विद्वद्जन लाभान्वित होंगे। पुस्तक की त्रुटियों में सुधार कराने एवं आप की सलाह के हम विशेष आभारी रहेंगे। हमें आशा है कि संत कृपा व ईश्वर कृपा से श्रद्धा पुष्प अर्पित करते हुए श्री गणेश तिथि स्मरण पुस्तिका अर्पित कर रहा हूँ। आप सभी का नव वर्ष मंलमय हो-

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत्॥

नोट :- आप सभी को यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि विगत कई वर्षो से वैदिक यज्ञ अनुष्ठान केंद्र ज्योतिषी परामर्श को माध्यम बनाकर इस किताब का अनवरत प्रकाशन एवं वितरण किया जा रहा है। उसी कड़ी में आज मैं आप सभी से निवेदन करता हूँ इस लुप्त होती वैदिक एवं ज्योतिषीय परंपरा में सहयोग करे। धन्यवाद!

नव संवत्सर की हार्दिक शुभकामनायें!

वैदिक लाइफ न्यास

वैदिक लाइफ न्यास ट्रस्ट (रजि.) पंजीकरण संख्याः 318

भावातीत ध्यान योग, ज्योतिष एवं वैदिक यज्ञानुष्ठान परामर्श केन्द्र

पं. श्यामेश मिश्र मो. 9935383670

वैदिक आचार्य (ज्योतिषाचार्य)

E-mail:- shyameshpandit@gmail.com
Website : vediclifenyaas.com

YouTube VEDIC LIFE NYAAS vediclifenyas@gmail.com

पता :- मकान नं. 5, श्याम बिहार, नया शिवली रोड
(निकट- माँ वैष्णों दुर्गा मंदिर) कल्यानपुर, कानपुर नगर (उ0 प्र0)208017

हमारे यहाँ सभी प्रकार के वैदिक धार्मिक, यज्ञ, अनुष्ठान आदि सभी मांगलिक कार्य किये जाते है।